June-July 2009

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-



ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવ વિશેષ


॥अभिषेक॥



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com/org
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पते में परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 अंक : 26-27 जुन-जुलाई-2009

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कुमकुम रुपरेखा	३
३.	धर्मकुल वंदना महोत्सव	५
४.	मैं आपके साथ हूँ	११
५.	सर्वोपरि का काम सर्वोपरि ही होता है	१२
६.	धर्मकुल वंदना महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा का परमार्थ	१४
७.	धर्मकुल वंदना महोत्सव फलश्रुति	१९
८.	धर्मकुल वंदना महोत्सव की स्मृति रुप में स्थायी रुपरेखा	२०
९.	आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के अद्‌भुत चमत्कार	५३
१०.	हृदय में करुणा अपार	५६
११.	आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जीवन कवन प्रदर्शन आधारित	५४
१२.	गुरु में गोविंद दिखाये	५७
१३.	धर्मकुल वंदना महोत्सव के दिव्य प्रसंग पर धर्मकुल के आशीर्वचन	५९
१४.	अनंत ऐश्वर्य से युक्त आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज	६६
१५.	धर्मकुल वंदना गागर में सागर	६८
१६.	सत्संग बालवाटिका	७५

: संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित

अस्मदीयम् अस्मदीयम् अस्मदीयम्

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने हाथों से जिन्हे अपनी गद्दी पर प्रतिष्ठित करके, पूजन करके, आरती उतारकर इस समग्र सत्संग की अभिवृद्धि के लिये पोषण के लिये जिसके सिर पर उत्तरदायित्व सौंपा ऐसे अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के आदि आचार्य श्रीहरि के पुत्र ऐसे आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जन्म द्विशताब्दी महोत्सव (धर्मकुल वंदना महोत्सव) को सभी संत भक्त, तन, मन, धन से सहयोग करके धूमधाम के साथ संपन्न किये । त्रिदिनात्मक यह उत्सव सत्संग समाज के लिये मानो अंतकाल का पाथेय बन गया था । यह चिरः स्मरणीय उत्सव अर्थात् भगवान श्रीहरि को प्रसन्न करने का उत्सव । लाखो भक्त इस उत्सव का लाभ लेकर स्वयं को धन्यता का अनुभव कर रहे थे । अलग-अलग स्थानों से आये हुये संत तथा अमेरिका, इंग्लेन्ड, ओस्ट्रेलिया तथा आफ्रिका इत्यादि देशों से पधारे हुये अनेक भक्त इस उत्सव का लाभ लिये थे । सभी के मुख से एक बात निकल रही थी कि यह कार्यक्रम अद्‌भुत हुआ । इस समग्र उत्सव को इन्टरनेट पर लाईव प्रसारण किया गया था । अनेक भक्त अपने घर बैठकर उत्सव का दर्शन किये । प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री अपने दिव्य दर्शन तथा आशीर्वचन का लाभ निरन्तर देते रहे तो दूसरी तरफ महिलाओं के विभाग में भी देश-विदेश से पधारी हुई सां.यो. बहनों ने भी महिलावर्ग को सत्संग का लाभ दिया तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी एवं प.पू. श्रीराजाने बहनों को दर्शन् एवं आशीर्वाद का सुख दिया था ।

लाखो भक्त नित्य नवीन स्वादिष्ट दिव्य प्रसाद का लाभ लिये थे ।

यह महा महोत्सव जिस दिव्य भूमि पर संपन्न हुआ वह श्री गणेश हाउसींग कोर्पोरेशन सोला स्थित भूमि, जिसे शेठ श्री गोविंदभाई सी. पटेल उदारपूर्वक उत्सव के लिये दिये । उत्सव से इतना प्रसन्न हुये कि इस भूमि पर स्थायी याद बनी रहे इस हेतु से इस विस्तार में भी नूतन मंदिर का निर्माण करने के लिये २५०० वार भूमि श्री नरनारायणदेव को कृष्णार्पण करदी । श्री नरनारायणदेव मंदिर में भी प्रभु का महाभिषेक एवं अन्नकूट अन्नप्पन भोग का प्रसाद अर्पण किया । प्रभु का मंदिर रोशनी से जगमगा उठा था । अनेक प्रसंगो का जिन्होंने दिव्य दर्शन किया उनका जीवन धन्य हो गया ।

संयोगवश जिन भक्तों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष इस दिव्य दर्शन का लाभ नहि ले सके ऐसे उन भक्तों के लिये धर्मकुल वंदना महोत्सव विशेषांक स्मरणरुपरहेगा । उत्सव में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से जो लोग सहभागी हुये हैं ऐसे प्रत्येक संत-हरिभक्त-समिति के सभ्य, यजमान दाता, स्वयं सेवक इत्यादि पर महाप्रभु प्रसन्न होकर आशीर्वाद का वरसात करें ऐसी प्रार्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(मई-२००९)

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलीया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२-३. भुज (कच्छ) दुधई (कच्छ) पदार्पण ।
४-५. मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड (स्टेशन) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
७. रनेला (पंचमहाल) गाँव में श्री सुभाषभाई मोरारजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
८. मेराई के मुवाडा (पंचमहाल) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
९. चंद्रासणा गाँव में पदार्पण ।
नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर मारुति यज्ञ प्रसंग पर पदार्पण ।
१०. साकापुर (विजापुर) श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारयण मंदिर धोलका पदार्पण ।
११. कर्मशक्ति श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंके) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१२. मादरणी (ईडर) गाँव में पदार्पण ।
१३-१४. भुज (कच्छ) कंथकोट गाँव में पदार्पण ।
१५. धूलकोट (हालार मूलीदेश) गाँव में पदार्पण ।
१६. ओगाण (ता. साणंद) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१७. गुलाबपुरा गाँव में श्री गांडालाल छगनलाल पटेल के वहाँ पाटोत्सव पर पदार्पण ।
१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर भक्तिनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२३. जेसंगपुरा (खांखरिया) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा पारायण तथा शोभायात्रा प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२५. भुंडीया (गांधीनगर) गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२६. श्री स्वामिनारायण प्रांतीज पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२७. नवावाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२८. श्री घनश्यामभाई बेचरभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, गांधीनगर
३१. भीमजीभाई नानजीभाई स्कूल के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण नरोडा

(जून-२००९)

१. से ३. जून प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की द्विशताब्दी जन्म जयंती धर्मकुल वंदना महोत्सव अपने अध्यक्ष स्थान पर हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ संपन्न किये ।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपुर (पंचमहाल) श्री हनुमानजी महाराजकी मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. श्री भीखाभाई मणीलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

१९. संत महादीक्षा अपने हाथों से दिये ।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर खोखरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२३. नटवरगढ (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२४. श्री हितेन्द्रकुमार भगवानभाई कानाणी के यहाँ पदार्पण, रखीयाल
श्री भीखाभाई पटेल के यहां पदार्पण, राणीप

२५. चांदीसणा गांव में श्री रमणलाल जीवणलाल पटेल के यहाँ पदार्पण

२७. मानसर (ता. लहवद मूलीदेश) गाँव में पदार्पण ।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पदार्पण ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२००९)



१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति नवा नरोडा शोभायात्रा प्रसंग पर पदार्पण

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर ओढव पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

(जुन-२००९)

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर स्टेशन बारद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

धर्मकुल वंदना महोत्सव

- शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद महंत स्वामी)

संप्रदाय अनेक है, परंतु उसमें श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का समग्र विश्व में अपना अलग स्थान है। सभी संप्रदाय की स्थापना कोई न कोई महापुरुष ने ही की है। जैसे कि पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य महाप्रभु, अद्वैत के शंकराचार्य, विशिष्टाद्वैत के रामानुजाचार्य, उद्धव संप्रदाय के प्रवर्तक रामानंद स्वामी थे। इसी तरह स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रवर्तक सर्वावतारी श्री सहजानंद स्वामी थे। इनके समकाल में ही इस संप्रदाय में अनेकों अनुयायी गुजरात, महाराष्ट्र, कच्छ, सौराष्ट्र, मारवाड, मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश जैसे विशाल राज्यो में बनाये तथा गुजरात में हजारो की संख्या में संत, पार्षद तथा ब्रह्मचारी त्यागी बनाये।



संप्रदाय में सर्व प्रथम गुजरात के मा.चे स्टर अहमदाबाद में तीन शीखर का गगनचुंबी मंदिर स.गु. आनंदानंद स्वामी से बनवाकर स्वयं अपनी बांहो में भरकर स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया था। बाद में मूली, भुज, वडताल, जेतलपुर, गढपुर, धोलेरा, जूनागढ, धोलेरा में महामंदिर का निर्माण कराकर उसमें देव की स्थापना की। वह समय बडी समस्याओं वाला था। सम्पूर्ण देश छोटे-छोटे राज्यो में विभक्त था। ब्रिटीशरो की तानाशाही में लोग भयभीत होकर जीवन यापन कर रहे थे। फिर भी श्रीजी महाराज ने अनेक स्थलों पर अन्नक्षेत्र, कूंआ, तालाब बनवाया। अहिंसामय यज्ञ जेतलपुर, डभाण में करवाकर लाखों ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देकर लुप्त यज्ञप्रथा को प्रारंभ किये. अपने पास विद्वान संतो द्वारा संस्कृत, हिन्दी तथा गुजराती में शास्त्रों की रचना करवाये। जिसमें सत्संगिजीवन, सत्संगीभूषण, वचनामृत जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना करवाये। प्राकृत में गुजराती भाषा में गद्य पद्य ग्रंथो के माध्यम से गुजराती भाषा का गौरव बढाया।

अंत में अपने स्थान पर संप्रदाय के सबसे बडे पद पर दोनो भाई के पुत्र में एक को अहमदाबाद में अयोध्याप्रसादजी महाराज श्री नरनारायणदेव पीठ के आचार्य हुये तथा वडताल श्री लक्ष्मीनारायण देव गादी के आचार्य श्री रघुवीरप्रसादजी महाराजश्री आचार्य पद पर आरुढ हुये। इस तरह दोनो प्रधान पीठ के आचार्यो का प्रतिष्ठापन कर आश्रितों के लिये मोक्ष का मार्ग खोल दिये।

सर्वोपरि श्रीहरि श्री नरनारायणदेव गादी के प्रथम आचार्य पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज को आज्ञा किये कि आप को हम अपने स्थान पर प्रतिष्ठित किये है, इसलिये जो अवशिष्ट मेरे संकल्प है उसे आप पूरा कीजियेगा। मैं आपके साथ रहूँगा। हमारे बचन का पालन करते रहियेगा। इसी में सभी सुख समाया है। जन्म स्थान छपैया में मंदिरका निर्माण अवश्य करायियेगा। इसके अलांवा

बड़े-बड़े शहरो में शिखरी मंदिर तथा हरि मंदिरो का निर्माण करायियेगा । श्रीहरि की आज्ञा को शिरोधार्य करके सभी स्थानों पर मंदिर का निर्माण कराया । छपैया में धनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित करवाये । कच्छ मांडवी मे, इडर, सिध्धपुर में शिखरी मंदिर बनाकर श्रीहरि कृष्ण महाराज, श्रीगोपीनाथ देव, श्री राधाकृष्णदेव इत्यादि देवों की स्थापना करवाये । मध्यप्रदेश के विकराल चंबल की घांटी में बामरोली गाँव में लोगो को सत्संगी बनाकर वहाँ मंदिर का निर्माण कराकर, गाँव के लोगों को यमयातना से वचने का वचन दिया जो आज भी वह क्रम चालू है ।

रथ, गाड़ी, हाथी, घोडा, इत्यादि वाहनो से विद्वान संतो का मंडल साथ लेकर सत्संग में अपना जीवन यापन किये । संप्रदाय का इतनी बड़ा उत्तरादित्व स्वीकार करके निरन्तर प्रवृत्त रहते थे । अपने पिता इष्टदेव श्रीहरि का सदास्मरण करते रहते । हिन्दी, व्रज, अवधी भाषा में अद्‌भुत कीर्तनो की रचना किये । व्यस्त जीवन में भी श्रीहरि के ध्यान में तल्लीन हो जाते थे । इसी ध्यान की स्थिति में बिच्छू ने डंक मारा लेकिन ख्याल नहीं रहा । ऐसे महान आदि आचार्य महाराजश्री थे । उन्हीके २०० वर्ष पूर्ण होते ३-६-०९ के दिन द्विशताब्दी महोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री, वर्तमान पीठाधपति प.पू. आचार्य महाराजश्री के आदेश से तथा प.पू. लालजी महाराजकी इच्छा से समस्तसंत एवं हरिभक्त इस आदेश को मस्तक से लगाकर अकल्पनीय भूतो न भविष्यति जैसा त्रिदिनात्मक धर्मकुल वंदना महोत्सव अहमदाबाद के सोला थलतेज विस्तार के श्री गणेश हाउसिंग कोर्पोरेशन के भव्य मैदान में धूमधाम के साथ संपन्न किया । जिस की व्यवस्था आजतक जितने उत्सव हुये उसमे सर्व श्रेष्ठ थी ।

इस भव्यातिभव्य उत्सव में यज्ञ का आयोजन शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन में हुआ । महापूजा में ३५०० भक्त भाग लिये । यह विधि बड़ी सुंदर ढंग से संपन्न हुई । समस्त आयोजन स्कीम कमेटी के सदस्य पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, पार्षद वनराज भगत, श्री रतिभाई पटेल, श्री दशरथभाई पटेल, श्री जी. के. पटेल, श्री रमणभाई पटेल, श्री के. के. पटेल, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, गृहस्थ भक्तों में श्री प्रवीणभाई सीत, जयरामभाई कानाणी, श्री ईश्वरभाई, श्री मनोजभाई, श्री रतिभाई, श्री गोविंदभाई, श्री घनश्यामभाई इत्यादि संत-हरिभक्तों के अथक परिश्रम से भव्य सभा मंडप, यज्ञशाला, भोजनालय, अखंडधून मंडप, पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन कवन का प्रदर्शन, स्वयं सेवको की तथा अन्य आफिस, कार्यालय इत्यादि की व्यस्शा बेनमून थी । जिसमें नामी-अनामी संत-हरिभक्त सहयोग दिये थे। लाखो हरिभक्तों के भोजनलाय में कृष्मवल्लभदासजी एवं देवप्रकाशदासजी, स्वा. श्यामचरणदासजी, स्वा. धर्मस्वरुपदासजी, स्वा. राजेन्द्रप्रसादजी तथा अन्य हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी । ४००० जितने कार्यसेवक रात्रि दिन आज्ञापालन में लगे रहे । भोजन परसना, निवास स्थान पर छाछ, ठन्डा पानी, सभा की व्यवस्था इत्यादि में सेवा खड़े पैर कर रहे थे । स्वयं सेवक समिति में श्री उदयनभाई महाराजा, श्री भरतभाई ठक्कर, श्री प्रविणभाई टी. पटेल इत्यादि हरिभक्त सेवा में लगे रहे । वी.आई.पी. विभाग में संत-हरिभक्तों की टीम द्वारा राजकीय धार्मिक, महानुभाव, सामाजिक कार्यकर, उद्योगपति, शिक्षण शास्त्री, पत्रकार इत्यादि को आमंत्रित करके सन्मानित कराने की उत्तम व्यवस्था की गयी थी ।

वचनामृत संहितापाठ में अखिलेश्वरदासजी, स्वा. व्रजवल्लभदासजी तथा स्टेज सजाने की व्यवस्था में चैतन्य स्वामी थे । अहमदाबाद मंदिर में भव्यातिभव्य अन्नकूट का भोग बनाने में को.पा. दिगम्बर भगत, स्वा. हरिचरणदासजी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, योगी स्वामी तथा राजकोट के नवीनभाई, श्री कीरीटबाई की सेवा सराहनीय थी ।

साहित्य प्रकाशन समिति, चाय नास्ता समिति, वाहन व्यवहार समिति, सफाई समिति, आरोग्य अखड मंत्र जप

में स्वा. स्वयंप्रकाशासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी (धांगध्रा) के मार्गदर्शन से खाखरिया - झालावाड के संत-हरिभक्त लगातार तीन दिन तक श्रीहरि का नाम स्मरण कराकर उत्सव की शोभा बढाये थे। कोष समिति में रसिकभाई सोनी, श्री चंद्रकांतभाई, श्री जयंतिभाई, श्री जगजीवनभाई, इत्यादि हरिभक्तों ने पैसे का हिसाब अच्छा रखा था। रहने की व्यवस्था समितिमें श्री धनंजयभाई ठक्कर, श्री पंकजभाई भावसार, नटुभाई, तुषारबाई, दशरथभाई, धर्मेन्द्रभाई, दयालजीभाई, अतुलभाई, कौशिकभाई इत्यादि हरिभक्तोंकी सेवा प्रशंसनीय थी। शोभायात्रा के आयोजन में छोटे पी.पी. स्वामी, स्वा. रघुवीचरणदासजी, रणजीतसिंह दरबार, अतुलभाई मणीलाल, डाह्याभाई, सोमाभाई, हरिभाई, अमृतभाई, इत्यादि संत-हरिभक्तोंने शोभायात्रा में सेवा करके उत्तमकार्य किया था। सम्पूर्ण यात्रा की झलक देखकर छोटे पी.पी. स्वामी की तथा रणजीतसिंह की प्रशंसा जितनी की जाय कम है। इतनी सुंदर व्यवस्था थी।



कार्यावाहक समिति में पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, वल्लभ स्वामी तथा स्कीम कमेटी के सदस्य ब्र. वासुदेवानंदजी, स्वा. केशवप्रकाशदासजी, पार्षद वनराज भगत, श्री रतिलालभाई, श्री दशरथभाई, श्री रमणभाई, श्री गणपतभाई, श्री कांतिभाई इत्यादियों का मार्ग दर्शन निरंतर मिलता रहा।

उत्सव की मुख्य आर्थिक व्यवस्था के लिये पू. महाराजश्रीने अमेरिका का प्रोग्राम बनाया था। जिस में महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी, इत्यादि संत मंडल को साथ लेकर सर्व प्रथम आई.एस.एस.ओ. के इटास्का शिकागो मंदिर में जे.पी. स्वामी, शा.हरिप्रसाद स्वामी, प्रेसि. जगदीशभाई पटेल, घनश्यामभाई भगत, विष्णुभाई, घनश्यामभाई कवि तथा विष्णुभाई पटेल इत्यादि सत्संगियों के सहयोग से द्रव्य संचय करके उत्सव में ले आये थे। इसके अलांवा आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो में महत्व की सुंदर सेवा अधोनिर्दिष्ट संत हरिभक्तों की प्रेरणा से हुई थी। डिट्रोइट में डॉ. अरविंदभाई, डॉ. मनोजभाई ब्रह्मभट्ट, हिंमतभाई, राजूभाई इत्यादि लोगो को ब्रह्मविहारी स्वामीने प्रेरणा कराकर धन एकत्रित करवाया था। कलामजू में डाह्याभाई पटेल, कनुभाई पी. पटेल, मणीभाई पटेल उत्तम सेवा किये थे। कलिवलेन्ड में शा.धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से प्रकाशभाई पटेल इत्यादि हरिभक्तोने, फ्लोरिडा में विवेकसागरदासजी की प्रेरणा से प्रि. नलीनभई, दिलीपभाई शाह, मणीभाई पटेल तथा यहां के वडु, करजीसण, डांगरवा, मोखासण गाँव के हरिभक्तोंने सेवा की थी।

न्युजर्सी मंदिर में प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में युवानोने सुंदर धन एकत्रित करके दिया था। जिस में माधव स्वामी तथा प्रेसि. भक्तिभाई, माणेकलालभाई तथा कमेटी के सदस्यों का सुंदर योगदान मिला। चेरीहिल मंदिर में शा. विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से प्रेसि. राजूभाई, अशोकभाई तथा वडु, डांगरवा, करजीसण,

मोखासण गाँव के हरिभक्त तथा स्कीम कमेटी के सदस्य प.पू. महाराजश्री तथा संतो की उपस्थिति में भेंट के रुप में अधिक अर्थ की प्राप्ति हुई थी । बोस्टन में शा.सिद्धेश्वर की प्रेरणा से प्रसि. अरविंदभाई, आर. के., जयंतीभाई वोरा, संजयभाई, चंद्र शेखरभाई पटेल, दशरथभाई तथा कमेटी के सदस्य मिलकर अच्छी द्रव्य की व्यवस्था किये थे । कोलोनिया मंदिर में प्रेसि. श्री प्रविणभाई, नयनभाई परीख, महेशभाई, उपेनभाई इत्यादि कमेटी के सदस्य, अपनी शक्ति के अनुसार दान दिये थे । वोशिंग्टन डी.सी. मे कनुभाई पटेल के मार्गदर्शन में आई.एस.एस.ओ. मंडल सुंदर चल रहा है । जिस में एक दिन का प्रोग्राम करके खुब सुन्दर दान की भेंट करवाये थे । जिस में कनुभाई, रीकीन ठक्कर, हरिकृष्ण शाह इत्यादि लोगोने खूब सहायता की थी ।

आटलान्टा, ज्योर्जीया चेप्टरो में भरतभाई, राजेन्द्रभाई, महेन्द्रभाई, आत्मारामभाई, भरतभाई, नवीनभाई, नरोत्तमभाई, घनश्यामभाई, सुरेशभाई, छनालालभाई ईत्यादि हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी । एल.ए. में देवुभाई, प्रेमजीभाई, जयंतीभाई, भक्तिभाई, दशरथभाई इत्यादि ने सेवा की थी । बर्मिगहाम के चिमनभाई जैन उत्सव में दूसरे दिन भोजन का यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिये थे ।

इंग्लेन्ड के अपने मंदिरो में विल्सडन मंदिर के हरिभक्तों ने खूब योगदान दिया था । उत्सव में मुख्य यजमान पद का लाभ नारणभाई खेताणी परिवार ने भी अलौकिक लाभ लिया था। वुलवीच कार्डिफ, इस्ट लंडन, ओल्डहाम, हेरो, बोल्टन तथा आई.एस.एस.ओ. के लेस्टर, गेटविक, ब्राईटन तथा स्ट्रेधाम इत्यादि मंदिरो में हरिभक्तों ने भी पूर्व महंत नारायणस्वरुपदासजी की प्रेरणा से द्रव्य की भेंट की थी ।

सीडनी मंदिर में महंत स्वामी के फोन पर श्री विसरामभाई लालजीभाई गोपाल पिंडोरिया ने श्री हरियाग का मुख्य यजमान बनकर महालाभ लिया था । राघवाणी परिवार के श्री लक्ष्मणभाई भीमजी, कानजीभाई प्रेमजी केशरा, श्री करशनभाई राघवाणी इत्यादि परिवारने श्री नरनारायणदेव के छप्पन भोग तथा महाभिषेक के मुख्य यजमान बनने का महालाभ लिया था ।

उत्सव के तीनो दिन तक प्रातः सायं के वक्ता सं. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, शा. स्वा. गोलोकविहारीदासजी (भुज), शा.स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वामी नारायणवल्लभदासजी आदि विद्वान संतोने विद्वतापूर्ण तथा मधुर, रोचक सौम्य वाणी में श्रीमद् सत्संगीभूषण ग्रंथ की पारायण भिन्न भिन्न दृष्टांतो के द्वारा करके श्रोतागण का मन मोह लिया था । तीन दिन सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा अंतिम दिन वड़ताल श्री लक्ष्मीनारायणेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. राकेशप्रसादजी महाराजश्री के दर्शन करके लाखों भाविकों को आनंद की अनुभूति प्राप्त हुई थी । निरंतर तीन दिन तक हमारे भुज, मूली, वडताल, गढपुर, धोलेरा तथा जूनागढ देश के ८०० से भी अधिक संतोने पधारकर दर्शन आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था। प्रत्येक संतो को उनके आवागमन का मूल्य प्रदान करके उन्हें प्रसन्न करने का ध्यान भी रखा गया था ।

बहनों की सभा में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाश्री प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री, पू. श्रीराजा तथा पू. मोटा बहन की शुभ उपस्थिति में सांख्ययोगी बहनों, लाखों कर्मयोगी बहनों के कारण तथा लाखों हरिभक्तों की उपस्थिति में सभा मंडप भरा-भरा ही रहता था । इतने शांत वातावरण में एक कील भी गिरे तो ख्याल आ जाये ऐसी दिव्य शांति का भास होता था । वास्तव में सभा की अलौकिकता अर्वणनीय तथा अकल्पनीय थी ।

इस प्रसंग पर तीन दिन तक विधान सभा के अध्यक्ष अशोकभाई भट्ट, गुजरात राज्य के मुख्य पोलीस श्री खंडवावाले तथा मंत्रीश्रीओं में श्री जयनारायण व्यास, श्री फकीरभाई वाघेला तथा संसद सभ्य, धारा सभ्य विरोध पक्ष के नेताश्री सिद्धार्थ पटेल, श्री शक्तिसिंह

गोहिल, श्री हिंमतसिंह पटेल, श्री अर्जुन मोढ़वाडिया आदि महानुभावोने उत्सव का दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था । आयोजकोने उनका सुंदर सत्कार करके सन्मान किया था ।

ता. ३-६-२००९ के पूर्णाहुति के दिन प.पू. महाराजश्रीने जिन्होंने अपना समग्र ग्राउन्ड नि:शुल्क उपयोग में लेने हेतु प्रदान किया था वैसे बिल्डर्स प.भ. गोविंदभाई सी. पटेल तथा उनके सुपुत्र श्री शेखरभाई को आशीर्वाद प्रदान किये थे । यजमान परिवारने निरंतर उत्सव में उपस्थित रहकर उत्सव का लाभ लिया था । उनका प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री बहुमान करके आशीर्वाद दिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा पू. महंत स्वामी से अत्यंत प्रभावित होकर उन्होंने इस सुंदर स्थल पर मंदिर बनाने हेतु कीमती २५०० मीटर जमीन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को अर्पण की थी ।

गुजरात के मुख्य मंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदीने इस शुभ प्रसंग पर खास पधारकर दर्शन करके अपनी शुभ भावना को प्रगट किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, संत तथा स्कीम कमिटी के सभी सभ्योने उनका पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया था । मुख्य मंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदीने बिल्डर्स गोविंदभाई की सेवा का सन्मान शाल ओढ़ाकर किया था । शहेरी विकास मंत्रीश्री नितीनभाई पटेल भी खास उपस्थित रहे थे। सभा में अहमदाबाद के महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी, शा. आत्मप्रकाशधासजी, भुज के महंत पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी तथा वडताल के कोठारी बापु स्वामी आदि संतोने प्रेरक प्रवचन भी किये । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, वडताल के प.पू. राकेशप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद भी दिया । उत्सव में आदि से अंत तक सभा संचालन युवान शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने विद्वता के साथ किया था ।

उत्सव के पूर्व विजय स्तंभ प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में उत्सव के स्थल पर प.भ. के.के. जेसाणी (लंडन) परिवार के संबंधीजनो ने पूजन विधि में महा अलौकिक लाभ लिया था ।

ता. १-६-०९ के उत्सव के प्रथम दिन पारायण के यजमान श्री संयजभाई रसिकलाल पटेल (अमेरिका) के घर से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में पोथीयात्रा के जुलूस के साथ विशाल भक्त समुदाय धून कीर्तन करते हुये धर्मकुल वंदना महोत्सव के मुख्य गेट पर पहुँचे तब मुख्य गेट के यजमानश्री अमरशीभाई लवजीभाई, वासुदेवभाई, नानजीभाई के साथ मुख्य गेट को विधिपूर्वक खोला गया था । उसके बाद श्री नरनारायणदेव मंदिर के स्कीम कमिटी के पांचो गृहस्थ सदस्योंने तथा श्री रमेशभाई तथा श्री खीमजीबापा (मेडावाले) ने प.पू. महाराजश्री के साथ आरती उतारने का महालाभ लिया था । उसके बाद प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजका जीवन कवन प्रदर्शन दर्शन हेतु खोला गया था । अखंड धुन मंत्रपूजा का प्रारंभ श्री हरिकृष्णभाई मगनलाल तथा दवे परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ आरती का लाभ लिया था । यज्ञ का प्रारंभ प.पू. बड़े महाराजश्रीने करवाया था । कथा पारायण प्रारंभ पूजन आरती प.पू. महाराजश्री के साथ यजमान श्री संजयभाई रसिकलाल पटेलने व्यास पूजनं तथा आरती का अलौकिक लाभ लिया था ।

इस महोत्सव में देश-विदेश के अमेरिका, इंग्लेन्ड आफ्रिका, ओस्ट्रेलिया, न्युजीलेन्ड तथा मीडल इस्ट व हरिभक्तों की सेवा से उत्सव प्रकाशमान हो उठा अहमदाबाद के सभी संत तथा २८ देश के गाँव व हरिभक्त तथा मूली के संत एवं गावों के हरिभक्त, प्रत्येक शिखरी मंदिर के संत, भुज के संत एवं हरिभक्त, मारवाड़ के हरिभक्त तथा वाली के संत हरिप्रसाददासजी इत्यादि संत हरिभक्तों की सेवा प्रशंसनीय थी ।

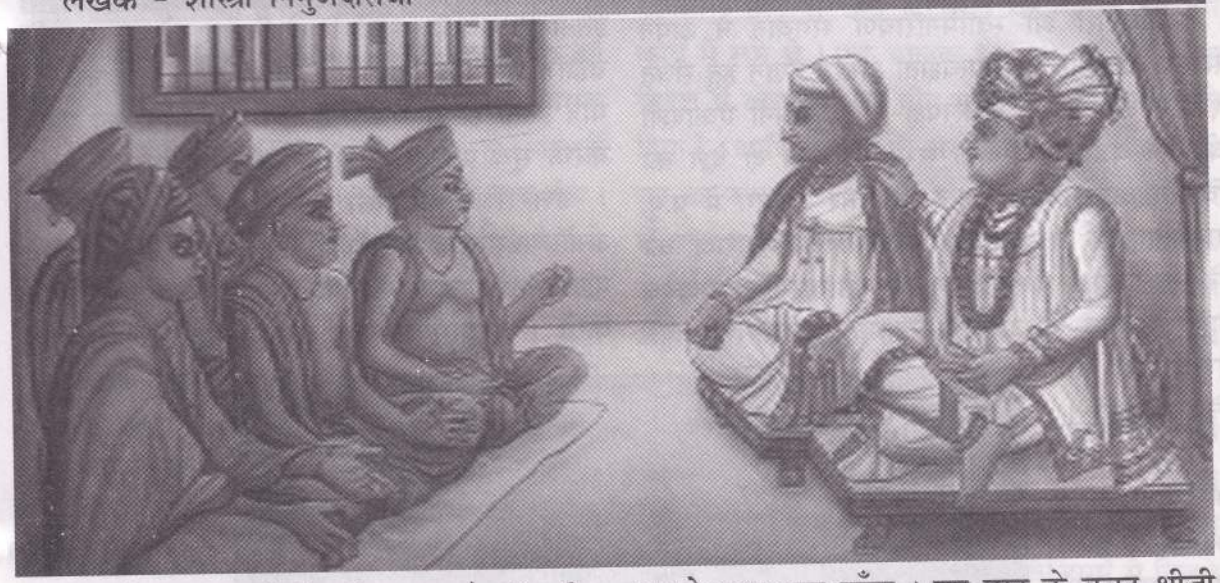
इस महोत्सव के प्रसंग पर अनेक राजकीय, धार्मिक महानुभाव, उद्योगपति, शिक्षण विद उत्सव में विदाई का कार्यभार सम्हालने वाले अरविंदभाई, श्री रमेशभाई, श्री सुरेन्द्रभाई, श्री शरतभाई, श्री भूपेन्द्रभाई, श्री विठ्ठलभाई, श्री वासुदेवभाई, श्री शाकलचंदभाई, इत्यादि भक्तोंने उन्मुक्त होकर सेवा की थी ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की सेवा में श्री दासभाई, श्री अरविंदभाई, इत्यादि बापूनगर के हरिभक्त निष्ठापूर्वक सेवा में लगे रहे । सफाई की सेवा में श्री झवेरभाई इत्यादि की सेवा भी सराहनीय थी । जगदीशभाई शाह, प्रफुलभाई खरसाणी इत्यादि भक्तजन सेवा में लगे रहे । अहमदाबाद दर्शन सीडी के प्रवर्तक प.भ. करशनदास जेठीदास पटेल और अवध कीर्तनावली सीडी के प्रवर्तक अ.नि. शांतिलाल मानालाल दरजी, ह. रसिलाबहन (सादरावाले) साहित्य प्रकाशन में डॉ. मनोजभाई ब्रह्मभट्ट, शिकागो मंदिर की तरफ से और आई.एस.एस.ओ., यु.के. के प्रेसिडेन्ट गीतुभाई और के.के. जेसाणी ने वासुदेव महात्म्य के प्रकाशन में और अंग्रेजी ट्रान्सलेनशन में श्री जेठालाल और गं.स्व. कुमुदबहन भोगीलाल पटेल आदि हरिभक्तोंने सुंदर सेवा की थी ।

श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी के सभी गृहस्थ मुख्यश्री प.भ. रतिभाई, प.भ. दशरथभाई, प.भ. रमणभाई, प.भ. जी.के. पटेल, प.भ. डॉ. के. के. पटेल तथा कार्यालय के श्री मनीषभाई वोरा, सेवा कार्य करने वाले कार्यपालक संदीपभाई वोरा, आफिस स्टाफगण, ट्रस्टी के तमाम सभ्य और श्रद्धा केसेट वाले प्रविणभाई पटेल और दान व्यवस्थापक समिति के श्री टी.के. पालावाडिया और श्री नरसिंह नसीद आदि नामी नामी भक्तो की सेवा कभी भूली नही जा सकती । मानिक संत गण जो विभिन्न गाँव में जाकर लोगो फंड एकत्र किया था । जिस में छोटे पी.पी. स्वामी छोटेश्वर), शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी गुरु स्वामी हरिजीवनदासजी, शा. हरिस्वरुपदासजी, शा. विश्वस्वरुपदासजी, महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा), शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी, कोठारी जयकृष्णदासजी, भक्ति स्वामी, शा. छपैयाप्रसादजी, इडर महंत जगदीशप्रसाददासजी, लालोडा महंत शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी, जेतलपुर महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.पी.पी. स्वामी, महंत शा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर), सिद्धपुर महंत शा. श्रीजीप्रकाशदासजी, सिद्धपुर महंत शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, जयदेवपुरा के स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी, शा. आनंद स्वामी, बीलिया के शा. चंद्रप्रकाशदासजी, कांकरिया महंत शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी, मथुरा महंत आनंद स्वामी, धोलका महंत शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी, मूली के स्वामी स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, स्वामी जगतप्रकाशदासजी, सापावाडा के महंत शा. नंदकिशोरदासजी, उनावा महंत बालु स्वामी और उत्सव में सबसे बडी सेवा करने वाले पूज्य ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी आदि नामी-अनामी कई संतोने खूब सेवा की थी । अहमदाबाद मंदिर के रसोई-घर में सेवा करने वाले भंडारी स्वामी सूर्यप्रकादासजी, स्वा. हरिचरणदासजी, कोठारी भक्ति स्वामी, जे.के स्वामी, धर्मजीवन स्वामी (काथाकार), बलदेव स्वामी (धोलेरा), कोठारी पार्षद दिगंबर भगत और निलेश भगत आदि संत पार्षद मंडलने रात दिन अत्यंत परिश्रम करके सबकी प्रसन्नता के पात्र बने थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से यह महान भव्य धर्मकुल वंदना महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । पुनः इस प्रकार के उत्सव में (श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन प्रसंग पर) हम सभी इसी प्रकार तत्पर रहे ऐसी कटिबद्धता सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव हमें प्रदान करे ऐसी उनके चरणों में प्रार्थना ।

मैं आपके साथ हूँ

लेखक - शास्त्री निर्गुणदासजी

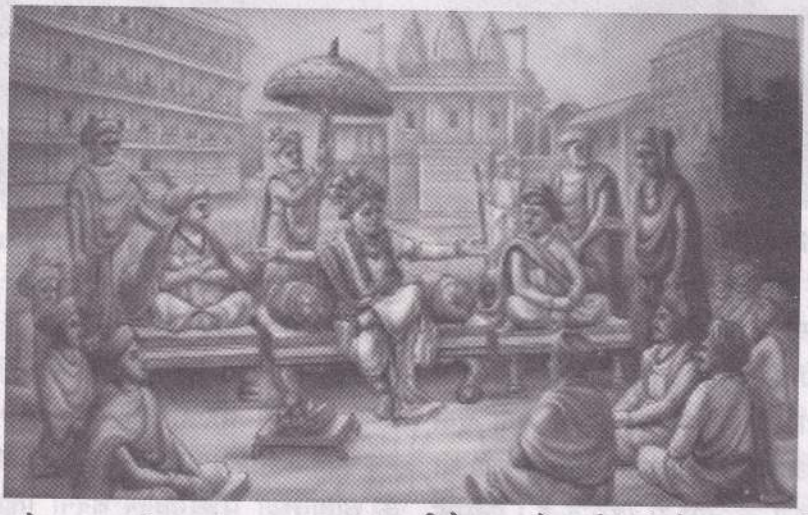


जगत में तथा शास्त्रों में प्रसिद्ध वात है, कि जीव मांगने में भूल कर सकता है लेकिन परमात्मा कभी भूल नही कर सकते । जीव मांगे उससे कई गुना अधिक प्रभु प्रसन्न होकर देते हैं । बात है आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन में बनी एक सत्य घटना की । हुआ ऐसा कि उद्धव संप्रदाय जो श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है । जिसके प्रवर्तक तथा संस्थापक सर्ववातारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण ने इस संप्रदाय की अनादि काल तक मोक्ष की प्रवृत्ति अविरत चालू रहे इसके लिये दत्तकपुत्र लेकर दो गादी स्थापित किये । जिस में उत्तर विभाग की गद्दी श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पर आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को ऐसा लगा कि मेरी भाग्य में तो सूखा प्रदेश ही आया है । (दो सो वर्ष स्थिति के अनुसार) उस समय स्वयं अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति श्री स्वामिनारायण भगवान ने वचन दिया कि हे अयोध्याप्रसादजी मैं आपके साथ सदा रहूँगा । इस तरह के वचन श्रीजी महाराजने दिया और आज वह वचन उत्तर विभाग में शतप्रतिशत प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है । जिस में द्विशताब्दी, रजत जयंती, शतामृत महोत्सव, षष्टिपूर्ति तथा धर्मकुल वंदना महोत्सव जैसे आजतक अनेको बड़े-बड़े उत्सव मनाये गये । ऐसी महामंदी तथा महगाई के वातावरण में धर्मकुल वंदना महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । जिस में किसी प्रकार की कमी दिखाई नहीं दी । छोटे-बड़े सभी लोग दान कम दिये या अधिक सभी को श्रीजी महाराज के प्रत्यक्षपना का अनुभव हुआ । देश विदेश से आये हुये लाखो भक्तों के अनुकुल व्यवस्था की गयी थी । धर्मकुल वंदना महोत्सव में भेदभाव के विना सभी को समान व्यवस्था मिली । किसी की कोई वस्तुचोरी की शिकायत तक नहीं हुई । कौन रक्षा किया, कौन कार्य को पूर्ण किया ? जहाँ श्रीजी महाराज प्रत्यक्ष हो वहाँ कहना क्या ?

सर्वोपरि का काम सर्वोपरि ही होना है

लेखक - पी. पी. स्वामी (जेतलपुरधाम)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने स्वरुप का प्रगट तथा प्रत्यक्षता अखंड रखने हेतु संवत १८८२ के कार्तिक शुक्लपक्ष-११ प्रबोधनी एकादशी के दिन वडताल में एक सभा के बीच दो देश का विभाग करके आचार्य पद पर उत्तर विभाग में प.पू. रामप्रतापभाई के पुत्र अयोध्याप्रसादजी महाराज को नियुक्त किये । दक्षिण देश के श्री लक्ष्मीनारायणदेव गादी संस्थान के आचार्य पद पर इच्छाराम के पुत्र रघुवीरजी को नियुक्त किये ।



स्वतंत्र, अन्तर्यामी, अनंत आश्चर्य के करने वाले, एक मात्र मूल स्वरुप, काल-कर्म, माया-अक्षरादि के नियंता स्वामी सदा सत्य - अनंत कला सर्जक, अवतारों के अवतारी स्थापक, चतुर्धाम मुक्तिदायक, सर्वोपरि, परब्रह्म, पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवानने उद्धव संप्रदायकी स्थापना स्वामी रामानंद के पास से कराकर उत्तराधिकारी का अमूल्य अमर वारसा का उत्तरदायित्व - यद्यपि अपने पास पांचसौ परम हंस, विद्वान, कवि - ज्ञानी, ध्यानी जैसे अनंत संत-भक्त होते हुये भी अनंत युगों तक आयुष्य रखने के संकल्प से मायिक दृष्टि से सामान्य, दैत्य दृष्टि से सत्य ऐसे परब्रह्म परमात्मा को दीर्घगामी नित्य सनातन विचार सं. १८८२ कार्तिक शुक्ल-११ के दिन चरितार्थ हुआ । वर्तमान २००९ - १७७ वर्ष भी इतना ही सत्य है । सर्वोपरि के विचार को अनंत कोटि ब्रह्मांड में मिथ्या करने की कीसी की ताकत नहीं है। मात्र इतना ही हो सकता है सूर्य के सामने धूल प्रक्षेप करके सूर्य प्रकाश को रोकने का मूर्ख प्रयास ।

उत्तराधिकारी की नियुक्ति के समय पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की अवस्था प्रौढ होती तो पांच संत - भक्त कार्य कुशलता देखकर सिपारिस करते । चतुर्धामुक्ति तथा आध्यात्मिक मोक्ष को देने वाले एक मात्र भगवान स्वामिनारायण का वचन ही पर्याप्त है । कोई जप-तप-व्रत-दानादि साधन समर्थ नहीं है । इसलिये श्रीहरि का जिस समय जो वचन आवे वह तीनो अवस्था तीनो गुण में सर्वदा शिरोमान्य मानने वाले थे । आज भी वैसा ही मानने वाले वारसदार संप्रदाय में है । आप सर्वोपरि है लेकिन आप के वचन हमें मान्य नहीं हैं । आप लोग काल के वश वचन कहे हैं, ऐसे पाखंडी लोग तो अभी पैदा हुये हैं ।

अपनी बुद्धि में नहीं आवे ऐसी सत्य कथा है : जब श्रीहरिने संप्रदाय के उत्तराधिकारी पद पर आचार्य नियुक्त किये तब दो आचार्यो की अवस्था रघुवीरजी महाराज की अवस्था १३ वर्ष तथा पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजकी अवस्था १६ वर्ष की थी । रामप्रतापजी तथा इच्छारामभाई के अन्य पुत्र भी थे, फिर भी उनमें से

दो को दत्तक पुत्र लेकर अपने स्थान पर स्थापित किये। गादी अभिषेक करने के बाद पूजन-आरती किये ।

प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज की छोटी उम्र में नियुक्ति हुई उस समय पांचसौ परमहंस - ब्रह्मचारी वर्णी, भगत थे । सभी सहर्ष स्वीकार करके पूजा किये । थोड़ा भी किसी को संकोच नहीं हुआ । क्योंकि उस समय के आश्रित अक्षरधाम से श्रीहरि के साथ आये थे । पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की अवस्था छोटी थी, फिर भी अक्षरधाम से आये हुये भक्त पहचानते थे और स्थिति शक्ति सामर्थ्य को जानते थे। इसके साथ ही जिस पद पर बैठे है वह सर्वोपरि पद है । मनोरथ पूर्ण करने का काम तो श्रीहरि का है । वर्तमान समय में भी आचार्य पद पर विराजमान आचार्य महाराजको श्रीहरि अक्षरधाम में से ही भजते हैं . इसके अलांवा सर्वोपरि की गद्दी पर पामर जीव बैठ ही नहीं सकता है ।

प.पू.ध.धु. अयोध्याप्रसादजी महाराज अन्तर्यामी थे । ऐसा बहुत प्रसंग संतो की बातो से स्पष्ट होता है ।

एकबार अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री मूली में वसंतोत्सव मनाने पधारे । असंख्य भक्त उत्सवमें आये हुये थे । उसमें मेमका के रामजी शेठ प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज के निवास स्थान पर जाकर साष्टांग दंडवत प्रणाम करके पूछे कि अहमदाबाद शहर में हठीभाई शेठ बड़ा मेला करने वाला है, उस में वढवाण का संघ जानेवाला है, मुझे संघवालोने आमंत्रण दिया है, तो आप आज्ञा दें तो मैं जाऊँ । आंख बंद करके थोड़ी देर के बाद बोले कि शेठ ? हठीभाई के मेले में नहीं जाना है । लेकिन हमें उस मेले से कुछ लेना देना नहीं है, इसी बहाने हम श्री नरनारयणदेव का दर्शन कर आयेंगे । महाराजश्रीने कहा लेकिन शेठ ? उस मेले में भयंकर रोग होने वाला है । हजारों लोगों की मृत्यु होगी । इसलिये जाना ठीक नहीं । यह सुनकर रामजी शेठ मेला में नही गया । हुआ ऐसा ही वहाँ महामारी के रोग में हजारो लोग मर गये । ऐसा समाचार रामजी शेठ को मिला । वे निश्चित किये कि अन्तर्यामी को अन्तर्यामी ही होते है । आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज मेरी रक्षा किये, यह उन्हें निश्चय हो गया ।

एकबार रामजी शेठ अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव का तथा प.पू. अयोध्याप्रसाजी महाराजश्री का दर्शन करने आये, कथा-वार्ता पूर्ण करके महाराजश्री का दर्शन करने गये वहाँ उनसे पू. महाराजश्रीने कुशळ क्षेम पूछा । रामजी शेठने कहा बाबूजी । वढवाण के राजा हमारे ऊपर बहुत इर्ष्या करते हैं । सत्संगियों को बिना प्रयोजन के दंड देते हैं । सत्संग की जो निन्दा करे उसे आदर देते हैं । कुछ दिन पहले किसी सत्संगी के बैल को जप्त करके १२ रुपये का दंड किये हैं । यह सुनकर महाराजश्रीने कहा कि उस दीवान को कुछ ही समय में महाराज चमत्कार दिखायेंगे रामजी शेठने कहा चमत्कार क्या होगा ? अयोध्याप्रसादजी महाराजने कहा कि राजा १५ दिन में उन्हें दीवान पद से हटा देंगे । इसके साथ उसे भयंकर बिमारी आयेगी पूरी शरीरमें कीड़े पड़ जायेंगे । उसकी कोई सेवा करने के लिये नजदीक नहीं जायेगा । रामजी शेठने यह वात गाँव के लोगों से कही । पन्द्रह दिन में वह चमत्करा हुआ । वढवाण विस्तार में यह वात फैल गयी । दीवान भगवान स्वामिनारायण का द्रोह किया और सत्संगियों का भी द्रोह किया इसलिये उसे पाप लगा है ।

एकबार मूली में वसंत पंचमी के उत्सव पर रामजी शेठने पू. महाराजश्री से कुशल समाचार पूछा, तब महाराजश्रीने कहा कि हम सुखी-दुःखी दोनो हैं । शेठने कहा ऐसा क्यों ? महाराजश्रीने कहा रात्रि में खबर पड़ेगी । ठीक वसंत पंचमी की रात्रि में पू. महाराजश्री ने स्वयं रोगी हो गये । महाराजश्रीने कहा वसंत पंचमी के उत्सव के पूर्व रोग आने वाला था । लेकिन भक्तों को सुखी करना था इसलिये रोग रोक कर रखे थे। उत्सव पूर्ण होते ही रोग को स्वेच्छया ग्रहण कर लिये । तब मूली देश के भक्त आपस में ऐसी चर्चा करने लगे कि भगवान के पुत्र भगवान ही होते हैं ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा का परमार्थ

लेखक - शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर)



जून महीने के प्रारंभ होते ही सूर्यनारायण की प्रातः कालीन किरण के साथ श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर प.पू. बड़े महाराजश्री के दृढ संकल्प के साथ एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की अमिट दृष्टि के साथ अहमदाबाद मंदिर के विद्वान एवं व्यवहार कुशल महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा संत-महंत - हरिभक्तों के परिश्रम बल से सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के प्रथम पीठाधिपति प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वीं जन्म जयंती महोत्सव धर्मकुल वंदना महोत्सव गुजरात में अहमदाबाद शहर के पवित्र वातावरण में विशाल प्रांगण में लाखो जन संख्या के बीच में हरिभक्तों के जयघोष के साथ मंगल प्रारंभ हुआ । यह धर्मकुल वंदना महोत्सव सत्संगी मात्र को धर्मवंशी आचार्य की अलग पहचान कराया है ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव का पुरुषार्थ : शास्त्रों का मत है कि कोई भी छोटा-बड़ा पुरुषार्थ विना किसी सिद्धि के नहीं मिलती है । हाँ मनुष्य मात्र पुरुषार्थ करे तो परमात्मा उसके कार्य में अवश्य सहायक होता है । यह अनुभव धर्मकुल वंदना महोत्सव में हुआ । हम सभी के प्रिय, विश्ववंदनीय श्री स्वामिनारायण भगवान के सातवें वंशज वर्तमान पीठाधिपति पू. आचार्य महाराजश्री तथा विद्वान महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, शा.स्वा. रामकृष्णदासजी इत्यादि संत मंडल साथ मिलकर इस उत्सव के प्रचार प्रसार हेतु अमेरिका के प्रवास में गये, वहाँ पर रहने वाले हरिभक्तों के हृदय में पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का यह उत्सव दिव्याति दिव्य ढंग से मनाया जाय जिसके लिये भक्त

विजयस्तंभयात्रा











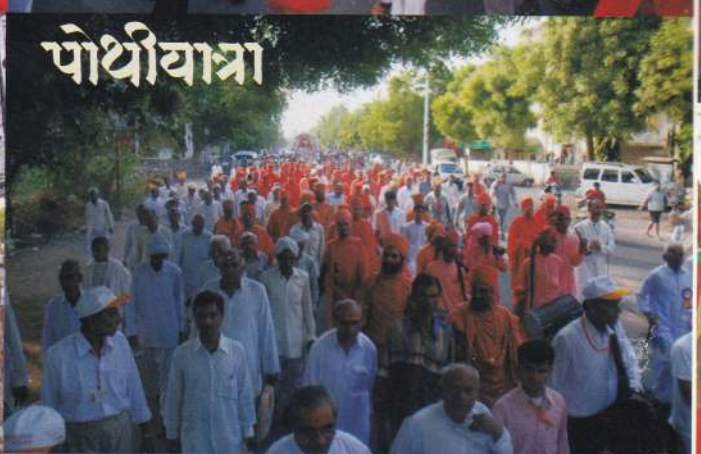











पोथीयात्रा





प.पू. आचार्य महाराजश्री के वचन पर उनके चरणों में यथाशक्ति धन समर्पित करके धन्यता का अनुभव किये। इसके साथ धर्मवंशी धर्माचार्य का धर्मकुल वंदना महोत्सव सम्पन्न करने के लिये सभी युवा-वृद्ध बालक, स्त्री पुरुषने यथेच्छित झोली भर दिया। जिसमें अमेरिका के सभी मंदिरो में पूजा सेवा करने वाले संतो ने भी जिसमें जे.पी. स्वामी, हरिप्रसाद स्वामी, विश्वप्रकाश स्वामी, (चेरीहील), शा. सिद्धेश्वर स्वामी (बोस्टन), धर्मवल्लभ स्वामी (ह्युस्टन), शा.ज्ञानप्रकाशदासजी (एडीसन), के.पी. स्वामी (ह्युस्टन), शा. माधवदासजी (न्युजर्सी) इत्यादि संत महंतोने धर्मकुल वंदना महोत्सव के लिये तन, मन, धन से सेवा हेतु भाव भरी वाणी द्वारा प्रेरित किया था। इतना ही नहीं पू. आचार्य महाराजश्रीने सत्संग के मार्ग पर चलने वाले अनेक युवानों को उन्हें मिलने वाले वेतन को इस उत्सव में लगाकर गुरुऋण से मुक्त होने के लिये प्रेरणा दिये थे। अमेरिका में रहने वाले भारतीय सत्संगियों ने जिसमें डांगरवा, मोखासण, करजीसण, वडु, राजपुर, कोठा, जोरवांग, अहमदाबाद, कलोल, देउसणा, कडी, आनंदपुरा, सांकापुरा, नारदीपुर, बाकरोल, मीरोली, गामडी तथा कच्छ प्रदेश एवं हालार प्रदेश के अनेक हरिभक्त आदि आचार्य के इस उत्सव को साकार करने के लिये पू. आचार्य महाराजश्री एवं अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा को ध्यान में रखकर गुरुऋण से मुक्त होने के लिये अपने कर्तव्य को पूर्ण किये।

इसके अलांवा इंग्लेन्ड, आफ्रिका, स्वीडन, केनेडा, ओस्ट्रेलिया, न्युजीलेन्ड, इत्यादि देशों में रहने वाले हरिभक्तों ने धर्मकुल वंदना महोत्सव की सेवा में सुवर्ण अवसर समझकर हृदय की भावना के साथ तन, मन, धन को न्यौछावर कर दिया। तथा इस उत्सव में पधारकर अलभ्य लाभ लेकर श्रीजी महाराज तथा पू. बड़े महाराजश्री, पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री, संत-मंडल एवं हरि भक्तों की प्रसन्नता प्राप्त की थी।

धर्मकुल वंदना महोत्सव आयोजित धरती (गणेश हाउसिंगः का पवित्र वातावरण हमारी दृष्टि में : अहमदाबाद के आंगन में धर्मकुल वंदना महोत्सव संपन्न करने के लिये एक बड़ा प्रश्नथा। जो सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के हार्दिक आशीर्वाद से एवं पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से सरल हो गया जो सामने ही भगवान के परम भक्त श्री गोविंदभाई सी. पटेल ने इस उत्सव को अपनी सरखेज गांधीनगर हाईवे के ऊपर थलतेज चार रस्ता के पास वाली जमीन में करने के लिये सेवा का अवसर प्राप्त कर लिया। इसके बाद वहाँ पर महोत्सव से पूर्व पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हजारो संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में वैशाख शुक्ल-३ (अक्षय तृतीया), के दिन मंगल मुहूर्त में विजय स्तंभ स्थापित किया गया था। विजय स्तंभ स्थापना के श्री गणेश से उस धरती पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र सतत गुंजित होने लगा। ता. ३ जून तक यह महामंत्र चलता रहा।

पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन-चरित्र के साहित्य की अद्भुत सेवा धर्मकुल वंदना महोत्सव के अनुलक्ष्य में पू. आदि आचार्यश्री के जीवन चरित्र से संबन्धित साहित्य की सेवा जैसे कीर्तनावली, महाराजश्री का जीवन चरित्र पुस्तक, महाराजश्री द्वारा सत्संग में हुये सत्कार्य सचित्र पुस्तक तथा वीडियो एवं डी.वी.डी. अनेको केसेट संत हरिभक्तों के साथ सहकार से कालुपुर मंदिर द्वारा प्रकाशित की गयी थी। यह एक अद्वितीय इस उत्सव

की धरोहर बन जायेगी । इस कार्य में श्री नरनारायणदेव के श्री नरनारायण देव के पुजारी स.गु. ब्र. राजेश्वरानंदजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा नारायणघाट के महंत स्वा. वप्रकाशदासजी की देखरेख में पू. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा से तथा पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में साहित्य प्रकाशन कार्य की सेवा में अथक परिश्रम करके सफलता के साथ सत्संग के समक्ष साहित्य को स्तुत किया जा रहा है ।

इसके साथ ही अन्य सेवा में जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), छोटे पी.पी. स्वामी कोटेश्वर), स्वा. कृष्णवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर), स्वा. राजेन्द्रप्रसादजी, स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा), के. स्वामी (कोठारी), शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी, योगी स्वामी, पार्षद दगम्बर भगत, भक्ति स्वामी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, स्वा. जगदीशप्रसाददासजी, स्वा. हरिजीवनदासजी, स्वा. दनकिशोरदासजी, स्वा. हरिस्वरुपदासजी स्वा. गुरुप्रसाददासजी इत्यादि संतो ने इस महोत्सव में उत्तम सेवा करके श्रीजी महाराज एवं प.पू. महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की है ।

इस महोत्सव की पूर्वभूमिका में श्री प्रवीणभाई नसीत तथा ईश्वरभाई गंगारामभाई तथा श्री मनोजभाई अमरतभाई, श्री रतिभाई देवपुरा, श्री अमितभाई दशरथभाई पटेल, श्री तुषारभाई दशरथभाई पटेल, श्री उदयनभाई महाराजा, श्री सरदभाई गोविन्दभाई पटेल, श्री भरत ठक्कर, श्री प्रवीणभाई पटेल, श्री धर्मेन्द्रभाई इत्यादि हरिभक्तों ने श्रद्धापूर्वक पूर्ण पुरुषार्थ के साथ सेवा करके उत्सव को सफल बनाया था ।

अंत में धर्मकुल वंदना महोत्सव को सफल बनाने के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स्कीम कमेटी के सदस्य एवं संत-मंडल तथा हरिभक्तों ने सतत् प्रयत्नशील रहकर अपना योगदान दिया । यह भी सत्संग में सेवा का उदाहरण बना रहेगा । धर्मकुल वंदनामहोत्सव लिखने का उत्सव नहीं था बल्कि यह उत्सव दर्शनीय एवं सेवा समागम का उत्सव था । अस्तु ।

आषाढ शुक्लपक्ष अमावास्या सूर्यग्रहण के नियम का पालन है ।

आषाढ शुक्लपक्ष-३० ता. २२-७-०९ बुधवार को ग्रहण है ।
साम ६-०० बजे के बाद भोजन ग्रहण नहीं (२१-७-०९ मंगलवार) करना है ।
आषाड शुक्लपक्ष अमावास्या बुधवार ता. २२-७-०९ को ग्रहण हैं ।
प्रात ६-०६ बडे ग्रहण स्पर्श • मोक्ष : सुबह ७-२०
उसके बाद स्नान पूजन करके भोजन ग्रहण करना है ।

श्री नरनारायण महिला मंडल राणीप की सत्संगी बहनों ने प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वीं जन्म जयंती धर्मकुल वन्दना महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सभा की जिस में प्राप्त धन राशी को धर्मकुल वंदना महोत्सव में अर्पण कर दी । धन्य है ये बहने ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव फलश्रुति

- साधु रामकृष्णदास (कोटेश्वर)

सर्वावतारी भगवान श्रीहरि के पुत्र ऐसे आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसाजी महाराज का द्विशताब्दी जन्म महोत्सव धर्मकुल वंदनामहोत्सव को हम सभी लोग मिलकर एक साथ धूम धाम के साथ मनाये । त्रिदिनात्मक यह महोत्सव संपन हुआ लेकिन इसकी फलश्रुति क्या ?

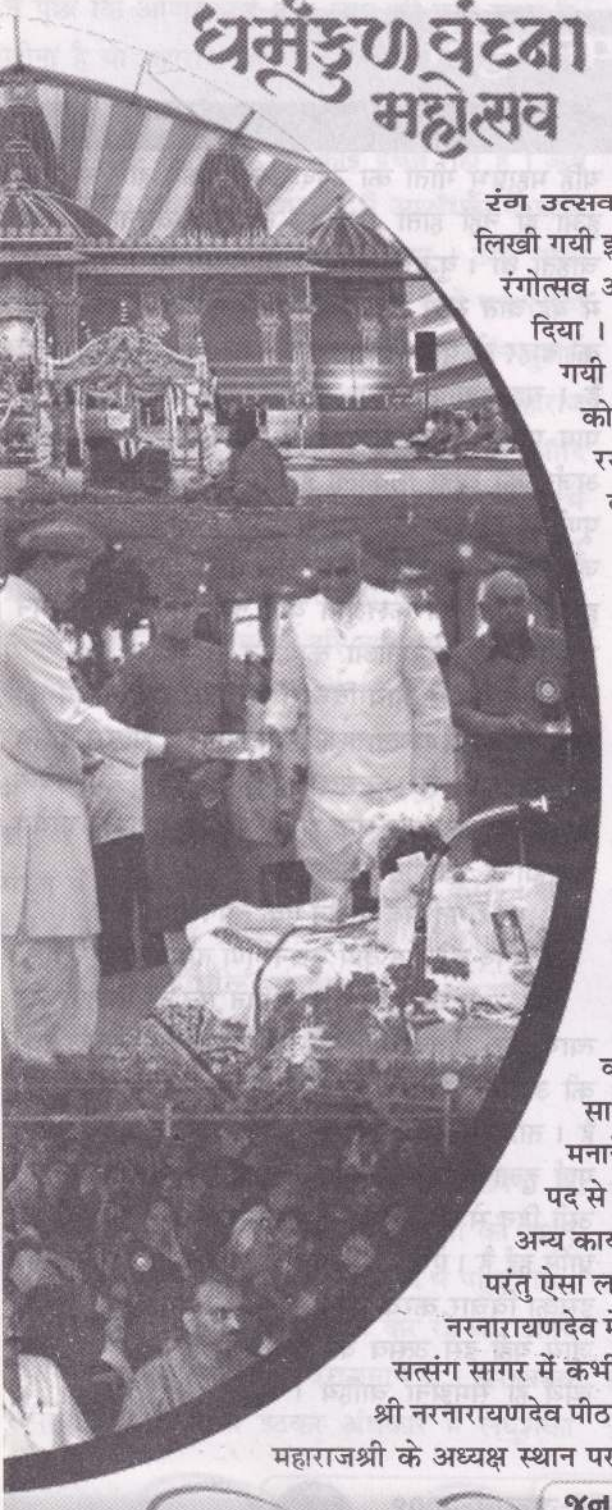
हिन्दु सनानत संस्कृति का आधारभूत ग्रंथ अर्थात् श्रीमद् भगवद्गीता । गीताजी के उद्भव की भूमिका को देखें तो कुरुक्षेत्र के रण रण मैदान में कौरव-पांडवो की सेना आमने सामने खड़ी थी और युद्ध की घड़ियां गिनी जा रही थी, उसी समय अर्जुन अपने रथ को दोनो सेना के बीच में ले जाने को कहा । कौरव के पक्ष में गुरु द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह, कुलगुर कृपाचार्य को देखकर हाथ में से बाण को नीचे रख दिया । हृदय में ग्लानी होने लगी । दुःखी होकर प्रभु के सामने हाथ जोड़कर विन्ती करने लगा कि हे प्रभु ! मुझसे यह युद्ध नहीं होगा । एक टुकड़ी जमीन के लिये हम अपने सगे सम्बन्धियों की हत्या नहीं करेंगे । मुझसे यह पाप नहीं होगा । ठीक इसी स्थिति में भगवान ने अर्जुन को गीता का उपदेश करते हैं । और अर्जुन को इस तरह तैयार करते हैं कि अंत में अर्जुन को कहना पड़ा कि करिष्येऽडहं वचनं तव (आपका वचन पालन करुंगा) । इस तरह कहकर युद्ध में प्रवृत्त हो गया । इतिहास उस युद्ध को आजतक भूला नहीं है । इस युद्ध के मूल में यदि कोई है तो वह प्रभुद्वारा उपदिष्ट गीता । यदि परमात्मा गीता का उपदेश नहीं किये होते तो वह इतिहास कुछ और होता है । गीता पूर्ण होने के बाद ही युद्ध प्रारंभ हुआ था । एक अर्थ में देखा जाय तो गीता की फलश्रुति ही महाभारत युद्ध है ।

आजभी दुनिया में बहुत लोग ऐसा मानते हैं कि यहि महाप्रभु गीता का उपदेश नहीं किये होते तो युद्ध हुआ ही नहीं होता । अर्जुन तो युद्ध करना ही नहीं चाहता था । युद्ध की प्रेरणा तो प्रभुने दी । कुछ अंश में यह वात सत्य लगती है । परंतु मूलतः प्रभुने अर्जुन को बाहर के युद्ध में उतारकर अन्तर के युद्ध से बचाया है । यह अपना पराया, जय-विजय, हिंसा, अहिंसा, पाप-पुण्य, जीवन-मृत्यु, कर्म, फल के द्वन्द से प्रभुने अर्जुन को बाहर निकाला है । जगत की दृष्टि से गीता पूर्ण हुई अर्थात् युद्ध आरंभ हुआ । लेकिन ऐसा नहीं जो अर्जुन के अंदर युद्ध चल रहा था उसका अंत हुआ । गीता की फलश्रुति युद्ध नहीं बल्कि अपने मन में मानी हुई मान्यताओ का अंत ।

अपने मन में आये विचारों का अंत तथा अर्जुन की तरह करिष्येऽहं वचन तथा इसका आरंभ ही इस उत्सव की फलश्रुति है । उत्सव के बाद जीवन के प्रत्येक क्षणमें प्रभु के वचन बद्ध होकर प्रभु के गुण को गायेगे - ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है-

मर मगतुं सर्वे मेलीने एक तमने रीजावा रे,
ब्रह्मानंद कहे मन कर्म वचने गुण तमार गावा रे ॥

इस न्याय के आधार पर अपने मन के विचारो को त्याग कर जीवन के दोषों को त्याग कर केवल प्रभु की आज्ञा में जीवन जीना ही इस उत्सव की सार्थकता है । ता. ३-६-०९ भीमसेनी एकादशी के दिन उत्सव पूर्ण हुआ ऐसा नहीं मानना, अपने जीवन का उत्सव उसी दिन से प्रारंभ हुआ है । सर्वावतारी श्रीहरि की हमें प्राप्ति हुई है । ऐसे देव, आचार्य, संत, सत्संगी मिले हैं । इसका विचार करके जीवन जीने की एक शैली बनाया जाय यही इस उत्सव की सार्थकता है । अन्यथा सभी व्यर्थ ही समझना चाहिये ।



धर्मकुल वंदना महोत्सव की स्मृति रुप में स्थायी रुपरेखा

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

रंग उत्सव समैया करने गढडुं घेलुं कीधुं रे : नंद संतो द्वारा लिखी गयी इस पंक्ति से यह प्रतीति होता है कि श्रीहरि गढपुर में सतत रंगोत्सव अथवा अन्य उत्सव करके गढडा को उत्सव वाला कर दिया । परिणाम स्वरुप वहाँ के लोगों में उत्सव की लत लग गयी । श्रीहरि उन दिनों गढपुर में ही रहते थे । जिससे आये दिन कोई न कोई उत्सव चलता रहता । उसी परंपरा को ध्यान में रखकर यहाँ भी श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित धर्मकुल वंदना को ध्यान में रखकर यहाँ भी श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित धर्मकुल आचार्य परंपरा का श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के आचार्यों की एक परंपार रही है कि निरंतर कहीं विचरण करने के बाद श्रीनगर में ही पधारते और बड़े-बड़े उत्सव करते । इसलिये यहाँ यह लिखा जा सकता है कि - रंग उत्सव समैया करीने ।

श्रीनगर घेलुं कीधुं रे : - श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव द्विशताब्दी के बाद कितने उत्सव मनाये गये । रजत सुवर्णजयंती, श्री नरनारायण शतामृत महोत्सव, षष्टिपूर्ति महोत्सव श्री नरनारयणदेव देश के सातवें आचार्यश्री का पट्टाभिषेक महोत्सव : क्रमशः अपनी स्मृतिपटल पर अंकित हो गये हैं । किसी समय इन्हें भूला नहीं जासकता है । इस में मंदिर भी कारण है । गाँव गाँव में मंदिर वहाँ पर पाटोत्सव । इसके साथ श्रीहरि के तीन अपर स्वरुपों का प्रागट्योत्सव प्रति वर्ष मनाने का सभी को लाभ मिलता है । प.पू. बड़े महाराजश्री भी पद से निवृत्त हुये हैं और स्वयं म्युझियम के काम में लगे होने से अन्य कार्य से निवृत्त होने के लिये सभाओं में विन्ती करते रहते हैं । परंतु ऐसा लगता है कि पू. बड़े महाराजश्री का श्रीहरि में प्रेम तथा श्री नरनारायणदेव में प्रेम एवं हम सभी का उनमें अतिशय प्रेम होने के कारण सत्संग सागर में कभी निवृत्ति नहीं लेने देगा ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ संकल्प एवं भावि

आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा से तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री की उपस्थिति में अहमदाबाद के थलतेज विस्तार में गणेश हाउसिंग कोर्पोरेशन के विशाल मैदान में श्री स्वामिनारायण नगर में यह महोत्सव ता. १-६-०९ से ३-६-०९ तक समग्र संप्रदाय के विद्वान संत, सां.यो. बहनें, समस्त सत्संगीजन, लाखो धर्मप्रेमी जनता के बीच में गुरुऋण उतारने के लिये भक्तिभावपूर्वक धामधूम से मनाया गया था।



आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जन्म द्विशताब्दी महोत्सव मूल संप्रदाय के लिये ऐतिहासिक महोत्सव था। श्रीजी महाराज, श्री नरनारायणदेव तथा विद्यमान आचार्य श्री के निमित्त यह उत्सव मनाया गया था। परंतु यह उत्सव स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित धर्मवंशी आचार्य परंपरा के मूल का दर्शन कराया॥ कितने लोग कहते हैं कि आपके संप्रदाय में कितने विभेद हुये हैं।

सज्जनो ! यथार्थ रुप में इस संप्रदाय का भेद ही नहीं है। इसकी कोई शाखा भी नहीं है। जिस तरह प्रतिष्ठित दुकान वाला ऐसा कहता है कि हमारी कोई अन्य शाखा नहीं है। फिरभी कोई डुप्लीकेट शाखावाली दुकान से माल खरीदलाता है तो पछताने का ही अवसर आता है। ठीक यही स्थिति यहाँ भी है। मूल संप्रदाय की जो नकल करते है, उनकी मायाजाल में जो भी फंसा उसका यह लोक तथा परलोक दोनो गया.

हमारे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने जिसधर्मवंश आचार्यकी परंपरा स्थापित की वही मूल संप्रदाय है। प्रथम अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश, द्वितीय वडताल श्री लक्ष्मीनारायण देव देश, इन दानों गादी संस्थानों को मूल संस्थान या पीठ स्थान का रुप दिया। इन दोनों संस्थानों के मूल को कोई उखाड नहीं सकता। वट वृक्ष की तरह इसका मूल है, जिसमें से नाना प्रकार की बरो लटकती हैं बाद में वही मूल बन जाती है। इस परंपर वाले को ही मूल संप्रदाय कहा जाता है। इस विशाल वृक्ष पर पक्षियो रैन वसेरा करती हैं तथा कलवर करती रहत हैं। ठीक यही स्थिति इस मूल संप्रदाय की है। भक्तों आनंद का कलरव इस पृथ्वी प जब तक रहते है तब तक होत रहता है बाद में शरीर छोड़ने प भी परमशांति का कलवर होता रह है। बाहरी लोगों से अर्थात् मू संप्रदाय से जो विमुख हैं उन पूछें कि आप का मूल कहाँ है त मूल का रोपण कार्य किसने कि तो तुरंत साप हो जायेगा, यथा का ज्ञान हो जायेगा।

कालुपुर मंदिर में इस कार्यक्र में देश-विदेश के धार्मिक भक्त को संप्रदाय के मूल का पता च गया है। इस उत्सव के माध्यम मूल संप्रदाय के मूल आचार्य व परंपरा का सभी को ख्याल आये बिना रहा नहीं। इ धर्मधुरा की परंपरा जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक चलेग जब बड़ा तूफान आता है तो वट वृक्ष से लिपटी ल अलग हो जाती है लेकिन जो मूल है वह तो वहीं का व दृढ खड़ा ही रहता है।

इस उत्सव को मनाने के लिये प.पू. महाराजश्री व आज्ञा हुई। उसमें भी श्री नरनारायणदेव श्रीहरि की कृ हुई कि तुरंत अहमदाबाद देश के संत-हरिभक्त Star by हो गये। महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स्क कमेटी के सभ्यों की प्रेरणा से इस उत्सव को संपन्न क के लिये श्री गोविंदभाई सी. पटेल सरखेज गांधीन

हाइवे पर अपने गणेश हाउसिंग कोर्पो. का अति विशाल मैदान दे दिया । २७-४-०९ के दिन धूमधाम के साथ विजय स्तंभ की स्थापना की गयी । प.पू. महाराजश्रीने उत्सव की निर्विघ्न पूर्णता का आशीर्वाद दे दिया । हुआ भी ऐसा । यह भी कहे थे कि इस उत्सव के माध्यम से बहुत सारे लोगों को स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित मूलभूत सिद्धांतो की पहचान हो जायेगी । उत्सव की फलश्रुतिरुप ऐसा ही हुआ ।

विजय स्तंभ स्थापना के बाद तुरंत कालुपुर मंदिर के महंत स्वामीजी, अग्रगण्य संत, स्कीम कमेटी के सदस्य आयोजन में व्यस्त हो गये । ता. २१-५-०९ से ही स्वयं सेवकों के लिये भोजनालय की व्यवस्था करदी गयी । कितने संत-हरिभक्त फूल टाईम तो कितने हाफ टाईम सेवा करने लगे । सभी के हृदय में आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वां जन्मोत्सव मनाकर धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त करनी थी । तन, मन, धन से सभी सेवा में लग गये । महोत्सव की सफलता के लिये पू. महाराजश्री ब्रह्मनिष्ठ संतो को साथ लेकर देश-विदेश में विचरण करने लगे । निमंत्रण की बड़ी पत्रिका देश-विदेश में छोटे-बड़े मंदिरो में तथा विशिष्ट महानुभावो को प्रेषित कर दी गयी । इसके साथ ही मई महीना के श्री स्वमिनारायण मासिक के अंक में प्रकाशित किया गया था । शहर के मुख्य मार्ग पर तथा चौराहों पर बड़े-बड़े पोस्टर-बेनर लगाकर प्रचार का माध्यम बनाया गया था । केलेन्डर, पत्रिका, हरिभक्तों के वाहनों पर स्टीकर चिपकाकर एवं मुख्य समाचार पत्रों में प्रेस रिपोर्ट द्वारा धार्मिक जनता को आमंत्रण दिया गया था ।

प.पू. महाराजश्री के नाम मात्र से, संतो की प्रेरणा से, सत्संग सभाओं के माध्यम से, दान का प्रवाह अविरत चलता रहा । हजारों एवं लाखों रुपये का दान करके हरिभक्त धन्य बन गये । पू. महाराजश्री कार्यकुशल एवं अनुभवी संतो को साथ रखकर २६ मुख्य तथा ६४ छोटी समिति की रचना करके कार्यभार का बटवारा कर दिया था । प्रत्येक समिति में ५ से ७ सदस्यों को रखकर उनके नीचे १०,००० स्वयं सेवकों की नामावली थी ।

स्वयं प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रतिदिन कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट के महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, श्री राजेश्वरानंदजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी, शा.रामकृष्णदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के ट्रस्टी बोर्ड के सदस्य की देखरेख में आर्केटिक



इन्जिनीयर श्री प्रविणभाई के प्लान के अनुसार नारायणपुरा, नारायणघाट, बाबूपनगर, वाडज, राणीप, घाटलोडिया, जीवराजपार्क, बोपल इत्यादि अहमदाबाद के अनेक विस्तार से स्वयं सेवक पुरुष एवं महिलाये बड़े-बड़े बाहनों को लेकर स्थल पर आने लगी । कुंड लीपने का कार्य, यज्ञ स्थल का कार्य, जमीन समतल करने का कार्य, इत्यादि सेवा में सभी लग गये ।

उत्सव की सफलता के लिये तथा श्रीहरि एवं धर्मकुल की प्रसन्नता के लिये असंख्य भक्तों ने श्री स्वामिनारायण मंत्र की असंख्य माला की, श्रीहरि की प्रदक्षिणा की, पुरुषो ने दंडवत प्रणाम किया, बहनों ने पंचांग प्रणाम किया, जनमंगल पाठ, मंत्रजाप, वचनामृत पाठ, भक्त चिंतामणी पाठ, बालचरित्र पाठ, सत्संग सभा, सामूहिक कीर्तन, ठाकुरजी को तथा प.पू. महाराजश्री का पदार्पण करवाया गया ।

ता. २९-४-०९ के दिन स्वयं सेवक ग्राउन्ड पर आकर

सेवा में लग गये । नियत ड्रेस, मस्तक पर महोत्सव की स्मृत रुपी टोपी, गले में पहचान पत्र, इस तरह सहजानंदी फोंज सेवा कार्य में लग गयी । इसका परिणाम यह हुआ कि वहाँ कोई भी व्यक्ति घूमने भी आवे तो उसे आकर्षण हो और आनंद की प्रतीति हो । ऐसा दर्शनीय स्वामिनारायण नगर खड़ा कर दिया गया ।

इस नगर में ६०x३० फुट का विशाल श्री अयोध्याप्रसादजी द्वार था । जिसके दोनो तरफ छत्र की रचना की गयी थी । दोनो तरफ से सहनाई बजाकर आनेवालो का स्वागत किया जा रहा था । नगर में प्रवेश करते ही पक्के रास्ते के साथ श्री नरनारायणदेव मंदिर का निर्माण किया गया था । जिस में पूर्वाभिमुख अर्चास्वरुप श्री नरनारायणदेव का दर्शन हो रहा था । मंदिर के पीछे भाग में २०० फुट गोलाकार सुंदर जलाशय का दर्शन हो रहा था । इस सरोवर के ऊपरी भाग में २०x१५ फुट का पुल बनाकर सरोवर के चारो तरफ वनराजियों को उगाकर हरियाली का वातावरण खड़ा किया गया था । पानी में कृत्रिम कछुआ तथा हंसो को रखकर सरोवर की सुंदरता को प्रगट किया गया था। सरोवर के चारोतरफ पर्वत का दृश्य खड़ा किया गया था । पानी कि सिचाई के लिये सुंदर व्यवस्था की गयी थी । चारो तरफ पानी का छिटकाव करके वातावरण को ठन्ढा बना दिया गया था ।

मंदिर से दाहिनी तरफ आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन कवन का प्रदर्श किया गया था । जिस में प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन पर आधारित मित्रों को एवं दर्शनीय स्थल क रमणीय बनाने के लिये गमलों में नानाविध फूलों क लगाया गया था । मंदिर के बाई तरफ १६२x१०८ फु की जगह में सुशोभित यज्ञशाला बनाई गयी थी । जिस एक मुख्य कमल कुंड की रचना के साथ अन्य ४५ कुं बनाया गया था । धुन मंडप, यज्ञशाला, सभा मंडप रंगमहोल के घनश्याम महाराज तथा श्री नरनारायणदे एवं आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के अचा स्वरुप की स्थापना की गयी थी ।

स्वामिनारायण नगर के मध्य में ३०x१० फुट क होर्डिंग उद्धवजी, नारदजी के साथ श्री नरनारायणदे की प्रसादी स्वरुप की मूर्ति के साथ गढडा प्रथम ४८ क वचनामृत को बड़े अक्षर में लिखा गया था । यह वचनाम संप्रदाय के आश्रित मनन एवं निदिध्यासन करें ।

दर्शनार्थियों को सभामंडप का खूब आकर्षण रहा कारण यह कि ४५०x१३१ फुट का सभा मंडप उस भी ३५ फूट की उंचाई होने से मोहक लगता था । सभ मंडप बिना आकार के बना था । बीच में कोई स्तंभ न था । बाहर के वातावरण की अपेक्षा भीतर का वातावर





३ डिग्री तापमान कम था । समग्र सभामंडप तथा धून
ंडल में रिमझिम पानी बरसता रहे ऐसी व्यवस्था की
यी थी । सभा मंडप में १३१X८० फूट के स्टेज पर श्री
रनारायणदेव की तेजस्वी मूर्ति रखी गयी थी । दर्शन के
लिये आये अभ्यागतों के भोजन की व्यवस्था की गयी
ी । जिस में । श्री रामप्रतापजी भोजनालय, श्री भक्तिमाता
ोजनालय, सुवासिनी भोजनालय, इत्यादि धर्मकुल के
ाम वाला कुल ५ विशाल भोजन खंड बनाया गया था ।
००X१०० फूट का भोजनालय बनाया गया था ।
भ्यागतों के विश्रांति हेतु विशाल मंडप बनाया गया
ा ।

देखते ही देखते ता. १-६-०९ का सूर्योदय हुआ ।
क्तों मेंआनंद समा नहीं रहा था । प्रात: ७ बजे पारायण
े मुख्य यजमान श्री रसिकलाल अंबालाल पटेल के
वास स्थान से पोथीयात्रा धूमधाम के साथ निकली
ी ।

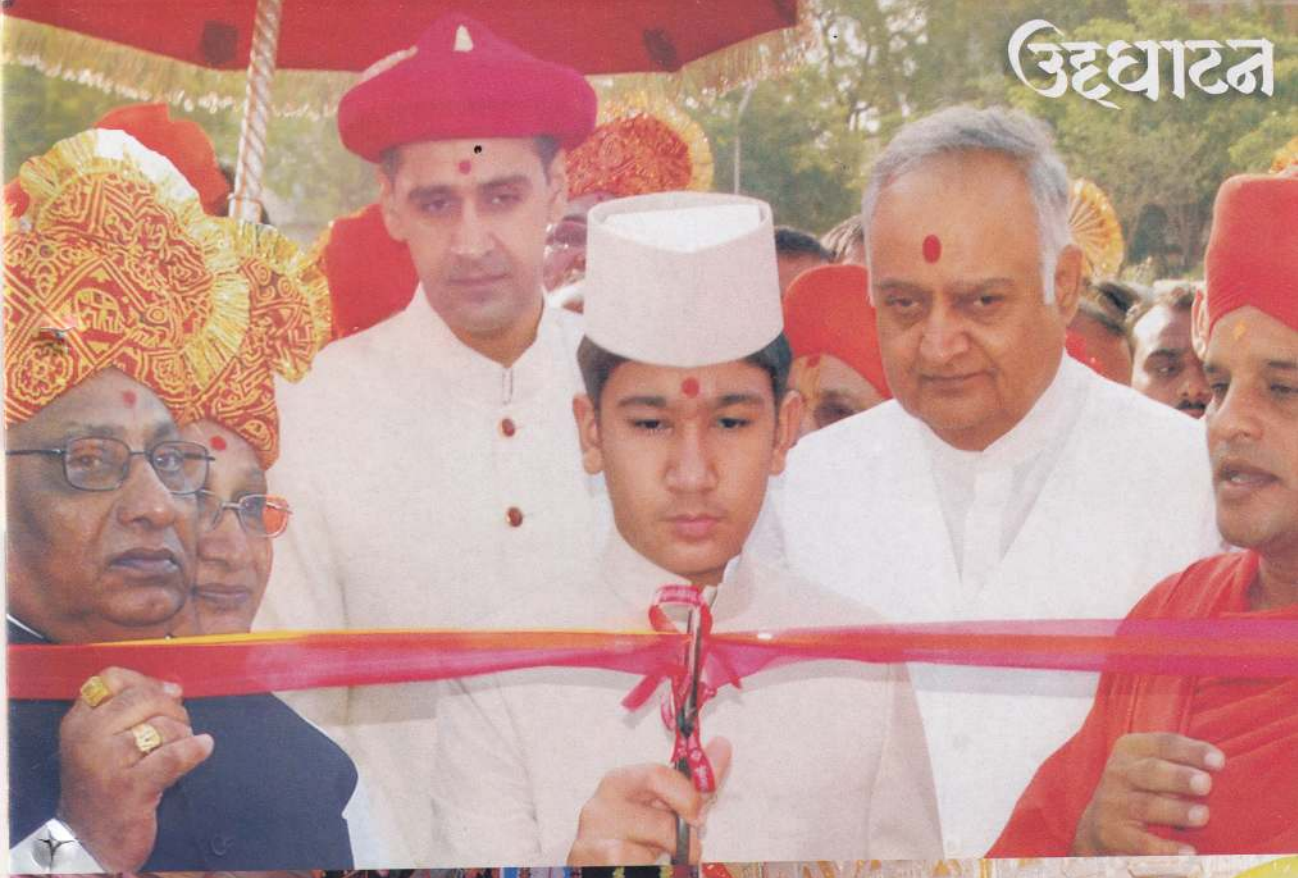
दो घोड़ा गाड़ी (बघी) थी जिस में प्रथम बघी पर
ोमद् सत्संगीभूषण के वक्ता संत दर्शन दे रहे थे । दूसरी
घी पर पोथीधारण किये हुये यजमान परिवार की बहने
ठी थीं । बघी के आगे - आगे ढोल-मजीरा-बैन्ड के
थ गीत-कीर्तन गाते हुये हरिभक्त स्वामिनारायण महामंत्र
ी धून बोलते चल रहे थे । साथ में संत भी चल रहे थे ।
घी के पीछे बहने धुन बोलते चल रही थी । प्रात: ७-३०
जे पोथीयात्रा महोत्सव स्थल के मुख्य द्वार पर पहुँची
स समय धर्मकुल का भी आगमन हो चुका था । मुख्य
प्रवेश द्वार पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों ने यजमान के साथ श्रीहरिकृष्ण महाराज का पूजन करने के बाद अपने पू. दादा एवं पू. पिताजी के साथ प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजने संत हरिभक्तों की उपस्थिति में मुख्य द्वार का उद्घाटन किया ।

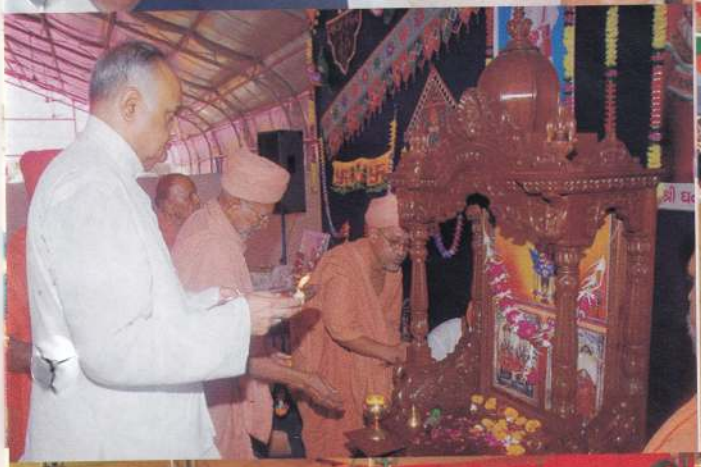
बाद में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों के साथ रहकर श्री नरनारायणदेव का पूजन-अर्चन-आरती करके भक्तों के दर्शनार्थ मंदिरो को खोल दिया ।

प्रात: ८-३० बजे श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप तीन स्थल पर अलग-अलग पधारे । प.पू. आचार्य महाराजश्री यज्ञशाला में पधार कर यज्ञ का आरंभ करवाया । हरियाग की संपूर्णविधि वेद पुरुष श्री रमेशभाई शुक्ल उमरेठवाले ने करायी थी । प.पू. लालजी महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन पर आधारित चित्रों के प्रदर्शन का उद्घाटन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री अखंडधून विभाग में पधारकर महाराज का स्मरण करते हुये सभी लोग धुन करेंगे ऐसा कहकर स्वयं महामंत्र बोलकर धुन का आरंभ करवाये थे । बाद में रात्रि-दिन एक उत्साह से हरिभक्त महामंत्र धुन करते रहे । प.पू. बड़े महाराजश्री प्रदर्शन विभाग को निहार कर बाद में प्रात: ८-४५ बजे तीनो अपर स्वरुप सभा मंडप में पधारे थे । बड़े संतो के साथ रहकर महोत्सव का दीप प्रागट्य किये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री व्यास पीठ का पूजन-आरती, लालजी महाराजश्री वचनामृत संहिता पाठ का पूजन-आरती एवं प.पू. बड़े महाराजश्री आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की आरती मुख्य यजमान को साथ रखकर किये थे ।

महोत्सव के शुभारंभ में तीनो अपर स्वरुपों ने महोत्सव की स्मृति रुप पुस्तक एवं केसेट का विमोचन किये थे । जिस में श्री चंद्रकांत मोहनलाल पाठक द्वारा लिखित पुस्तक आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री, अहमदाबाद मंदिर द्वारा तैयार किया गया आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का सचित्र (प्रदर्शन) अंग्रेजी, संस्कृत भाषा में प्रकाशित पुस्तक श्री वासुदेव

उद्घाटन



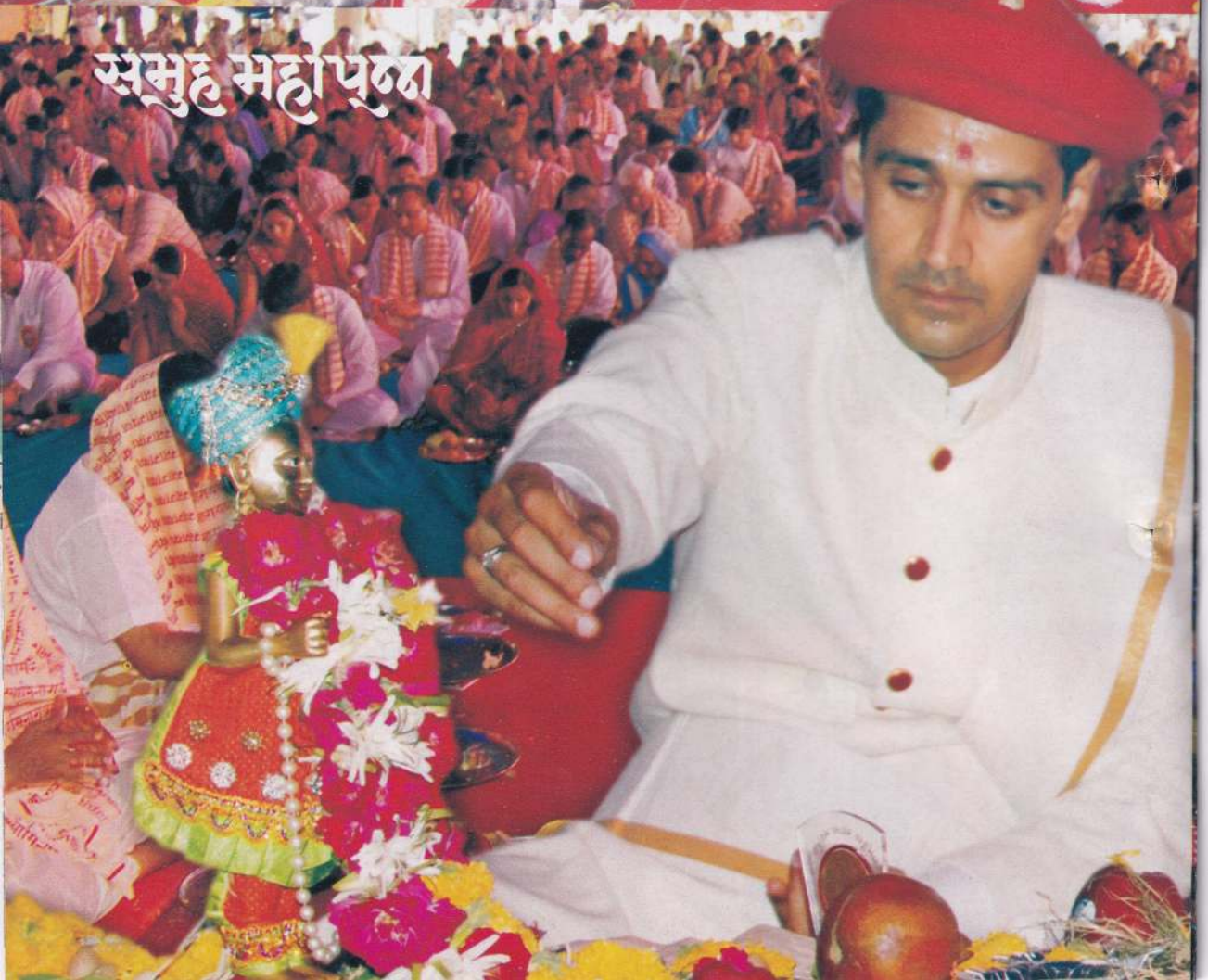












सामुह महापूजा

महाविष्णुयाग यज्ञ







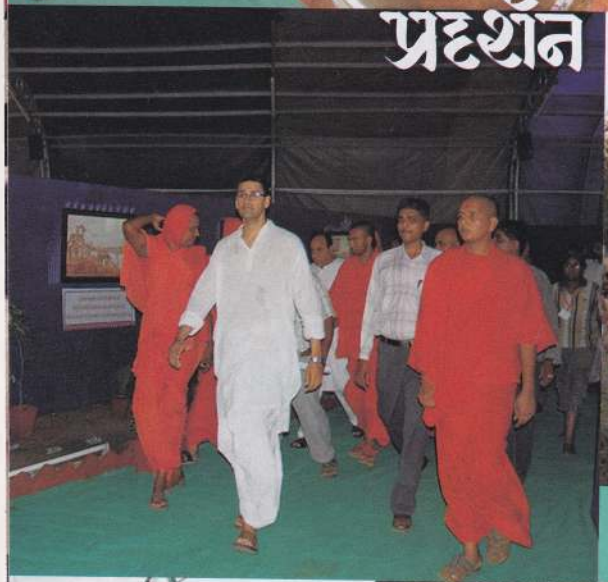






प्रदर्शन







નારાયણ સરોવરની પ્રતિકૃતિ



સાહિત્ય કેન્દ્ર



હરિભક્તોની ભીડ



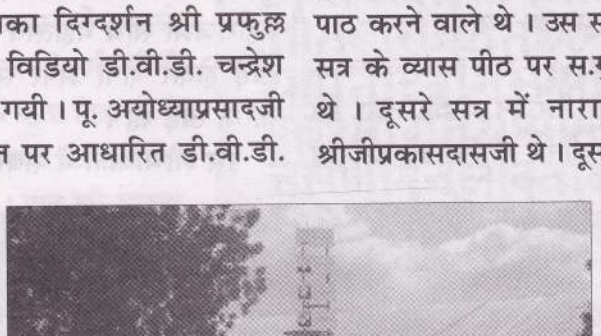
શ્રી સ્વામિનારાયણ માસિક કાર્યાલય







माहात्म्य, प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा रचित अवध किर्तनावली पुस्तक एवं एम.पी.-३ केसेट, प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा रचित कीर्तन सहजानंद सुखदायी तथा धर्मकुल वंदना प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री रचित कीर्तन एम.पी.-३ के सेट तथा श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी स्थलों का दर्शन अहमदाबाद प्रदर्शन, जिसका दिग्दर्शन श्री प्रफुल्ल खरसाणीने किया है । ऐसी विडियो डी.वी.डी. चन्द्रेश वरु जीरागढ द्वारा तैयार की गयी । पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन कवन पर आधारित डी.वी.डी. विडियो टेली फिल्म का विमोचन किया गया । इसके साथ इन के दाताओ का संमान भी किया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने कथा के आरंभ में आशीर्वचन देते हुये बताया कि इतने थोड़े समय में इतना बड़ा आयोजन संतो एवं हरिभक्तों के सहयोग से संभव हुआ है । सभी को धन्यवाद देते हुये कहा था कि हम सभी के महाराज तो स्वामिनारायण भगवान है । परंतु हमारे महाराज भी है और दादा भी हैं । सत्संग में हम महाराज कहते हैं लेकिन घर तो दादा ही कहते हैं । हमारे पिताजी भी दादा ही कहते थे, दादा की आरती किये ? दादा को भोग लगाये ? इस तरह वे कहते । श्रीजी महाराज के साथ आदि आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज भी हमारे दादा हैं । श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित आचार्य परंपरा में सर्वप्रथम उन्हीं को पसंद किये थे । वे स्वयं धर्म पालते और आश्रितों से धर्मपालन करवाते । उनके एक-एक जीवन प्रसंग प्रेरणादायी है । सच्चा भक्त उसे कहा जायेगा जो अपने जीवन को परंपरा के साथ जोड़े रखता है । उस समय हरिभक्तों का नाम हरिभक्तों की नामावली में एक लाख



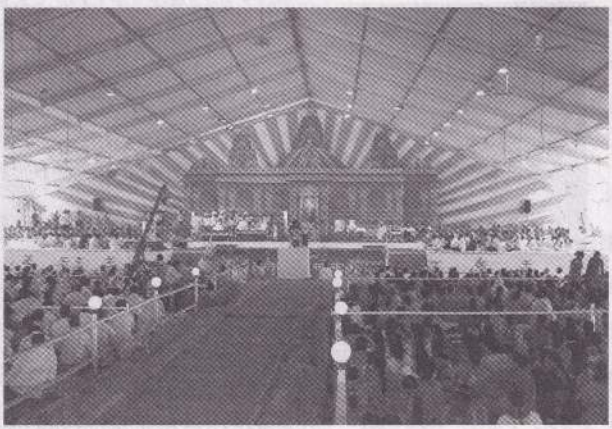
था । हम जिस सत्संग का सुख ले रहे हैं उसके मूल में पू दादा आदि आचार्यश्री ही है, जिन्हों ने रात-दिन एक करके सत्संग को मूलतक लेजाने का प्रयास किया है सर्वोपरि का यह महोत्सव सर्वोपरि हो ऐसी प्रार्थना ।

जिस स्टेज पर बैठकर ७५ संत, ५० भूदेव तथा ७ गृहस्थ हरिभक्त कुल मिलकर २०० वचनामृत संहित पाठ करने वाले थे । उस स्टेज पर प्रथम दिन के प्रथ सत्र के व्यास पीठ पर स.गु. शा. निर्गुणदासजी स्वाम थे । दूसरे सत्र में नारायणपुरा के महंत स्वाम श्रीजीप्रकासदासजी थे । दूसरे दिन के प्रथम सत्र के कथ वक्ता शा.स्व पुरुषोत्तमप्रकाशधासज (जेतलपुर) थे । द्वितीय दि के द्वितीय सत्र के वक्ता भु मंदिर के शा.स्व गोलोकविहारीदासजी थे तीसरे दिन प्रथम सत्र क वक्ता शा.स्व नारायणवल्लभदासजी थे सभी विद्वान संतो ने श्रीम सत्संगिभूषण की कथा अपनी समुधुर शैली में किये थे सभा मंडप तथा विश्राम मंडप दोनो में कुल २० जित एल.सी.डी. सेट रखा गया था । जिससे दूर-दूर तक कथ तथा स्टेज के प्रसंग का जीवंत प्रसारण हो रहा था । कथ में प्रत्येक प्रसंगानुसार वीडियो रेकोर्डींग हो रहा था इसके साथ इ.टी.वी. पर जीवंत प्रसारण किया जा र था । इसका लाभ गुणग्राहीजनता को मिल रहा था तीनो महाराजश्री को एक ही गदीपर बैठा देखकर सभ को खूब आनंद हो रहा जिसमें एक लाल पगड़ी वाल दूसरे टोपी वाले तीसरे पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज सुन्दर श्वेत वस्त्र धारण किये हुये थे । जिन्होंने इस स्वरू का दर्शन् किया उनके जीवन का कल्याण हो जायेगा

प्रथम दिन की कथा में प्रातः ११-१५ बजे घनश्याम महाराज का प्रागट्य हुआ । उस समय मुख

यजमान परिवार श्री घनश्याम महाराज को सोने के पालने में झुलाते हुये आरती उतारे थे । बाद में "धर्मघर आनंद भयो जय बोलो घनश्याम की....." इस वाद के नाद के साथ जन्मोत्सव संपन्न किया गया था । श्री नरनारायण युवक मंडल बापूनगर ने रास प्रस्तुत किया । सभाजनों के ऊपर पुष्पवर्षा की गयी थी । फटाका फोड़कर तथा गुब्बाड़े उड़ाकर आनंदोत्सव मनाया गया था ।

प्रथम दिन रात्रि में ९ बजे से १२ बजे तक गुजरात के सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री निरंजन पंड्या तथा श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के कीर्तन गायक श्री हसमुख पाटड़िया, जयेश सोनी, दिनेश वघासिया, पूरव पटेल, श्री विक्रम गढवी द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में भजन संध्या का कार्यक्रम किया गया था । इस कार्यक्रम के बीच में बापूनगर एप्रोच, हर्षद, कर्मशक्ति मंदिर के श्री नरनारायण युवक मंडल के युवानो द्वारा सुंदर गोपवेश में सौराष्ट्र की परंपरानुसार रास प्रस्तुत किया गया था । प्रत्येक कलाकारों का पू. लालजी महाराजश्री के हाथो सन्मान किया गया था ।



ता. २-६-०९ के दिन प्रातः ८-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री ने सुंदर महापूजा का शुभारंभ करवाया । जिस में मुख्य यजमानश्री के साथ दूसरे करीब ३५०० जितने यजमान महापूजा का दिव्य लाभ लिये थे । दूसरे दिन प्रातः काल से ही मानव मेदिनी से स्वामिनारायण नगर भर गया था । विशाल सभा मंडप श्रोताजनों से भरजाने पर बाहर के प्रांगण में लोग बैठकर कथा सुन रहे थे ।

सायंकाल ५ से ७ तक प.पू. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान श्री स्वामिनारायण बाग से महोत्सव स्थल श्री स्वामिनारायण नगर तक अद्‌भुत शोभायात्रा निकली । जिसमें १ कि.मी. तक यह काफिला रहा, जिसमें भक्तजन समा नहीं पा रहे थे । ५ बजे प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री भक्तों की भीड़ पर अमिट दृष्टि करते हुये एक शोभायमान रथ पर विराजमान हुये । प.पू. बड़े महाराजश्री सीधे महोत्सव स्थल पर पहुँचे । पार्षद पीछे खड़े होकर दोनो अपर स्वरुपों पर रंगीन छत्री धारण करके खड़े रहे ।

इस शोभायात्रा में सबसे पहले गणपतिजी का रथ । दूसरे क्रम में श्री हरिकृष्ण महाराज तीसरे नंबर में सचित्र सदाचार रुपी शिक्षापत्री के श्लोक लिखे हुये थे । इस रथपर सत्संगी लाल ध्वजा लिये हुये बैठे थे । चौथे नंबर में नाव के आकार का स्वरुप बनाया गया था । जिसमें श्री सहजानंद स्वामी विराजमान थे । जिनके चरणों में संत तथा पार्षद विराजमान थे । पांचवे नंबर के फ्लोट में राष्ट्र प्रेम प्रदर्शित करते हुये राष्ट्र ध्वज, अशोकचक्र इत्यादि थे । जिसपर रखा गया था । म्युझिक बैंड के साथ हरिभक्त एवं बालक धुन करते जा रहे थे । छठे नम्बर के फ्लोट में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी पीठ स्थान के आचार्यो की परंपरा की तस्वीरे एवं आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज को मुख्य स्थान पर विराजमान किया गया था । इस में संत विरजामान थे । सातवें नं के फ्लोट में निर्व्यसनीय जीवन जीने के सूत्र लिखे हुये थे तथा चित्र बनाये गये थे । इस रथ पर संत-हरिभक्त बैठे हुये थे । आठवे नंम्बर के रथ पर भरतखंड के उपास्य देव श्री नरनारायणदेव विराजमान थे । इस पर श्री नरनारायणदेव को साफा बांधा हुआ था

साथ में धुन मंडल के लोग धुन करते चल रहे थे। नवमें नम्बर के रथ पर वृक्षो की रक्षा तथा पर्यावरण की रक्षा हेतु चित्र बनाये गये थे। जिस में प.पू. बड़े महाराजश्री के वृक्षारोपण की तस्वीर लगाई गई थी। दशवें नंम्बर के रथ पर अग्रगण संतो के साथ इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान थे। इग्यारहवें नम्बर के रथ पर अग्रगण्य संत, महंत, ब्रह्माचारी तथा साथ में ऊंचे स्थान पर श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुप दर्शन दे रहे थे। प.पू. महाराजश्री के रथ के आगे तथा प्रत्येक रथ के बीच में युवान अपने हाथ में अनेक कलरवाले पताका लेकर चल रहे थे। बापूनगर का उत्सवी मंडल रास-कीर्तन करते हुये सभी का मन आकृष्ट कर रहा था। ढोल-नगारे तथा म्युझिक पार्टी इस तरह तीन मंडली चल रही थी। प.पू. महाराजश्री के रथ के पीछे थोड़े समय के लिये पूज्या गादीवाला का रथ भी शोभायात्रा में सामिल था। उनके रथ के पीछे गरीब १०० से १२५ जितनी बालिकाओं मस्तक पर श्रीफल युक्त कलश लेकर शोभायात्रा की शोभा को बढा रही थीं। उसके पीछे सत्संगी महिलायें धून करते हुये चल रहीं थीं। मार्ग के दोनो तरफ नगरजन खड़े होकर श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुपों का दर्शन कर रहे थे। दर्शनार्थी कोई हाथ जोड़ के प्रणाम करे, कोई माला पहनावे, कोई काजू, बदाम, द्राक्ष इत्यादि नैवेद्य अर्पण करता सभी को आत्मदृष्टि से देखकर प्रसादरुप में सभी को अपने हाथों से देते थे। शहर के अनेको आबाल नरनारी श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुपों को अपने मोबाईल केमेरा में उतारकर बाद में अपने हृदय में उतार रहे थे।

करशे दर्शनने गुण लेशे रे,
वळी पोच्य प्रमाणे कांसई देशे रे।
श्रध्धा सहित सेवा करे सोई रे,
वळी राजी थाशे एने जोई रे ॥
एवो जन जे जे जगमांय रे,
तेनी करवी मारे सहाय रे ॥

पुरुषोत्तम प्रकाश में श्रीजी महाराज का यह बचन है। अनंत जीवात्मा उसका लाभ ले सके इसके लिये आयोजन मात्र मूल मंदिर द्वारा ही होता है।

अनेक सेवा भावी मंडल तथा व्यक्ति मार्ग में यत्र-तत्र शीतल जल, रसना, सरबत से शोभायात्रा में सामिल भक्तों की सेवा कर रहे थे। शोभायात्रा स्वामिनारायण बाग से निकल कर वाया गुरुकुल, सुभाष चौक, थलतेज, चौराहा होकर सायंकाल ७ बजे महोत्सव स्थल पर पहुंची थी। फटाका एवं आतिशबाजी से सारावातारण गूंज उठा था। युवान आज इतने आनंद में थे कि शोभायात्रा की विश्रान्ति के बाद भी कीर्तन, धून, भजन, नाच-गान कर ही रहे थे।

रात्रि में ९ बजे से १२ बजे तक सुप्रसिद्ध गायक श्री हेमंत चौहाण तथा अन्य सायकों ने गीतगाकर सभी को आनंद से भर दिया था। धर्मकुल के पार्षद शैलेश भगत ने प.पू. अवधप्रसादजी महारजश्री रचित एक सुंदर कीर्तन वाद्ययंत्रो के साथ गाया था। प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी कलाकारों का सन्मान किया था।

ता. ३-६-०९ को प्रातः ५ बजे श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती के बाद यजमान द्वारा श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक पूजन किया गया था। प्रातः ६-०० से ६-३० तक श्री नरनारायण देव का महा अभिषेक अहमदाबाद एवं वडताल के दोनो आचार्य श्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से संपन्न हुआ था। बाद में अहमदाबाद गादी के प.पू. आचार्य महाराजश्री महोत्सव स्थल पर पधारे थे। प्रातः ८-३० बजे श्री नरनारायणदेव आदि देवों को छप्पन भोग का अन्नकूट तथा श्रृंगार आरती वडताल के गादी के आचार्यश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथो संपन्न हुई थी।

प्रात ९-१५ बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से हरियाग की पूर्णाहुति की गयी थी। श्रीहरि के चारो अपर स्वरुप स्टे पर विराजमान थे। प.पू. गादीवालाजी, प.पू. ब गादीवालाजी, पू. लालीराजाजी के साथ समग्र धर्मकु तीनो दिन तक कथा श्रवण करने पधारते तथा श्रोताओ को अपने सानिध्य में कथा वक्ता को पुष्पहार पहनाव

स्व आसन पर विराजमान होकर दर्शन का सुख देते । संत श्वेत पुष्पमाला पहनाते । प.पू. लालजी महाराजश्री साक्षात् श्री घनश्याम के स्वरुप तथा प.पू. महाराजश्री स्वयं श्रीहरि के स्वरुप में दर्शन देते । पारायण के प्रत्येक वक्ता की विशेषता यह थी कि वे श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा का रसपान कराते हुये श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के प्रसंग को अवश्य कहते थे ।

प्रातः १० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हस्तों से श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण की पूर्णाहुति की गयी थी ।

इसके साथ ही आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज की २०० वी जन्म जयंती प्रसंग का पूजन-अर्चन महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के साथ वयोवृद्ध संत तथा मुख्य यजमान ने किया था । प्रातः १०-१५ बजे समग्र धर्मकुल का पूजन-अर्चन मुख्य यजमानश्री गंगाराम भाई एम. पटेलने किया था । इस प्रसंग पर उपस्थित चान्दुराजा के स्वशुर द्विवेदी साहब का सन्मान अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने किया था। प.पू. केशप्रसादजी महाराजश्री का सन्मान पू. महाराजश्री के हस्तों से किया गया ।

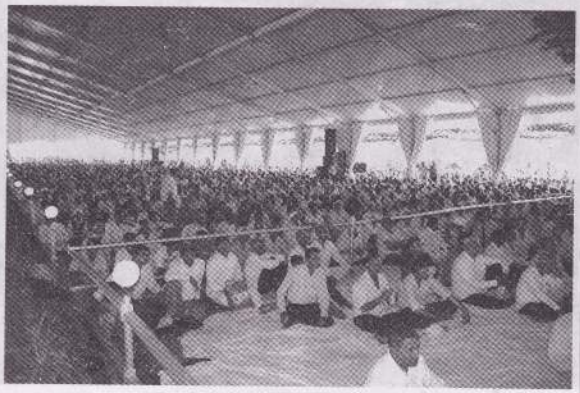
महोत्सव में तीनो दिन तक आमंत्रित धार्मिक, सामाजिक, राजकिय, सरकारी, उद्योगपति, सायन्टीक महेमान पधारते रहे । अंतिम दिन गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी भी पधारे थे। संप्रदाय के नियमानुसार सभी अभिषेक महानुभावों का तीनो श्रीहरि के अपर स्वरुपों द्वारा यथोचित संमान किया गया था । इसके साथ महानुभावो का प्रसंगोचित वक्तव्य भी रखा गया था ।

इसी तरह संप्रदाय के भुज, मूली, अहमदाबाद के श्री मंदिर धोलका, धोलेरा, वडताल, जूनागढ, गढपुर, लपुर, छपैया, सुरेन्द्रनगर, गांधीनगर, ईडर, माणसा, साणा, चराडवा, सोकली, विरमगाँव, वाली, बामरोली, लाल, वडनगर, उनावा, मथुरा, कलोल, बद्रिनारायण, वावाडा, लींबडी, हिंमतनगर, हणवद, इलाहाबाद, द्वारा, हरिद्वार, जमियतपुरा, टोरडा, प्रांतीज, लालोडा, धरियावद, नेपाल, जयदेव, धांगध्रा इत्यादि अनेक स्थानो से तीन दिन तक हजारों ब्रह्मनिष्ठ संत महंत पधारे थे । जिनका संमान श्रीहरि के अपर स्वरुप द्वारा किया गया था ।

इसके साथ अग्रगण्य विद्वान संत, महंतो की प्रासंगिक वाणी का लाभ मिला था । संप्रदाय की साहित्यिक सेवा में जिनका उत्तम योगदान ऐसे विद्वान संत स.गु.शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) ने आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के विशेष प्रसंगो का जैसे धर्मकुल वंदना क्या है ? इत्यादि का विवेचन करके सभा को मंत्रमुग्ध कर दिये थे । इसी तरह जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदाजीने संप्रदाय की निष्ठा सिंह समान है ऐसा उन्होंने बताया था। और यह भी बताया कि जिस सभा में महाराजश्री की आज्ञा न हो वहाँ पर स्वामिनारायण भगवान भी उपस्थित नहीं होते । जो व्यवस्था श्रीजी महाराज ने किया हो उसका मूल पाताल तक होना सम्भव है । इसी तरह वडताल के मुख्य को. बापू स्वामी धर्मप्रियादसजी ने बताया की श्रीजी महाराज ने इस संप्रदाय में दो गादी की उस गद्दी पर जो बैठे वही आचार्यश्री हो सकते हैं । यह महोत्सव जिसके आर्थिक योगदान से सफल हो सका ऐसे मुख्य यजमान श्री नारायणभाई जादवा (खेताणी परिवार वर्तमान में विल्सडन - लंडन) । महोत्सव के सहयजमान, पारायण के मुख्य यजमान अ.नि. चंचलबा अंबालाल माधवदास परिवार, श्रीयाग के मुख्य यजमान श्री विशरामभाई लालजीभाई गोपाणी पींडोरिया, माधापर (कच्छ), श्री नरनारायणदेव आदि देवों के महाभिषेक अन्नकूट के यजमान श्री लक्ष्मणभाई कन्स्ट्रकशन लि. (नाइरोबी) सिसल्स, यु.के. तथा इन्डिया, राघवाणी परिवार धर्मकुल परिवार के मुख्य यजमान श्री गंगारामभाई महादेवभाई, धर्मकुल पूजन के सहयजमान स.गु. पुराणी हरिदासजी तथा स्वा. स्वान्पतितपावनदासजी के महाप्रसाद, दूसरेदिन के महाप्रसाद तथा तीसरे दिन के फलाहार के यजमान क्रमशः श्री रामदास अमथाभाई पटेल परिवार, श्री चीमनभाई सोमाभाई पटेल परिवार

(आणंदवाला), अक्षरनिवासीनी कंकुबहन कचरादास एवं अ.नि. कचरदास शंकरदास पटेल परिवार सहित अन्य प० विभागों में सैंकडो यजमान तथा सहयजमानों की तीन दिन तक श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों ने पुष्पहार, शाल तथा मूर्ति भेंट में देकर सन्मान करके आशीर्वाद दिया था। अन्यदाताओं का भी सन्मान किया गया था। जिसमें श्री स्वामिनारायण नगर भूमि के शेठ श्री गोविंदभाई सी. पटेल (गणेश हाउसींग प्रा.लि.) अहमदाबाद के मुख्य स्थान पर थे।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक विभाग द्वारा लीजाती परीक्षा में अलग-अलग केन्द्रो में से प्रथम तीन क्रमांक में पास होने वाले कुल १६० बालकों को भी प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों तथा महिला वर्ग में पू. श्रीराजा के हाथों से इनाम वितरण किया गया था। प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने २ बाल मित्रों को भी इस प्रसंग पर सन्मान किया था। कालुपुर मंदिर का जीर्णोद्धार, बहुमाली पार्किंग, म.प्र. के बामरोली मंदिर का तथा नारायणपुरा गाँव में प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित हनुमानजी मंदिर का जीर्णोद्धार करने के लिये जिनदाताओं ने बड़ी रकम दान करने के लिये कहा था, उनका बहुमान किया गया था।



अहमदाबाद मंदिर स्कीम कमेटी के सदस्य मुख्य कारभारीश्री, श्री नरसिंहभाई वी. नसीत तथा श्री प्रविणभाई वी. नसीत इत्यादि अग्रगण्य बिल्डर्स, ओडिटर्स तथा महोत्सवकी वीडियो रेकोर्डींग करने वाले अलग-अलग सेवा करने वाले सभी का सन्मान किया गया था। इस महोत्सव में अहमदाबाद के ग्राम्य विस्तार, शहर विस्तार - नारायणपुरा, नारायणघाट, वाडज, घाटलोडिया, जीवराजपार्क, बापूनगर, एप्रोच, हर्षदकोलोनी, मेघाणीनगर, सोला, कलोल, विहार, मोखासण, श्रीनगर, कालियाणा, भाउपुरा, कनीपुर, वावोल, भाल इत्यादि गाँवो के उपरांत करीब ९० गाँवो के भक्तों ने सेवा की थी।

इस महोत्सव स्थळ पर श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय में अलग-अलग दाताओं ने २००/- रुपये के सौजन्य से केवल ३००/- लवाजम भरकर कुल ५०० जितने लोग आजीवन सदस्य बनकर उदाहरण का कार्य किये हैं। महोत्सव स्थल पर प्रथम दो दिन तक रक्तदान शिबिर का आयोजन किया गया था। श्रीहरिने शिक्षापत्री में जो आज्ञा की है उसी को ध्यान में रखकर रक्तदाताओं ने रक्तदान किया था। इस महोत्सव में तीन दिन तक लाखों महेमान आये थे। जिन्हें स्वामिनारायण संप्रदाय के सिद्धांतो का तथा धर्मवंशी आचार्य परंपरा का ज्ञान प्राप्त हुआ था। आनेवाले सभी भोजन में लड्डू, मैसुर, जलेबी, भजिया, खमण, शाग, दाल, भात, पूड़ी, रोटी, छाश इत्यादि को ग्रहण किये थे। सायंकाल खिचड़ी-कढी इत्यादि हल्का भोजन तथा एकादशी की तरह फलाहारियों को फलाहार की उत्तम व्यवस्था थी। उत्सव में एक ही साथ इतने लोगों को भोजन खिलाना भगवान स्वामिनारायण के सिवाय संभव हीं नहीं है।

इस महोत्सव में तीन दिन तक कोटेश्वर गुरुकुल के शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने सभा संचालन किया था। इस उत्सव के अंत में हरि के चारो अपर स्वरुपों ने भक्तों को हार्दिक आशीर्वचन दिया था। श्रीजी महाराज जिस तरह छोटे व्यक्ति पर प्रसन्न होते थे ठीक इसी तरह इस सभा में उपस्थित श्रीहरि के चारो अपर स्वरुप प्रसन्न थे। इसका प्रमाण यह है कि पू. महाराजश्री दिन में दो बजे स्वयं

सेवकों को अलग से बुलाकर आशीर्वाद दिये थे । इसी तरह पू. गादीवालाजी भी कार्य सेविकाओं को अलग से बुलाकर सभी को आशीर्वाद दी थी । सभा विसर्जन के बाद भी सभी के चले जाने पर स्वयं गये थे । इसी तरह इस महोत्सव में प्रत्येक दर्शनार्थी के मानस पर चिरः स्मरणीय छाप पड़े विना रही नहीं । पारायण के पांच विद्वान संतो के मुख से १५ सुवाक्य जो हृदयंगम किया गया है उसे लिखकर विराम लूंगा ।

● प.पू. आचार्य महाराजश्री जब चलते हों तो उसमें चरण स्पर्श के लिये भीड़ नहीं करनी चाहिये । जब वे बैंठे तभी चरण स्पर्श करना चाहिये । जब अपने गुरुदेव बैठ जांय तभी बैठना चाहिये । जब वे खड़े हों तब बैठे नहीं रहना चाहिये ।



● शिक्षापत्री वांचने के बाद विचार करना चाहिये कि इस श्लोक की आज्ञा का पालन होता है या नहीं, मनन, आचरण एवं निदिध्यासन करना चाहिये ।

● शिक्षापत्री में व्यवसन का श्लोक वांचकर पुनः व्यसन करें तो शिक्षापत्री वांचने का प्रयोजन क्या ?

● आचरण में आवे तो वांचने की सार्थकता है, आचरण में न आवे तो केवल पढना ही कहा जायेगा ।

● भगवान जिस पर प्रसन्न हो उस पर सारी दुनियां प्रसन्न रहती है । एक-एक मनुष्य को प्रसन्न करने जांय तो कितनों को प्रसन्न करना पड़ेगा ।

● भगवान हाथ दिये हों तो दान अवश्य कीजियेगा । किसी का छिनना नहीं । दान अवश्य करना । किसी का रक्षण हो तो, वह हाथ हैं । जिस हाथ से किसी का छीनलिया जाय वह हाथ नहीं ।

● बिच्छु की पूंछ में जहर होता है, इसी तरह प्रेम की पूंछ में क्रोध होती है । प्रेम में पागल हो सकते हैं । प्रेम विस्फोट का कारण है, इसमें भाषा बिगड़ जाती है ।

● मोक्ष चाहिये तो धर्मवंशी का द्वार मिलेगा । लेकिन अन्यत्र धक्का मुक्की ही मिलेगी ।

● भगवान जिस वस्तु का स्पर्श किये हों वह अन्यत्र दुर्लभ है, इन वस्तुओं का अमूल्य कींमत है ।

● कलियुग में भक्त के घर भगवान जाते हैं । अन्य युग में भक्त को भगवान के पास जाना पड़ता है । स्वामिनारायण भगवान के भक्त जहाँ-जहाँ रहते थे वहाँ-वहाँ स्वयं चलकर जाते थे ।

● पूजा तथा पुस्तक दोनों की आवश्यकता है । पुस्तक का अनुसंधान न हो तो सत्संग की व्यवस्था का ख्याल नहीं होगा साम्प्रदायिक नीति-नियम का ख्याल नहीं आयेगा । जिसके जीवन में पुस्तक है वह अध्ययन करके सब कुछ सीख सकता है, जिसके जीवन में पुस्तक नहीं है वह सत्संग से गिर सकता है । पूजा ही पुस्तक हैं तथा पुस्तक ही पूजा है ।

● बजार में से बहुत सारी वस्तुयें ले आते हैं लेकिन सत्शास्त्र नहीं ले आते । घर में सत्शास्त्रों की एक लाइब्रेरी होनी ही चाहिये ।

● भगवान का होकर रहना चाहिये । भगवान की आज्ञा में रहने से सुखप्राप्त होता है । जो जगत के पदार्थ की चाहना करता है वह भगवान के पास मांगता है ।

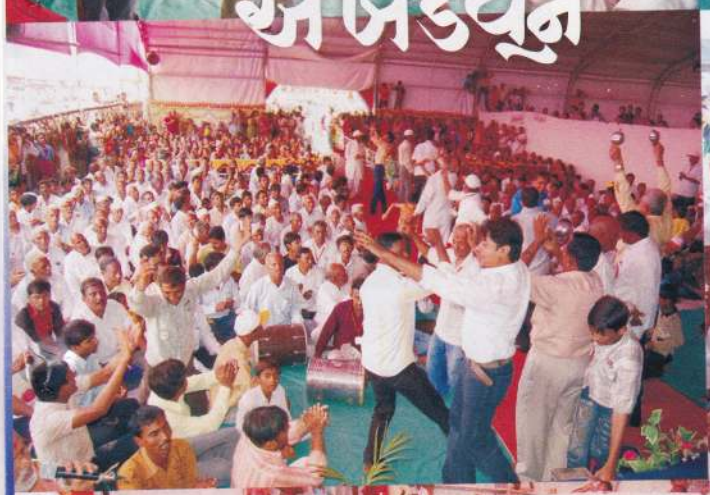
● जो दूसरे को सन्मान देता है, उसके जीवन में चारो तरफ सन्मान मिलता रहता है ।

● स्वामिनारायण संप्रदाय मुक्ति का संप्रदाय है । स्वामिनारायण भगवान मुक्ति को सरल कर दिये है । सहज कर दिये है ।






अखंडधून









SARANG




SARANG

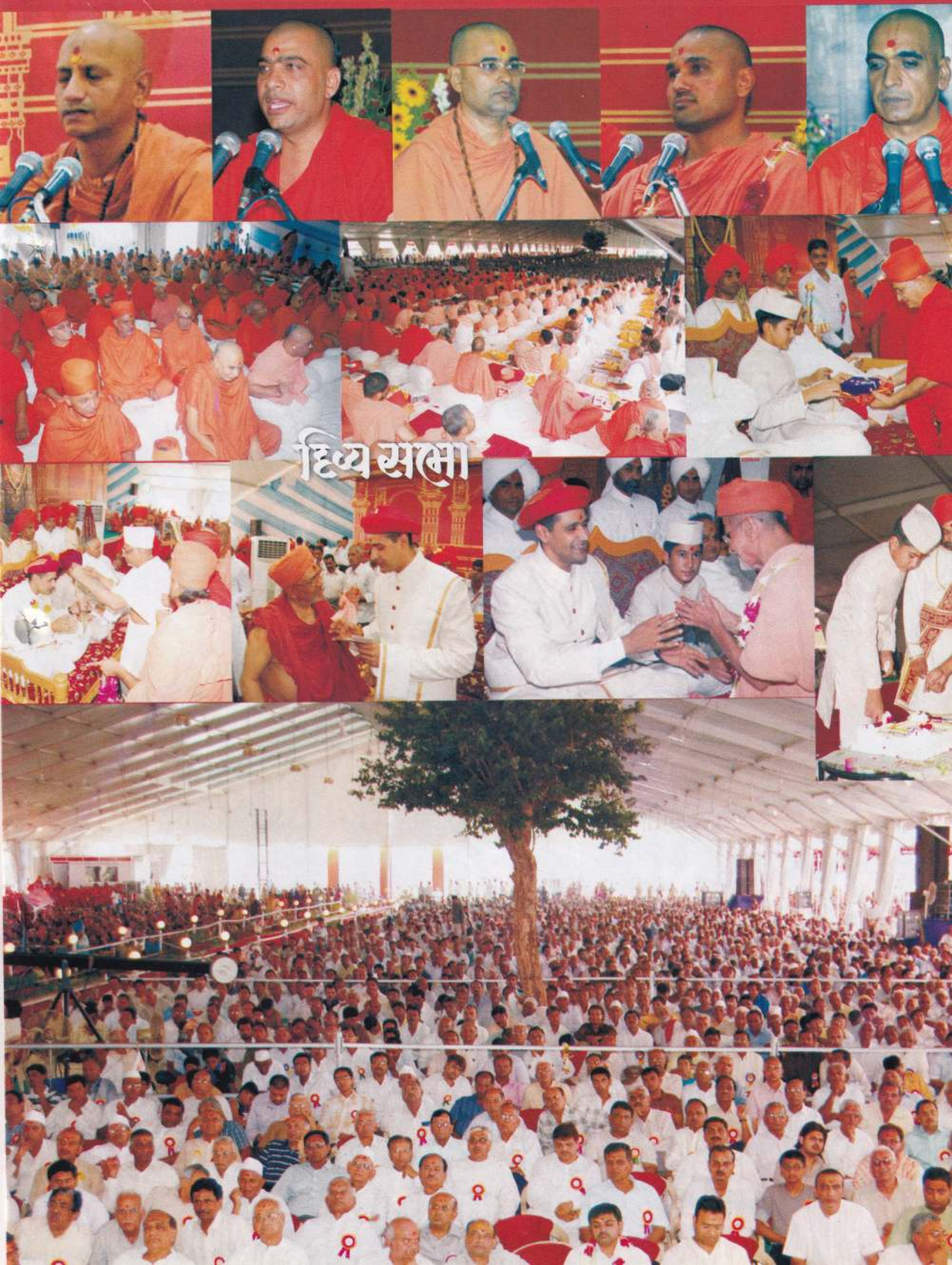



SARANG


दिव्य सभा






दिव्य सभा


પ.પૂ.આદિ આચાર્યશ્રી અયોધ્યાપ્રસા
ધર્મકુળ
શોભા
આયોજક : શ્રી સ્વામિનારાયણ



:જી મહારાજશ્રી જન્મ દ્વિશતાબ્દી

:ના મહોત્સવ

યાત્રા

મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ-૧.

भोजनशाळा




















भोजनशाळा



सांस्कृतिक कार्यक्रम



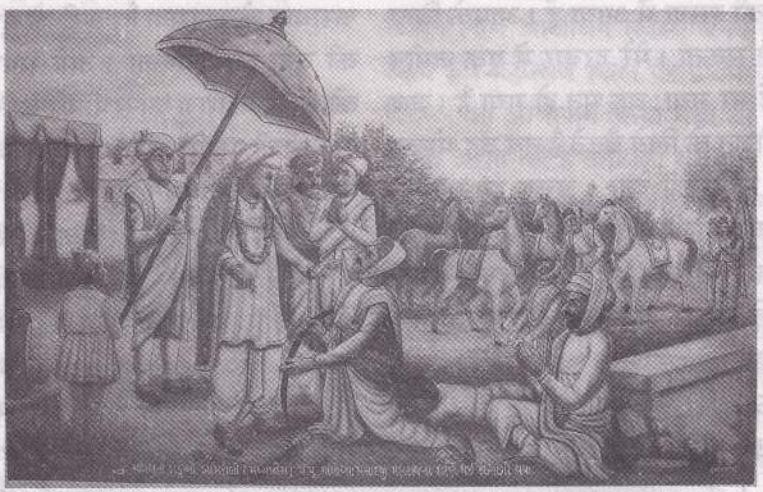




आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के अद्‌भुत चमत्कार

- कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने छपैया में जन्म लेकर कई अद्‌भुत लीलाएँ की । सुवासीनी भाभी को कांटा निकालने के बहाने चरण में सोलह चिन्ह दिखाए । भाभी इन चिन्हों को देखकर आश्चर्यचकित हो गई । परमात्मा के चरण में ही ये चिन्ह होते है । इसलिये भाभीने कहा आपके चरण में १६ चिन्ह है तो आप परमात्मा का स्वरुप है । आप बहुत बड़े संप्रदाय की स्थापना करेंगे । तब घनश्याम महाराजने वचन दिया की हम जिस संप्रदाय की स्थापना करेंगे उसकी गद्दी हम आपके पुत्र को देंगे । फिर घनश्याम महाराजजी माता-पिता को स्वधाम गमन करवाने के पश्चात वनविचरण कर गुजरात में आये और स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना की, कई जगह विचरण करके कई मुमुक्षु जीवात्मा को मोक्ष का सुख प्रदान किया और नौ मंदिर का निर्माण किया । शिक्षापत्री, वनचामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण आदि ग्रंथो की रचना की तथा अंत में श्री स्वामिनारायण भगवानने गादी के दो विभाग किये उत्तर विभाग के आचार्य के रुप में प.पू.ध.धु. आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज को रखा जो नरनारायणदेव गादी के आचार्य के रुप में स्थापना करके सभी संत-हरिभक्तों को आज्ञा की कि आज से आपलोग अयोध्याप्रसादजी की आज्ञा में रहियेगा ।

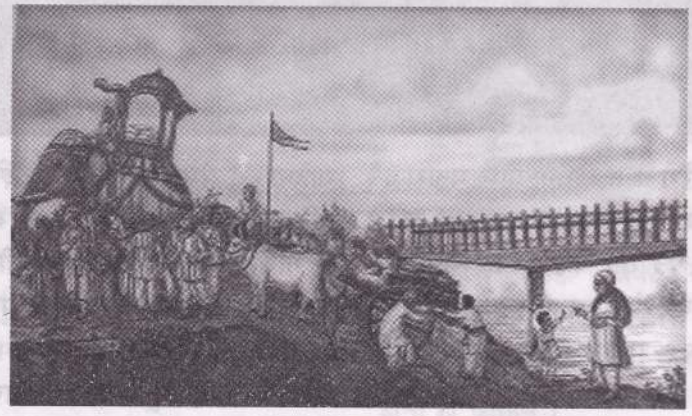


अयोध्याप्रासदजी महाराज को वचन दिया कि यह उत्तर विभाग भले सूखा हो लेकिन हम आप के साथ सदा रहेंगे । यह वचन मानकर पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज अहमदाबाद, मूली कच्छ प्रदेश में खूब विचरण करके सत्संग को प्रतिष्ठित किया । गाँव-गाँव घर-घर पदार्पण करके श्री स्वामिनारायण भगवान की सर्वोपरि महिमा को समझाया । उसमें विशेष रुप से मूली मंदिर के प्रति बहुत प्रेम था जिससे मूली मंदिर में रुकते और बहु के गांवों में विचरण करते । मूली मंदिर में उनकी माताजी सुवासीनी भाभी ने अपने आभूषण मंदिर के कार्य हेतु स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी को दे दी थी । वह आभूषण आज भी मंदिर में है । पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजने मूली देश में अनेक अद्‌भुत चमत्कार दिखाया है । जो यहाँ प्रस्तु कर रहा हूँ ।

मूली के राजा रामाभाई को पुत्र नहीं था । स.गु. ब्रह्मानं स्वामी के वचन से दो पुत्र हुये । उसमें वखतसिंहजी साथ अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के साथ खूब प्रेम । वे महाराजश्री की खूब सेवा करते । जिससे महाराजश्री वखतसिंह से कहा कि आप की आयु चार महीने अ शेष है । ठाकुरजी की थाल, आचार्यश्री, संत, हरिभ तो खूब भोजन कराया । इसके बाद चार महीने पूरे

गये । वचन के अनुसार श्रीजी महराज को साथ लेकर अयोध्याप्रसादजी महाराज विमान में बैठाकर वखतसिंहको लेने आये वह सभी ने देखा ..... (तद्रुपानंद स्वामीनी वार्ता-२५)

सायला के राजा केसरीसिंहजी मूली में अयोध्याप्रसाजी के दर्शनार्थ आये और प्रार्थना किये कि महाराज हमें बहुत दुःख है, किसी भी तरह इस समस्या का समाधान नहीं हो रहा है । अब मैं आपकी शरण में आया हूँ । आपके विना मेरा दुःख दूर नहीं हो सकता । मेरे दरबार में एक जमीन के झगड़े में एकभाई मर गया, वह भूत हो गया है । जब हम लोग दरबारमें भोजन के लिये बैठते है तब वह भोजन कीणा हो जाता है । सोने नहीं देता । अच्छा हम आपके यहाँ आयेंगे । अयोध्याप्रसाजी महाराज दरबार में पधारे, रात्रि में रुके । अब वह भूत रात्रि में चिल्लाने लगा मैं जल रहा हूँ । आप इतने बड़े धर्मगुरु होकर हमें क्यों दुःख दे रहे हैं । अब हम कहाँ जायेंगे, ऐसा कहकर रोने लगा । आप मुझे रास्ता बताइये । महाराजश्री ने कहा बद्रिकाश्रम में जाओ वहाँ मैं तुम्हारा मोक्ष करुँगा । यह सुनकर वह नीचे गिरा । तेज काच प्रकाश सभी को दिखाई दिया । महाराज के चरण में गिरकर रोया और महाराज ने उस राजा का दुःख दूर कर दिया और उस प्रेत का मोक्ष कर दिया । (तद्रुपानंद स्वामीनी वार्ता-३२)



मूली में अयोध्याप्रसादजी महाराज ने गणपति चौथ ; दिन गणपति उत्सव करने को कहा । उत्सव खूब मधाम से मनाया गया । इस उत्सव में सभी ठक्कर को का हुई कि पुरुषोत्तमनारायण की संतान होकर गणपति ा पूजन क्यों करवा रहे हैं । उसी समय गणपतिजी की र्ति में से तेज निकला उस तेज में सभी को श्रीजी महाराज का दर्शन हुआ, जिसकी स्वयं आचार्य महाराजश्री पूजन कर रहे थे । इस दिव्यरुप का सभी को दर्शन हुआ । (तद्रुपानंद स्वामीनी वार्ता-६४)

मूली में एकवार अयोध्याप्रसादजी महाराज भाद्र शुक्ल-२ के दिन यज्ञोपवित विधिकरने के लिये नदी के किनारे गये थे । उस समय तावी के आखाभाई तथा सुसवाव के विभाजी इत्यादि को शंका हुई कि ये पुरुषोत्तम नारायण के उपासक है, उन्हीं के पुत्र है । उन्हे तर्पण करने की क्या आवश्यकता । उसी समय अनेक ऋषिमुनियों को श्रीजी महाराज का सभी को दर्शन हुआ और महाराजश्री को श्रीजी महाराज स्वयं यज्ञोपवित धारण करा रहे हैं ऐसा सभी को दर्शन हुआ ।

दरबार सताजी का सेवक वशराम बिमार पड़ गया । इस वात की खबर अयोध्याप्रसादजी महाराज को हुई, इसलिये पू. महाराजश्री उसको देखने चल दिये, अभी बीच में ही थे कि समाचार मिला वह शरीर छोड़ दिया । फिर भी महाराजश्री वहाँ गये । सभी ने कहा अब इसे स्पर्श मत कीजिये महाराजश्रीने कहा यह मरा नहीं है, इसे गर्मी चढ गई है । इसलिये दहीं लाओ, महाराजने उसे दहीं पिलाया और वह बैठ गया । महाराज के चरण पर गिर पड़ा, सभी दरबार आश्चर्य चकित रह गये । और कहने लगे कि ये साक्षात् श्रीजी महाराज के स्वरुप है ।

अहमदाबाद के नागर ब्राह्मण बापूजी एवं लक्ष्मणराव मूली में अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के दर्शनार्थ आये । बापूजी खूब विमार पड़ गये । महाराजश्री उन्हें देखने गये और कहने लगे कि अब आपकी अंतिम स्थिति है, आप यहाँ शरीर छोड़ना चाहते है या अहमदाबाद में । बापूने कहा जैसी आपकी इच्छा । ठीक है मैं श्रीजी महाराज को

साथ लेकर धाम में लेजाने के लिये आयेंगे । उसी समय श्रीजी महाराज वहाँ पधारते हैं और कहते हैं कि चलो बापूजी हम लेने आये हैं । वर्तमान में पू. आचार्य महाराजश्री के वचन को पूरा करने के लिये हम यहाँ पधारे हैं । बापूने अपनी पत्नी से कहा मेरी पेटी लेआओ मैं अयोध्याप्रसाजी महाराज को चांदी का कड़ा देना चाहता हूँ । बाद में महाराज ने प्रत्यक्ष सभी को दर्शन देकर बापू ब्राह्मण को अपने साथ अक्षरधाममें ले गये । (तद्रुपानंद स्वामीनी वार्ता-६९)

इस तरह अनेक चमत्कार आदि आचार्य महाराजश्रीने किया है । वे बावन दिन तक खाये-पिये विना समाधि में रहकर लोगो के दुःख को दूर किये हैं । अनेक मुमुक्षु जीवात्माओं को मोक्ष भागी बनाया है । ऐसे समर्थ श्री नरनारायणदेव के प्रथम आचार्य महाराजश्री थे । जिनके २०० वर्ष पूर्ण होते ही द्विशताब्दी जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री को इस उत्सव को मनाने का संकल्प हुआ था । जो प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यह उत्सव संपन्न किया गया । थोड़े समय में ता. १-६-०९ से ३-६-०९ तक बड़ी भव्यता के साथ तीन दिन तक उत्सव मनाया गया था । जिस में तीन दिन तक कथा तीन दिन तक यज्ञ इत्यादि हुआ । यह उत्सव सदियों तक याद दिलाने वाला होगा । इसमें सभा मंडप की रचना, कथा के पूर्व विद्वान वक्ता द्वारा कथाश्रवण, संत हरिभक्तों का योग सन्मान, श्रीहरियाग में ५६१ कुंडी की रचना, विद्वान पंडितो द्वारा शास्त्रोक्त विधिपूर्वक पूजन, अयोध्याप्रसादजी महाराज के लीला चरित्रों का प्रदर्शन । कलात्मक मुख्य प्रवेश द्वार, श्री नरनारायणदेव का कलात्मक मंदिर का दर्शन । अखंड महामंत्र की धुन भजन-भोजन की उत्तम व्यवस्था । संप्रदाय में सर्व प्रथम इस प्रकार की उत्तम ऐतिहासिक व्यवस्था । प्रत्येक संत, हरिभक्त, वी.आई.पी., एन.आर.आई. सभी के लिये उत्तम व्यवस्था प्रतिदिन प्रातः नास्ता, दोपहर में ११ से १२ बजे तक भोजन की व्यवस्था । सायंकाल चाय-पानी की अलग अलग व्यवस्था । चारो तरफ ठन्डी छाछ एवं ठन्डे जल की व्यवस्था की गयी थी । इतनी गरमी में भी एकदम शीतल मनोरम वातावरण का दृश्य तैयार किया गया था । रहने की उत्तम व्यवस्था, होटल, बंगला, भाड़े का लेकर उचित व्यवस्था की थी । किसी प्रकार कहीं कोई कमी दिखाई नहीं दी । जो जिसे आवश्यकता थी वह उसे उसी समय मिल जाता था । कोई खर्च में कमी नहीं गलत खर्च नहीं । सभी के मन में आनंद । संत-हरिभक्तों के मुख से एक ही वात निकलती थी कि इस तरह का उत्सव आज तक कभी नहीं हुआ था । यह सभी के अन्तःकरण का उद्‌गार था । मेरी दृष्टि में धर्मकुल वंदना महोत्सव अभी तक जितने उत्सव हुये



उन सभी में सर्वोपरि उत्सव था । इस उत्सव का आनंद कुछ अलग ही था । इसका यश प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की देखरेख तथा अहमदाबाद के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की एवं केमेटी के सदस्यों की उदार भावना एवं संतो का सहयोग, इस के साथ ही छोटे-बड़े हरिभक्तों की तन, मन, धन से सेवा तथा अथक परिश्रम इस उत्सव भव्यातिभव्य बनाने में सहायक रहा है । भगवान स्वामिनारायण की पूर्ण कृपा से यह उत्सव संपन्न हो सका । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वीं जन्म जयंती धर्मकुल वंदना महोत्सव प्रसंग पर अंतकरण पूर्वक प्रणाम करता हूँ, उनका आशीर्वाद एवं प्रेम मुझ पर उतरे ऐसी अभ्यर्थना के साथ ।

हृदय में करुणा अपार

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला



आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज १७ वर्ष की उम्र में श्री नरनारायणदेव देश अहमदाबाद पीठ स्थान के आचार्य बने थे । वे श्रीहरि के पुत्र थे । त्रिगुणात्मक माया से पराभव को प्राप्त करे वैसे नहीं थे । आचार्य के कर्तव्य के प्रति जागरुक थे । श्रीजी महाराज की आज्ञा के अनुसार निरंजनदासजी स्वामी को साथ में रखकर देव मंदिरो की देखभाल रखते ।

प्रवृत्तिमय होने के बावजूद अपने इष्टदेव की सेवा पूजा आराधना में जो समय लगता वह कभी कम नहीं किया । आत्मनिष्ठा और स्थित प्रज्ञता ये दो गुण उनमें दृढ थे । वे अंतरमुखी थे, प्रबल ध्यानयोगी थे । श्रीहरि के साथ अखंड अनुवृत्ति में रहते । सत्संग के प्रचार और प्रसार के लिए श्रीजी महाराज की तरह गाँव-गाँव विचरण करके अनेक मुमुक्षुजनों को श्रीहरि तथा श्रीहरि के सत्संग को समझाया है । जहाँ-जहाँ दृष्टि करते वहाँ उनका अलौकिक भाव रहता । तीनो अवस्था में श्रीहरि के साक्षात्कार को प्राप्त संत जैसे गुणवाले थे । आर्थिक रुप से गरीब हरिभक्त हो या धनिक हो उसमें कोई पक्षपात करते नहीं । सत्संग में विचरण केलिए निकलते गांव में फिरते, सत्संगियों के घर घर पदार्पण करते तब किसी का घर नहीं छोड़ते । गरीब हो या धनिक सभी को समान भाव से मिलते । दृष्टि मात्र से सभी को अपना बना देते । सौम्य तथा सरल जीवन था । वे स्पष्ट रुप से मानते थे कि जीवन संयम से संदर लगता है । उनमें रजोगुण का अभाव था । श्वेत पगडी, श्वेत उत्तरीयवस्त्र एवं अधोवस्त्र नित्य पहनते थे । ब्रह्मानदं स्वामी ने एक कीर्तन में गाया है कि

कान तारो कंठ कह्यामां न आवे,
हां रे ए तो कौस्तुभमणिने शोभावे ।

इसी प्रकार से अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के दिव्य व्यक्तित्व के कारण उनका परिवेश भी सुंदर लगता ।

गाँव जाते तब जो जो हरिभक्त आते उन सभी से आत्मीयता से बात करते । उनकी कौटुंबिक कुशलता शुभ समाचार पूछते । जिसे खुद जानते हो वैसे हरिभक्त न आये हो तो दूसरे हरिभक्त से उनके कुशलक्षेम जानते । सत्संगी मात्र मेरा आत्मीयजन है ऐसी भावना रखते । कोई दुःख की बात करे तो रस पूर्वक सुनते । और योग्य मार्गदर्शन भी देते ।

आदि आचार्यश्री अपने वर्तन में किसी प्रकार बड़ाई दिखाते नहीं । सामान्य मनुष्य की तरह वर्तन करते । इससे सत्संगी उनसे बात करने में संकोच का अनुभव नहीं करते थे । एक महान संप्रदान के धर्मधुरंधर अपनी बात सुनते इससे आश्रित अनुयायियों को बहुत आनंद होता । ऐसा लगता की श्रीजी महाराज उनके गांव के हैं । सामान्य

स्थिति का सत्संगी हो तो भी उनका आदर करते । उनके द्वारा बोले दो शब्द सुख तथा दुःख में रहे आश्रितों को आध्यात्मिक बल प्रदान करते ।

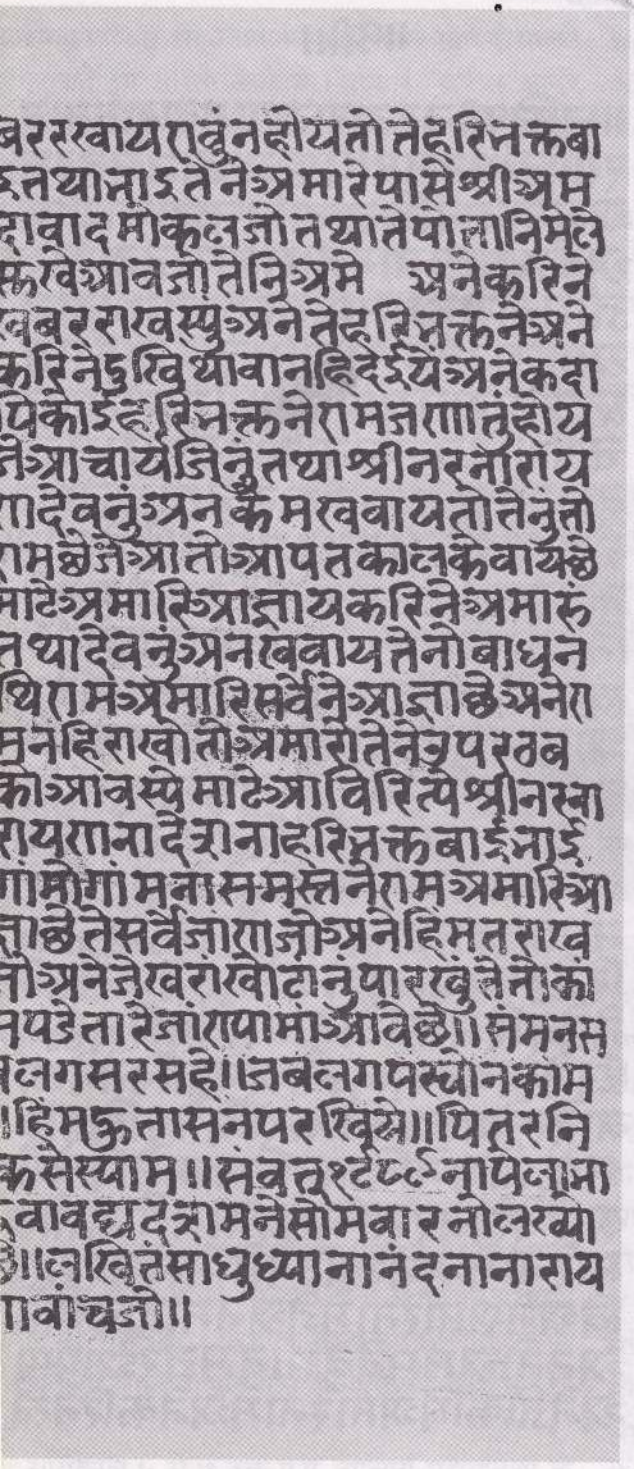
अयोध्याप्रसादजी महाराज की करुणा समुद्र की तरह छलकती रहती । उनकी उदारता का गुण तंरगो की तरह प्रबल था । श्रीहरिने स्वमुख से कहाँ है कि हम हमारा देवत्व आचार्य में रख रहे हैं । अयोध्याप्रसादजी महाराज संपूर्ण श्रीजी महाराज जैसे गुण रखते थे । वे दाता दिल के थे और उदारता का भाव और करुणा का समन्वय उनमें स्पष्ट रुप से दिखता था । पात्र की पात्रता भी देखते नहीं । जीव प्राणीमात्र पर उनकी दृष्टि पड़े बस वही काफी हैं । संप्रदाय के धर्मधुरंधर के रुप में सत्संगियों की देखभाल कैसे करनी चाहिये यह जानकर देखभाल में सदैव प्रयत्नशील रहते । केवल धर्म ही नहीं किन्तु देश काल से विपरीत स्थिति चल रही हो तब मानव धर्म ही मुख्य धर्म बन जाता है । और उसका रक्षण करना और आयात काल में दुखी भक्तजनो की देखभाल कैसे करनी उसके लिए हंमेशा चिंनतनशील रहते । इसके कुछ सबूत हमारे पास प्रत्यक्षरुप से मौजुद है ।

संवत १८८९ में देश काल की स्थिति अच्छी नहीं थी । चारो तरफ अकाल पड़ा था । ऐसे समय में अहमदाबाद देश के सभी सत्संगी भाई-बहन की रक्षा के लिए उन्होंने तत्काल एक आज्ञा पत्र प्रत्येक गाँव में भेजा था । प्रसादी का वह आज्ञा पत्र आज भी प.पू.ध.धु. श्री तेजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री के पास हैं । उसका अभ्यास करने से पता चला आदि आचार्यश्री का हृदय करुणा का सागर था । इस लेख के साथ अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की फोटो कोपी



॥श्री॥

॥स्वस्तिश्रीनरनारायणा महाराजनाच
रणारविंदसमीपश्रीनस्थानसेहरश्री
ग्रमुदावादथिलखवावितेग्राचार्यश्री
ग्रयोध्याप्रसादजीमहाराजहरिकृश्न
जीमहाराजजतग्रमाराश्रीनरनारा
यणानादेशनसत्संगिबाईभाईसम
स्तग्रमाराजयश्रीस्वामीनारायणाना
चरणो॥बिजुंलखवाकारणाएमछेजो
हमणांग्रोदेशकालकुवराणाछेतेमाटे
बाईभाईसमस्तधर्मांरहिनेश्रीजी
महाराजनेभजजोनेश्रीजिमहाराजने
निरंतरसंभारजोग्रनेग्रापणासर्वनि
खबरतेश्रीजिमहाराजराखसेबिजु
ग्रापणासत्संगमांकोईहरिभक्तग्रने
कुरिनेदुखिथातोहोयएमजणातो
होयतोतेणांमनाहरिभक्तेपोचवा
लाहोयतेतेसर्वमलिनेजेपोतपोता
नागांममांबाईभाईहरिभक्तग्रनेक
रिनेदुखिथातोहोयतोतेनिग्रनेकरि
नेतेहरिभक्तनिबिजासर्वहरिभक्तम
लिनेखबरराखजोग्रनेदुखितेनेथा
वादेसोमांग्रनेजोकदापितेदुखिहरि
भक्तहोयनेबिजाहरिभक्तेनिग्रने
करिनेखबरराखिसकेएमनोयतोग्र
मारेनामेग्रनमांहिनेतेनिखबरराख
विग्रनेग्रमारेनामेजेग्रनमांहुहस्येते
ग्रनजोग्रमेसर्वदासबभजरेग्रापणे
ग्रनेजोकोपिग्रमारेनामेग्रनेकरिनेख

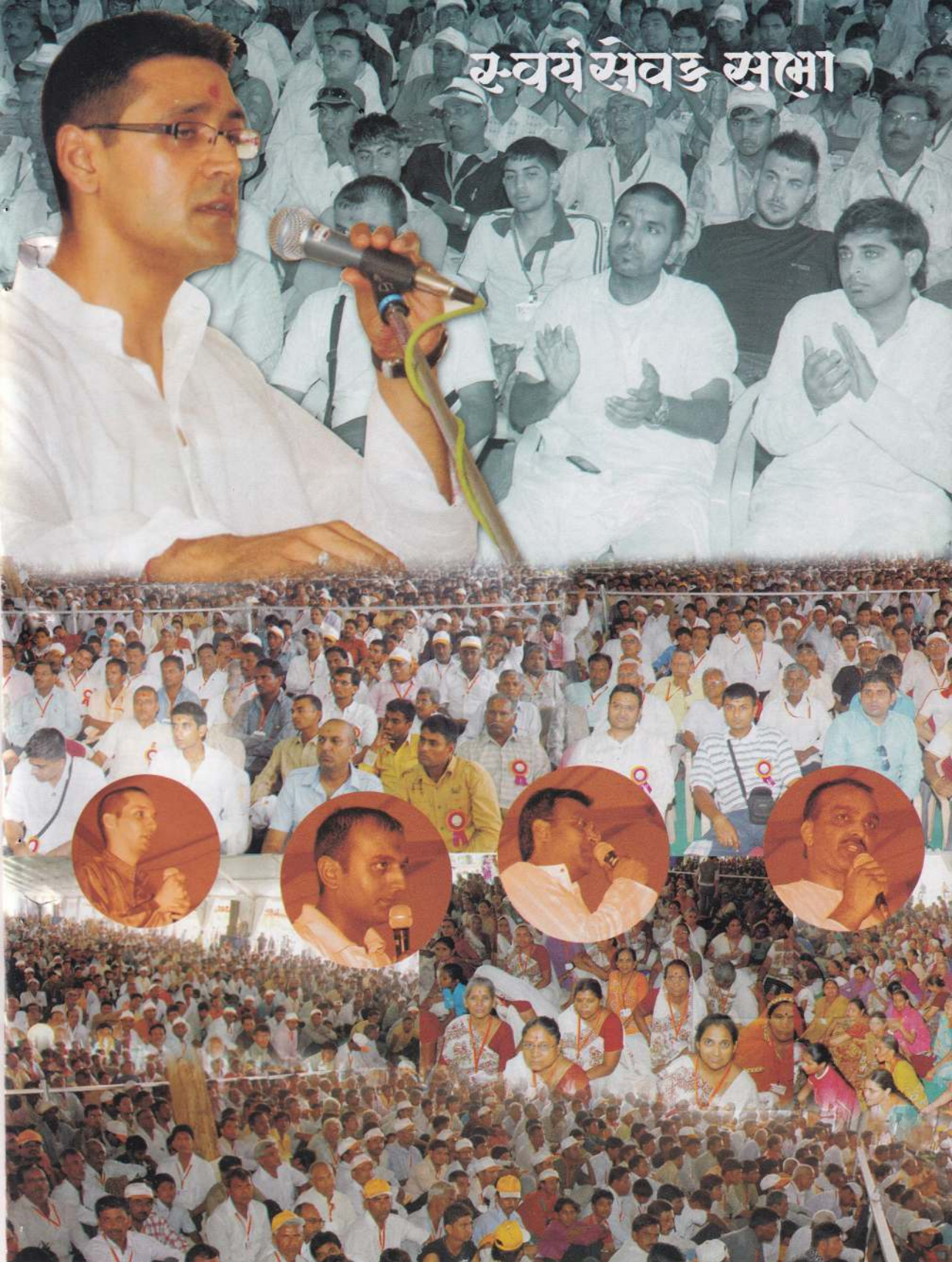

जररखवायएवुंनहोयतोतेहरिभक्तबा
इतथानाइतेनेत्रमारेपासेश्रीअयम
द्यावादमोकलजोतथातेपोतानिमेले
कखवआवजोतेनिअमे अनेकरिने
खबररखवस्युअनेतेहरिभक्तनेअने
करिनेदुखिथावानहिदेईयेअनेकदा
पिकोईहरिभक्तनेरामजणातहोय
नेआचार्यजिनुंतथाश्रीनरनारोय
णदेवनुंअनकमरखवायतोतेनुंतो
रामछेनेआतोआपतकालकेवायछे
माटेअमारिआज्ञायकरिनेअमारु
तथादेवनुंअनखवायतेनोबाधन
थिरामअमारिसर्वेनेआज्ञाछेअनेरा
मनहिराखोतोअमारोतेनेनुपरथव
कोआवस्येमाटेआविरित्येश्रीनरना
रायणनादेनानाहरिभक्तबाईभाई
गामोगामनासमस्तनेरामअमारिआ
ज्ञाछेतेसर्वेजणाजोअनेहिमतराख
नोअनेजेखरराखोटानुयारखुतेनोको
नपडेतारेजोरायामाआवेछे।।समनस
लगसरसहे।।जबलगपरधानकाम
हिमकुतासनपरबिसे।।पितरनि
कसेस्याम।।सवत्तरदर्शनापेलाभा
वावद्यदरामनेसोमवारनोलखव्या
।।लखितेसाधुध्यानानंदनानारोय
णवांचजो।।

है। ऐसे काल में कुछ नियम छोड के जीवन की रक्षा किस प्रकार करनी वही धर्म बन जाता है। जब हम उनकी यह सोच को समझते है तो उन्हें दंडवत करने का मन करता है। (१) स्वस्ति श्री नरनारायणदेव के चरणारविंद समीप पश्चिम स्थान शहर श्री अहमदाबाद से आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज हरिकृष्ण महाराज हमारे देश के सत्संगी भाई-बहन हमारा जय स्वामिनारायण पढना (२) दूसरा लिखने का कारण यह है कि अभी का काल बहुत खराब है इसलिए भाई-बहन समस्त धर्म में रहकर श्रीजी महाराज का भजन करना और श्रीजी महाराज की निरंतर याद करना हम सब की खबर श्रीजी महाराज रखेंगे।

पत्र के प्रथम चरण में भाई बहनों को जय स्वामिनारायण कह कर दूसरे चरण में कठिन काल में धर्म का आचरण और श्रीजी महाराज तो हमारे पिता है और सर्वोपरि है। उनकी निरंतर याद करना हम सब की देखभाल श्रीजी महाराज रखेंगे ऐसा दृढ विश्वास दिलाते हैं। (३) और हमरे सत्संग में कोई हरिभक्त कोई अन्न से दुःखी होता हो तो दूसरे सभी हरिभक्त मिलकर अपने अपने गाँव में भाई-बहन हरिभक्त मिलकर उनकी देखभाल करना और उन्हे दुःखी नहीं होने देना।

पत्र के तीसरे चरण में दुःखी हरिभक्तों की देखभाल करना ऐसा समझाया है। (४) ..... तथा अगर कदापि वे दुःखी हरिभक्त हो और दूसरे हरिभक्त हो उसके अन्न खबर न रख सके तो हमरे नाम से अन्न की जानकारी रखनी। और अगर हमारे नाम से अन्न की खबर न रखपाये तो उस हरिभक्त बाई या भाई उन्हें हमारे पास अहमदाबाद भेजना .... उसके अन्न की व्यवस्था हम करेंगे। तथा उस हरिभक्त को दुःखी नहीं होने देंगे .....।

पत्र के इस मध्य-चरण में श्री अयोध्याप्रसादजी


स्वयंसेवक सभा





શ્રી સ્વામિનારાયણ નગર ખાતે પૂર્વ તૈયારી નિહાળતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી અને પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી



ધર્મકુળના મહેમાનો



સાંખ્યયોગી બહેનો



પૂ.ગાદીવાળાશ્રીના દર્શન માટેની કતાર





रोशनीथी झळाहळतं मंदिर



વિધાનસભાના અધ્યક્ષ શ્રી અશોકભાઈ ભટ્ટ



શ્રી જયનારાયણ વ્યાસ તથા શ્રી ફકીરભાઈ વાઘેલા



આમંત્રિત મહેમાનો

ો સિધ્ધાર્થ પટેલ, શ્રી અર્જુન મોઢવાડીયા તથા શ્રી સુરેન્દ્ર બક્ષી
ાને અન્ય કોંગ્રેસના મહાનુભાવો



ગુજરાત પોલીસ મહાનિર્દેશક
શ્રી ખંડવાવાલા સાહેબ



ગણેશ કોર્પોરેશનવાળા શ્રી ગોવિંદભાઈ પટેલ





महाराजकी दु:खी जन मात्र के प्रति करुणा दिखाई देती है । स्वयं तो संप्रदाय के मुखिया-धर्मधुरंधर है इसीलिये हमारे नाम से भी अन्न मांगकर दु:खी भक्तजनों को सहायता करनी चाहिये । ऐसे दयालु महाराजश्री को साष्टांग दंडवत् अपने-आप हो जाता है । श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने अपने व्यक्तिगत हिसाब में से तथा मंदिर की उपार्जित धन राशी में से करना है ऐसा निर्देश दिया ।

संप्रदाय ऐसे चक्रवर्ती सम्राट जैसे आचार्यश्रीओं से सुशोभित है । मूल संप्रदाय के तथा अहमदाबाद पीठ स्थान के छडे आाच्यश्री प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का व्यक्तित्व तथा उनकी जीवन शैली सत्संगी लोगो के प्रति उनकी आत्मीयता तथा उदारता - सम्पूर्ण गुण उनके दादाजी श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के जैसे ही हैं । जिसका हम सबको हर बार अनुभव हुआ है ।

(५) ..... अगर कदापि कोई हरिभक्त को ऐसा जानने को मिले कि हरिभक्त को आचार्यजी तथा श्री नरनारायणदेव का अन्न कैसे खा सकते हैं ? परंतु हमारी आज्ञानुसार हमारा तथा देव का अन्न खाने में कोई विरोध नहीं है खास करके आपातकालीन परिस्थितियों में । ऐसी हमारी सभी को आज्ञा है । तथा ऐसा नहीं किया गया तो हमें नाराजगी होगी ।

पत्र के अंतिम चरण में संप्रदाय के मुखियाश्री आज्ञा देकर - कुछ नियमों मे से विचलित होकर उसका उल्लंघन नहीं करना चाहिये ।

महेसाणा में कुशलबाई (कड़वीबाई) के अति स्नेह से वश होकर प्रात: सभी संत-भक्तों को ठन्डी खीचडी खाने की जिस प्रकार श्रीहरिने आज्ञा की वह भी बिना दातून-पानी या प्रात: की पूजा-अर्जना के । उसी प्रकार आपातकालीन समय में भक्तजन की रक्षा ही प्रथम धर्म है ।

यह प्रसादी का पत्र प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के पास है जो दिव्य संकल्प स्वरुप श्री स्वामिनारायण म्युझियम से सभी मुमुक्षु आगंतुकों के दर्शन हेतु प्रस्तुत किया जायेगा ।

इस बात को ध्यान में लेना चाहिये कि प.पू. बड़े महाराजश्री के दर्शन हेतु प्रस्तुत किया जायेगा ।

इस बात को ध्यान में लेना चाहिये कि प.पू.बड़े महाराजश्री की श्रीहरि की परंपरागत प्रसादी की सभी वस्तुओं को श्री स्वामिनारायण म्युझियम में प्रस्तुत करने का जो दिव्य संकल्प किया गया है वह व्यर्थ नहीं है। ऐसे प्रसादी के पत्र पढ़ने को मिले ऐसे लाभ को तो पाना ही चाहिए । तथा उसके द्वारा हमारे आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के करुणा युक्त गुणो की पहचान हो जाये तो हमें धर्मवंशी आचार्यश्री तथा उनकी दिव्य परंपरा का भाव समझ में आ जायेगा ।

धर्मवंशी आचार्यश्री स्वयं गृहस्थ है । इसीलिये गृहस्थ के धर्मो को निभाना भी कठिन है । उसे लेकर हमारे मूल संप्रदाय के वफादार समाश्रितों को भी अगर आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल के प्रति लेशमात्र भी अंतर में भाव रह जायेतो वह स्वयं ही समाप्त हो जाता है ।

यही एक मात्र हेतु श्री स्वामिनारायण म्युझियम की स्थापना करने का है । श्रीहरि की प्रसादी की दिव्य वस्तुए जगत के समक्ष दर्शन के हेतु रखने के लिए हम अपना छोटे से छोटा भी योगदान देकर श्रीहरि की प्रसन्नता को प्राप्त कर पायेगें । फूल नहीं तो फूल की पंखडी ही अर्पण करके श्री स्वामिनारायण म्युझियम को सुवासित बना दे ।

सूचना : श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रस्तुत प्रसादी के पत्रों की फोटो कोपी - समग्र सत्संगियों को दर्शन के हेतु देने के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के अत्यंत आभारी है ।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का जीवन कवन प्रदर्शन आधारित

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण नगर में प्रवेश करते ही दाहिनी तरफ आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का सचित्र प्रदर्शन था । प्रत्येक चित्रों के नीचे उस विषय में लिखा हुआ था । तथा अपने मंदिर ने उस विषय में एक पुस्तक भी प्रकाशित किया है । श्री स्वामिनारायण मासिक के प्रत्येक सदस्य महोत्सव का दर्शन नहीं कर पाये हो तथा किसी सदस्य के पास यह पुस्तक भी नहीं होतो उसके घर पर यह मासिक पत्रिका अवश्य जायेगी । उस के माध्यम से हमारे आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन प्रसंगो की कुछ विशेष स्मृति रहे इस हेतु से यह लेख लिख रहा हूँ ।

(१) माता सुवासिनीबाई की गोद में किलकित आनंदवाले श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ।

(२) अक्षराधिपति श्री स्वामिनारायण भगवान का नाम करण संस्कार किया वे मार्कंडेय ऋषिने ही प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का भी नाम करण संस्कार किया था ।

(३) चरण में पद्म का चिन्ह देखते हुए धन्यता का अनुभव करती हुयी सुसावसिनीबाई । श्रीहरि के दाहिने चरण में पद्म का चिह्न है । उसी प्रकार भगवान के इस पुत्र के चरण में भी पद्म का चिह्न है । पद्म का चिह्न देखकर सुवासिनीबाई पुत्र के भविष्य का विचार करती है ।

(४) आठवें वर्ष अयोध्या में विधिपूर्वक यज्ञोपवीत संस्कार किया गया था ।

(५) बाल्यावस्था में पिताश्री रामप्रतापजी महाराजश्री की सेवा-श्रीहरिने भी बालावस्था में पिताश्री धर्मदेव की सेवा की । यहाँ प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ने श्रीहरि द्वारा शिक्षापत्री में की हुई आज्ञा का यथार्थ पालन किया ।

(६) विद्वान पंडित के पास चार वेद, पुराण सहित संस्कृत भाषा के अभ्यास में जिस प्रकार श्रीहरि को रुचि थी उसी प्रकार से किया था ।

(७) बचपन में स्वरचित कीर्तन पू. पिताश्री रामप्रतापजी महाराज को श्रवण करके सुना रहे हैं । बचपन से ही स्वयं एक अच्छे कवि तथा श्रीहरि के प्रति भक्ति प्रेम भाव युक्त तथा साथ ही साथ पिताश्री को भी भजन-कीर्तन सुनाकर प्रसन्न कर रहे हैं ।

(८) पू. माता सुवासिनीबाई अपने प्रिय पुत्र को भोजन खिला रही है । श्रीहरि को सुवासिनीबाई ने भोजन खिलाया था वहीं सुवासिनीबाईने प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को भी भोजन करवाया था ।

(९) श्री हनुमानगढी अयोध्या में प्रत्येक दिन दर्शन तथा कथा श्रवण करने जाते थे । तथा एकाग्र चित्त से कथा श्रवण करते थे । श्रीहरिने भी अयोध्या में यह क्रम चालू रखा था ।

(१०) चौल संस्कार विधि छपैया गाँव में पवित्र नारायण सरोवर के किनारे जिस प्रकार श्रीहरि का चौल संस्कार किया गया था उसी विधिपूर्वक छपैया गांव में हुआ था ।

(११) पू. रामप्रतापजी महाराज तथा श्री धर्मकुल के साथ छपैया में लोया शाकोत्सव प्रसंग पर पधारे थे तथा श्रीहरि को मिलकर दर्शन भी किये । श्रीहरि के साथ सत्संग में प्रथम मिलाप श्रीहरि का प्रथम दर्शन ।

(१२) वडताल गाँव में भगवान श्री स्वामिनारायण दोनो गद्दी अहमदाबाद (उत्तर विभाग) तथा वडताल (दक्षिण विभाग) के दोनो धर्मवंशी आचार्य की स्थापना कर रहे हैं । अज्ञानी मनुष्यों को गलत मार्ग दिखाने वाले है विमुख लोग । मूल संप्रदाय के आचार्य परंपरा का यही मूल है ।

(१३) अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की तपस्वी विस्तार की गादी से उदासीन हुए आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को श्रीहरि ने कहा कि, हम आपके साथ है। श्रीहरि के इस वचन की आज भी पूर्ति होती है। ऐसा प्रतीत होता है।

(१४) दोनो देश की गादी पर आचार्य का गादी अभिषेक हुआ उसके बाद बडौ़दा में सयाजीराव गायकवाड सरकार की तरफ से भव्य स्वागत उत्सव किया गया। राजा महाराजाओने जिस प्रकार श्रीहरि का स्वागत किया था उसी प्रकार से श्रीहरि के अपर स्वरुप का स्वागत किया गया। श्रीहरि का इस शहर में सयाजीराव गायकवाड की तरफ से भव्य स्वागत उत्सव किया गया।

(१५) छपैया मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के समय लखनऊ के कुबेरसिंह नामवाले बालक का पैर घोड़ागाडी की पहिया में फंस जाने से मृत्यु हो गयी। प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की जिससे वह जी गया। इस तरह श्रीहरि की तरह सामर्थ्य वाले थे तथा श्री स्वामिनारायण महामंत्र की महिमा का यह चमत्कार।

(१६) विश्व के सर्वप्रथम मंदिर कालुपुर में सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्याल की स्थापना करके तथा श्रीजी महाराज द्वारा लिखित पाठशाला चल रही है, जहाँ पर संत-ब्राह्मण विद्या का लाभ ले रहे हैं।

(१७) साबरकांठा के ईडर शहर में स्वयं देखरेख करके नूतन शिखरी मंदिर का निर्माण करवाया था।

(१८) नंद-संत जिनका पूजन-अर्चन किये थे। आज भी वह परंपरा मूल संप्रदाय में चली आ रही है। जो मूल संप्रदाय के आचार्य होते है, उनका पूजन-अर्चन संत करते हैं। वही सच्चा संत कहलाता है।

(१९) मुमुक्षुओं को पंचवर्तमान ग्रहण कराकर कंठीधारण कराकर श्रीहरि के चरणों का आश्रित बनाया था।

(२०) अहमदाबाद साबरमती के किनारे नारायणघाट पर विधिपूर्वक श्री हनुमानजी महाराजकी प्राणप्रतिष्ठा करवाये थे। वहाँ के दर्शन से कोई वंचित नहीं होगा।

(२१) ईडर के राजा नूतन मंदिर के निर्माण के बाद मंदिर के दस्तावेज को प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज को अर्पण किये थे। इसी तरह का सभी को अनुसरण करना चाहिये।

(२२) असारवा प.पू. महाराजश्रीने हनुमानजी महाराजकी विधि पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करके आरती उतारे थे।

(२३) राजस्थान राज्य के डुंगरपुर गाँव में मुमुक्षुजीवात्माओं को धर्मोपदेश देकर श्रीजी महाराज द्वारा प्राप्त धर्मधुराको वहन कर रहे हैं।

(२४) संत-हरिभक्तों के साथ मध्य प्रदेश के शिवपुरी में पदार्पण करते समय नदी की ढाल पर बैलगाडी पीछे की तरफ शरकने लगी उस समय श्रीहरिने रक्षा की थी बगल में पुल बनाकर बाल स्वरुप का दर्शन करवाये इससे श्रीहरि के साथ रहने की प्रतीति हुई थी।

(२५) जेतलपुर की गंगाबा श्रीहरि की तरह पू अयोध्याप्रसादजी महाराज को भाव से भोजन करा रही हैं। जो श्रीजी महाराज को पहचाना वही आचार्य महाराजश्री की महिमा को जान सकता है।

(२६) उत्तर गुजरात के जमीयतपुरा गाँव में श्रीहरि के प्रसादी की जगह में प्रभा तालाब के किनारे विधिपूर्वक श्री हनुमानजी की प्राण प्रतिष्ठा करके आरती उतारे, यह स्थल भी यात्रा के लिये दर्शनीय बना है।

(२७) धन्य है धर्मकुल को.... मूली मंदिर के निर्माण के लिये पू. सुवासिनी माता के पैर की पायल को पू अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ब्रह्मानंद स्वामी को अर्पण कर रहे हैं। धर्मकुल का श्रीहरि के साथ एकात्मभाव का यहाँ दर्शन हो रहा है।

(२८) अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक करके पाटोत्सव संपन्न कर रहे हैं। जिन देव की श्रीहरिने प्रतिष्ठा की थी उन्हीं का पाटोत्सव करते हुए

आचार्यश्री ।

(२९) गुजरात के कच्छ के मांडवी शहर में शिखरी मंदिर में मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा करके वर्तमान काल में यह मंदिर छोटा पड़ने लगा इसलिये विशाल जगह में नूतन मंदिर का निर्माण किया ।

(३०) जेतलपुर धाम में मौलश्री वृक्ष के नीचे भगवान श्रीहरि को "हरिमिले बोरसली की छाया" कीर्तन को मधुर कंठ से गायन कराते हुये अपनी शीघ्र कवित्व शक्ति का उपयोग श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये करते थे ।

(३१) मूळीधाम में संत-हरिभक्तों के साथ वसंत पंचमी का रंगोत्सव जो आज भी परंपरा चालू है ।

(३२) संतो को काव्य तथा श्रीहरि के कीर्तन को सिखाते हुये - संतो के प्रति प्रेम का दर्शन हो रहा है ।

(३३) अहमदाबाद नारायणपुरा में विधिपूर्वक श्री हनुमानजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा की । इस मंदिर का जीणोद्धार अब होगा ।

(३४) श्रीहरि के ध्यान में एकाग्र थे, उस समय बिच्छू के डंक की असह्य वेदना नहीं हो सकी ऐसे आत्म निष्ठावाले थे ।

(३५) प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को गाँव बामरोली (म.प्र.) के हरिभक्तोंने स्नान करवाया । जिसका जल गाँव में छिड़का गया । बाद में गाँववालों को आशीर्वाद दिया कि इस गाँव में जो भी मरेगा उसे स्वयं श्रीहरि लेने आयेगे । श्रीहरि के साथ हम भी आयेंगे । श्रीहरि के अपर स्वरुप के सिवाय ऐसा कौन वरदान देगा ।

(३६) पवित्र श्रीहरिके जन्म स्थान छपैया धाम में प.पू. महाराजश्री ने स्वयं सेवा करके नूतन शिखरी मंदिर का निर्माण करवाया था । श्री हरि की जन्म भूमि के प्रति अद्‌भुत प्रेम ।

(३७) चंबल की घाटी डाकुंओ के लिये प्रसिद्ध है । परंतु प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री चंबल प्रदेश के बामरोली (म.प्र.) गाँव में उस समय सत्संग करवाये थे । इतना ही नहीं परंतु गाँव में कोई भी व्यक्ति की मृत्यु होगी उसे स्वयं श्रीहरि लेने आयेंगे ऐसा वरदान दिये थे । इसकी यथार्थता के लिये मृत्यु के एक दो दिन पूर्व स्वप्न में आकर कहजाते हैं । जो प्रक्रिया आज भी चालू है । गाँव के मंदिर में प्रतिष्ठित हनुमानजी की मूर्ति भी उतनी ही चमत्कारिक है । बामरोली गांव में भाग्य से ही कोई बिमार होकर डाक्टर के पास जाता है । प.पू. महाराजश्री को इस गाँव के प्रति बहुत प्रेम था । छपैया आते जाते बामरोली अवश्य जाते । सम्पूर्ण गाँव तथा आसपास का विस्तार चोरी या अन्य व्यवसाय से युक्त होते हुये भी आज तक देव, मंदिर तथा आचार्यश्री के प्रति अहोभाव वैसा ही बना हुआ है ।

(३८) छपैया धाम में पवित्र नारायण सरोवर के किनारे भक्तजनों की विशाल सभा में श्री घनश्याम महाराज की लीलामृत का रसपान कराते - श्रीहरि में अतिप्रेम दर्शित हो रहा है ।

(३९) प्रतिदिन संतो के साथ कीर्तन भक्ति द्वारा श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त करते हुये ।

(४०) संत हरिभक्तों की विशाल सभा में श्री दलपतराम कवि को कवित्व प्रदान करते हुये ।

(४१) मुमुक्षुजीवात्मा को त्यागी (संत) को महादीक्षा देते हुये ।

(४२) संतो को ध्यान तथा अष्टांग योग सिखाते हुये ।

(४३) संत हरिभक्तों के साथ सत्संग विचरण ।

(४४) संत-हरिभक्तों की विशाल सभा में एकाग्रचित्त श्रीमद् भागवत कथा श्रवण करते हुये ।

(४५) संतो को पंक्ति में स्वहाथों से भोजन परसते हुये - संतो के प्रति कितना प्रेम ।

(४६) जेतलपुर में प्रसादी के देवसरोवर में संतो के साथ स्नान करते हुये । प्रत्येक प्रसंग प.पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन-कवन पर आधारित है ।

गुरु में गोविंद दिखाये

– शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अपने संप्रदाय के आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री वचन सिद्ध थे । तीनों अवस्था में भगवान की मूर्ति अखंड देखते थे । बहुमुखी प्रतिभावाले थे । भक्तहृदय कवि थे । संप्रदाय की सर्वोच्च पदवी ऊपर विराजमान होकर भी छोटे-बड़े सभी सत्संगी के ऊपर दया भाव रखते थे। स्वामिनारायण भगवान के भक्तों को देखकर उन्हें ऐसा लगता कि अपना कोई संबन्धि मिल गया हो, ऐसा आनंद होता था ।

हम जिस वात को करने जा रहे हैं वह वात है माणसा गाँव की । माणसा गाँव का सत्संग बहुत अच्छा था माणसा गाँव में भगवान स्वामिनारायण का पावन रण कई बार प्राप्त हुआ था । उस माणसा के रहने वाले पिथुभाई दरबार तथा आणदोभाई दरबार बहुत उत्तम कोटि के भक्त एवं शूरवीर थे ।

मोटा पिथुभाई भला भक्त,
बीजा आणदोभाई जाणे जकत ।
भजे श्रीहरि ने भली पेर,
राखी उघाड़ी कर सम शेर ॥

ऐसे शूरवीर भक्त आणदाभाई विमारी में गिर गये । शरीर एकदम शिथिल हो गया । सगे सम्बन्धियों को ऐसा हो गया कि आणदाभाई अब ठीक नहीं होंगे । चारो तरफ यह समाचार फैल गया । बड़े-बड़े नंद संत आणदाभाईके घर पधारे ।

इस बिमारी का समाचार जब महाराजश्री सुने कि उसी समय रथ में बैठकर माणसा पहुंच गये । "वात सांभणी आव्या महाराज गुरु अवधप्रसाद अधिराज" आणदाभाई तो बैठने लायक नहीं थे । अयोध्याप्रसादजी महाराज उनके पास जाकर खड़े हो गये । आणदाभाई को बड़ा आनंद हुआ । आज उन्हें गुरु में गोविंद दिखाये । महाराजश्री का पूजन-अर्चन किये । आचार्यश्री



ने पूछा कि आणदाभाई अब आप की क्या इच्छा है। जीना है या महाराज के धाम में जाना है, क्या इच्छा है । हाथ जोड़कर आणदाभाई ने कहा कि हे महाराजश्री ? अब जीने की कोई इच्छा नहीं है । अब आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि मैं अक्षरधाम में चला जाऊँ । महाराजश्रीने तथास्तु कह दिया । उसी समय बड़ा चमत्कार हुआ । आकाश में सुंदर बाजे बजने लगे और महाराज स्वयं लेने पधारे । सभी को दर्शन हुआ। आणदाभाई की आत्मा को विमान में बैठाकर महाराज अपने धाम में ले गये । ऐसे प्रतापी के आदि आचार्यश्री। यह सर्म्पूण घटना अहमदाबाद मंदिर में बैठे-बैठे कृष्णानंद स्वामीने दिव्य दृष्टि से देखली । और अहमदाबाद के सभी संत-हरिभक्तों को कह सुनाया । इतना ही नहीं स्व रचित श्री हरि चरित्रामृत सागर ग्रंथ में इस घटना का उल्लेख किया ।

महाप्रतापी अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की एक और भी चमत्कारिक घटना है । माणसा गाँव में एक ब्राह्मण भक्त नरसिंहभाई थे । बड़े मुक्तात्मा थे । अखंड भजन में तन्मय रहते थे । संतो की सेवा करते । रात्रि दिन मंदिर में रहते ।

बड़ी भजन भक्ति मां पुरा,
साधु संतनी सेवामां सूरा ।
नाम नरसिंह सहुजन कहे,
आठे पहोर मंदिरमां रहे ॥

किसी समय अयोध्याप्रसादजी महाराज छपैया से गुजरात की तरफ आ रहे थे । मार्ग में भक्तों को दर्शन देते हुये । सलुंद्रा के पास चिखलोड गाँव में पहुँच गये । रात्रि का समय था, संत कथा वार्ता कर रहे थे । आदि आचार्य महाराजश्री सभा में विराजमान थे । उस समय नरसिंहभाई सभा में से उठकर अंधकार में लघुशंका करने गये । उसी जगह पर जहरी नाग रहता था । वह बहुत लोगों को काट चुका था । कितने मर चुके थे । नरसिंहभाई को इस बात की खबर नहीं थी । ज्यों वहाँ लघुशंका करने गये कि वह नाग काट लिया । नरसिंहभाई जोर से चिल्लाये । सभी दौड़कर वहाँ गये । सभी लोग यंत्र-मंत्र-तंत्र का उपयोग करने लगे । उस समय नरसिंहभाई ने कहा कोई उपाय करने की जरुरत नहीं है । हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण की इच्छानुसार सब होता है । इतना कहते हुये वे गिर पड़े ।

हरि इच्छा होय एम थाय,
बीजो कोई न करशो उपाय ।
एम कहेतां विष चड़ी गयुं
देह भान लेश नव रहयुं ॥

नरसिंहभाई की श्वास रुकने लगी । उसी समय सभा में से पू. आचार्य महाराजश्री संतो के साथ पधारे संतोने तथा आचार्य महारजश्रीने स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की । महाराजश्री ने विन्ती की हे महाराज ! नरसिंहभाई की रक्षा कीजिए । विन्ती सुनकर स्वामिनारायण भगवान वहाँ पधारे और नरसिंहभाई के मस्तक पर हाथ रखे कि जहर उतर गया । नरसिंहभाई एकदम स्वस्थ हो गये । सम्पूर्ण गाँव में स्वामिनारायण भगवान की तथा पू. महाराजश्री की जय-जयकार हो गयी ।

इस तरह तो अनेक घटनायें है । उसमें से हम दो घटना को जाने । जिसकी प्रार्थना से स्वयं भगवान अपने भक्त को धाम में ले जाते हैं तथा जिसकी प्रार्थना से भगवान अपने भक्त की मृत्यु से रक्षा करते हैं ऐसे अति दयालु, वचन सिद्ध, ध्यान सिद्ध आदि आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को २०० वीं जन्म जयंती प्रसंग पर कोटि कोटि वंदन ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव के दिव्य प्रसंग पर धर्मकुल के आशीर्वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

धर्मकुल वंदना महोत्सव में जो सहभागी हुए उन सभी को तीन दिनों तक श्रीहरि के तीन-तीन अपर स्वरुपों तथा तीसरे दिन तो एक ही साथ श्रीहरि के चार-चार स्वरुपों के दर्शन हुए इतना ही नहीं उन चारो स्वरुपों के मुख से आशीर्वचन भी सुनने को मिले । जो वास्तव में हमारा सौभाग्य है । यह आशीर्वचन हमे हंमेशा याद रहे तथा जो लोग सहभागी नहीं हो पाये वैसे दूर के हरिभक्तों को थोड़ा बहुत सुख मिल सके इस हेतु से इस अमूल्य आशीर्वचन को लेख के स्वरुप में यहाँ पर प्रस्तुत कर रहा हूँ । आशा है कि आप सबको पसंद आयेगा ।



(१) प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : आदरणीय संत तथा देश विदेश से आये हुये छोटे बड़े सभी हरिभक्त, आज आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जन्म दिन को २०० वर्ष पूर्ण हो रहे है, इसी के उपलक्ष्य में यह उत्सव मनाया जा रहा है । उनके गुण को लिखने बैठे तो पार नहीं होगा । बिच्छू का प्रसंग यह बताता है कि उनकी भगवान में कितनी श्रद्धाथी । बिच्छू के डंक मारने पर भी वे पूजा में से चलायमान नहीं हुये थे । कितने लोग तो कोई संकट आने पर भगवान की भक्ति करना छोड़ देते हैं । भगवान का दर्शन करते हों और दुःख आ जाय तो भगवान को दोषी बताते हैं । यद्यपि भगवान जो करते हैं उसमे कोई कारण अवश्य होता है । इस उत्सव में कार्य सेवक खूब परिश्रम किये हैं, वह भगवान के पास जमा हो गया है । प्रत्येक विभाग के सेवक का हम आभार मानते हैं, श्रीजी महाराज सभी हरि भक्तों को प्रसन्न रखें ऐसी श्री नरनारायदेव के चरणों में प्रार्थना ।

(२) प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : आदरणीय संत गण तथा प्यारे हरिभक्तगण ! हम सभी दादाजी के ऐश्वर्य की बातें तथा चमत्कार को सुने । वक्ताजीने जो यह कहा कि दादा जब पंक्ति में भोजन परसते उस समय सभी को साक्षात् श्रीहरि परस रहें हों ऐसा आभास होता था । इसका क्या कारण हो सकता है ? दोनो गद्दी पर जितने भी आचार्य आये वे सभी अपने सामर्थ्य तथा समय के अुसार श्रीजी महाराज की पहचान कराई हैं । स्वयं की पहचान नहीं करायी हैं । आचार्यश्रीने जो कीर्तन बनाया हैं, उसमें भी भगवान को पहचानने की बात की गयी है । आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के हस्ताक्षर मेरे पास हैं । (Antoguaph) जिस में अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण इस तरह स्वयं श्रीजी महाराज के पुत्र के रुप में हस्ताक्षर किये हैं । बहुत वर्षो तक दोनो देश के

आचार्य एक साथ बैठते रहै। एक समय आनंदप्रसादजी महाराज अहमदाबाद पधारे, उस समय गद्दी पर पू. बापुजी विराजमान थे। स्थिति ऐसी हुई कि आरती में दोनो साथ पधारे और आरती के बाद उन दिनों श्री नरनारायणदेव की जय बोली जाती थी, लक्ष्मीनारायण की नहीं। उसी समय सभा में दोनो आचार्यने निश्चित किया कि श्री नरनारायणदेव की आरती के बाद श्री लक्ष्मीनारायणदेव की जय बोली जायेगी, और लक्ष्मीनारायणदेव की आरती के बाद श्री नरनारायणदेव की जय बोली जायेगी इस तरह अरस-परस की व्यवस्था की गई और आज भी वह प्रचलित है। कितनो को ख्याल है या नहीं कि मूली में आज भी आरती के बाद श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की जय बोली जाती है। वर्षो से यह परंपरा चली आ रही है। इस महत्व के स्मृतरुप में अहमदाबाद देश के सभी मंदिरो में आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजकी जय बोलनी चाहिये। हमारे इस सूचना को विशेषरुप से सभी ध्यान रखेंगे। हमारे पास परंपार से जो दादा की वस्तुयें है वह भी म्युझियम में एक अलग विभाग बनाकर रखना है। बिच्छू का जो प्रसंग है, उस समय दादा जिस पीढे पर बैठे थे वह पीढा, मुहर छाप, सफेद पगड़ी, पात्र इत्यादि एक विभाग में रखेंगे। म्युझियम की उद्घाटन ता. ८-३-२०११ फाल्गुन शुक्ल-३ निश्चित किये हैं। उस समय देश-विदेश से आबाल-वृद्ध नरनारी सभी को आना है। केन्या में एक छोटे बालक ने चोकलेट का १-१ रुपया बचाकर म्युझियम के लिये योगदान किया है। ऐसी छोटी दान प्रक्रिया से भी हम प्रसन्न होंगे। दर्शन के लिये आनेवाले को ऐसा लगना चाहिये कि हमारा भी इसमें योगदान है। जेतलपुर के पांचवे वचनामृत में महाराजने कहा है कि, भगवान का किया सबकुछ होता है, लेकिन इस समय इस सभा का किया हुआ भी हो सकता है। आज इस सभाजन को विन्ती करते हैं कि म्युझियम का कार्य सर्वोपरी बनें। भुज मंदिर का उद्घाटन समारोह मई २०१० में आयेगा। वह उत्सव भी धूमधाम से करना है। जिस जमीन पर यह उत्सव किये हैं, उस जमीन के मालिक गोविंदभाई पटेल को महाराज ने प्रेरणा की है कि वे इस जमीन में से एक भाग मंदिर बनाने के लिये देंगे। सत्संग में एकता, संगठन, प्रेम परस्पर आदर, आचार्य-संतो के प्रति आदर, संत-आचार्य एक दूसरे में आदर, संत हरिभक्तों के प्रति आदर रखें। यह आदर का संप्रदाय हैं। संप्रदाय में एकता रख कर ही प्रगति कर सकते हैं। श्रीजी महाराज का आशीर्वाद सबके जीवन में उतरे












सन्मान





શિકાગો મંદિરમાં ધર્મકુળ વંદના મહોત્સવની સભા




ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

(३) वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री : प्रथम सभा का उद्‌बोधन करके प.पू. महाराजश्रीने सभी को हृदय से भावपूर्वक जयश्री स्वामिनारायण बोले ।

संभव है कि आदि आचार्य पद से लेकर आजतक के इतिहास में आचार्य पद का यह प्रथम उत्सव मनाया गया है । इसलिये हमें इसका खूब आनंद है । संप्रदाय की पुष्टि के लिये तथा सर्वधर्म के लिये, सिद्धान्तों के रख रखाव के लिये यह उत्सव किया गया है । धर्मदेव का परिवार यहाँ आया और महाराजने इस कुल में से ही आचार्य पद की स्थापना की, इस निश्चित ही कोई विशेष कारण था । इस पद की गरिमा है । अहमदाबाद गद्दी के ये सातवें आचार्य है । वडताल गद्दी के हम नवमें आचार्य है । दोनों मिलकर सोलह हुए । सोलह में से कोई अपने पिता को लेकर महाराज को गलत साबित नहीं कर सकतें । आदि आचार्यश्री का नाम अयोध्याप्रसादजी हैं । इस लिये कि अयोध्यावासियों का काम करते हैं । यहाँ के आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के नाम से ही अयोध्या प्रदेश का निर्देश होता हैं । कदाचित महाराजने ही निश्चित किया होगा कि कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यकाल के दरम्यान उनके वरद् हाथों से आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का उत्सव मनाया जाय । महाराजकी इस इच्छा से ऐसा प्रतीत होता है कि वह कार्य भी आज पूर्ण हो गया ।

प.पू. महाराजश्री अहमदाबाद के तृतीय वचनामृत का उल्लेख करते हुये बोले कि, शुकमुनिने पूछा कि, जिसे विवेक की समझ नहो वह अपने मालिक को कैसे प्रसन्न करे ? तब महाराजने कहाँ कि मूलजी ब्रह्मचारी तथा रतनजी बुद्धिशाली नहीं है । परंत कल्याण कि इच्छ अत्यंत है, इसीलिए भगवान जिस प्रकार से प्रसन्न हो उन्हें उस प्रकार प्रसन्न करना आत है । और इस वर्तमान समय मे तो अयोध्यावासी बाई एवं भाई लोग भी हमें जिस प्रकार से प्रसन्नता हो उसी प्रका का आचरण भी कर रहे हैं परमहंस तथा सांख्ययोगी बाई तथ कर्मयोगी सत्संगी भी इस प्रकार का वर्तन नहीं क पाते । क्योंकि अयोध्यावासिओंने अपना जीवन सत्सं पारायण कर दिया है । इसलिये अयोध्यावासियों क तरह भगवान को प्रसन्न करना किसी को नहीं आता अयोध्यावासी बहुत विश्वासी हैं । इसलिये कोई कपट होगा तो उन्हें छल देंगा । यह ध्यान रखकर बड़े परमहं या बड़े सत्संगी गृहस्थ हों वे पूछपरछ अवश्य करेंगे



इस तरह त्यागी एवं गृहस्थ सभी अयोध्यावासियों का ध्यान रखेंगे यह हमारी आज्ञा है ।

यहाँ इस उत्सव में त्यागी-गृहस्थ सभी महाराजश्री की आज्ञा चरितार्थ किये हैं । तन, मन, धन से सभी ने जो भी सेवा की है, उन सभी पर भगवान श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव खूब प्रसन्न हों अंत में पुनः हमारा सभी को हृदयपूर्वक जयश्री स्वामिनारायण ।

(४) श्री नरनारायाःदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री : सभा को सम्बोधित करने के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने कहा कि, महाराजकी कृपा हम सभी पर है । जिसका परिणाम यह उत्सव निर्विघ्न पूर्ण हुआ । भगवान को प्रसन्न करने के लिये हम एकत्रित हुये हैं । हमें एक याद आती है कि आचार्य महाराजश्री का जहाँ पहले निवास स्थान था आज वहाँ सहजानंद गुरुकुल हैं ऐसे असारवा गुरुकुल के संचालक श्री. निर्गुणदासजी है, वही पर अयोध्याप्रसादजी महाराज के समय का एक रथ था । उसी पर हम लोग चढकर खेलते थे । आज विचार करें तो ऐसा लगेगा कि अयोध्याप्रसादजी महाराज उसी रथ पर चढकर गाँव-गाँव जाते रहे होंगे । साथ में बड़ी संख्या में सेवक जाते रहें होगे । उन्ही का पुरुषार्थ है कि हम सभी सुखी है । किसी प्रकार कोई कमी नहीं है । यदि कमी है तो अपने स्वभाव में ।

एकवात हमें बहुत अच्छी लगती है । यह वात अंतर में उतर गयी है । यदि यह वात किसी सभा में पहले कहे हों तो भी पुनः कह रहा हूँ । एक शेंठजी गाड़ी में बैठकर अपने घर की तरफ आ रहे थे, उन्होंने देखा कि मेरे दरवाजे के सामने एक वृक्ष के नीचे कोई गरीब खड़ा है । शेठजी उनके पास जाकर पूछा कि क्यों भाई आप को मुझसे कुछ चाहिये ? उसने कहा नहीं मैं तो मात्र इस वृक्ष की छाया के लिये रुका हूँ । शेठने विचार किया कि यह तो बहुत संतुष्ट आदमी है, फिर भी मुनीब को बुलाकर कहा कि इस गरीब को प्रति महीने मेरी तरफ से ३००/- रुपये देना है, हुआ ऐसा ही वह व्यक्ति तो खूब प्रसन्न हो गया । उसे तीन सौ रुपये मिलने लगे । इस बात को वर्षो वीत गये, एक बार मुनीब उसी रास्ते से जा रहा था । वह भिखारी मिला और कहने लगा वह मेरा तीन सो रुपये दे दीजिये । मुनीब उसे तीन सौ की जगह दो सो रुपये ही दिये । वह कई बार गिनती किया कि एक सौ रूपये कहीं रह गया हों । उसने मुनीब से कहा कि आप दो सौ रुपये क्यों दिये । शेठ ने ही कहा है कि दो सौ रुपये ही देना शेठ के धंधे में थोड़ी

कमी आ गयी है । तथा बेटी का विवाह होने वाला है उस प्रसंग में खूब खर्चा होगा इसलिये आप को कम दिया जा रहा है । यह सुनकर उसके मन का भाव बदल गया । संतोष का गुण चला गया । अब वह मुनीब को सुनाकर कहने लगा - यह सभी को समझने लायक है, मैं भी यह वात अन्तर में याद करता हूँ । आपके शेठ के धंधे में कमी आयी तो इसमें हमारा क्या दोष । वे अपनी बेटी का विवाह कर रहे हैं तो अपने पैसे से करे, हमारे पैसे से नहीं । वह व्यक्ति शेठ के पैसे को अपना पैसा मान लिया ।

इस वात का हार्द यह है कि निरन्तर वहती दया को मनुष्य अपना अधिकार मान लेता है । इतना तो हमें मिलना ही चाहिये । भगवान हमें अविरत दे रहे हैं वह दिखाई देता है । हम छाया की अपेक्षा रखे थे वहाँ तो तीन सो रुपये, दो समय की रोटी, इतना ही नहीं गाड़ी, बंगला देदिये । हम श्वास लेते हैं उसमें भी स्वामिनारायण भगवान का ऋण है । कारण यह कि उनकी इच्छा के विना एक पत्ता भी नहीं हिलता है । हमें जो मिला है वह भूतकाल में अथवा वर्तमान काल या भविष्यकाल में भी ऐसा कोई नहीं मिलेगा ऐसे अपने प्रभु स्वामिनारायण भगवान हैं तो उनहीं की शरणागति सभी को लेनी चाहिये । ऐसे भगवान के साथ श्री नरनारायणदेव के साथ, श्री लक्ष्मीनारायण देव के साथ अपना संबन्ध हो । स्वामिनारायण भगवान अपने बाप हैं । अपने कुटुम्बी हैं । छपैया अपना गाँव छोड़कर, दया करके हम सभी के बीच महाराज यहाँ आये । कोई अपना गाँव, घर छोड़ने को कहे तो क्या हम गाँव, घर छोड़ शकते हैं । महाराज एक घर छोड़े तो लाखो करोड़ो का घर एक हो गया । हमें अपने सगे सम्बन्धियों का नाम याद नहीं है । परंतु संत, कोठारी तथा हरिभक्तो का नाम याद है । भगवान तथा भक्त के माहात्म्य को जो नहीं जानता ऐसा समुदाय भी इसमें जुड़ा हैं उनका भी कल्याण होगा । देश-विदेशमें रहनेवाले छोटे-से छोटे हरिभक्तों के बालक भी इस कार्य में लगे थे । एक बालक १३-१४ वर्ष का है वह विदेश में ढोल बजाकर तीन सो डोलर एकत्रित करके दिया है । आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का यह उत्सव है । हमें यह संतोष है कि इस कार्यक्रम में बहुत सारे नामी-अनामी हरिभक्त जुड़े हुये हैं । स्वयं सेवक अपना जानकर सेवा किये हैं । श्रीजी महाराज आप सभी का मनोरथ पूर्ण करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

दोपहर में दो बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री स्वयं सेवकों को आशीर्वचन देने पुनः पधारे, उस समय उन्होंने कहा कि आप सभी यहाँ तीन दिन तक सतत रुके रहे और हम यह भी देख रहे थे कि इसमें से कितने लोग सभा मंडप की तरफ भी नहीं आशके ।

बड़े भाग्य शाली को यह सेवा मिलती है । आप लोग गाँव का कार्यक्रम हो वहाँ भी सेवा करते हैं, यहाँ स्वयं सेवक का कार्य किये हैं ।

महत्व की वस्तु तो यह है कि हमें श्री नरनारायणदेव मिले हैं । अन्यत्र सुख-शांति कहीं नहीं है । मात्र श्री नरनारायणदेव के चरणों में हैं । सुख, शांति, समृद्धि श्री नरनारायण के चरणों को पकड़े रखेंगे तो मिलती रहेगी । दुनिया में कितने ही तूफान आते हैं । कहीं गड्ढा हो तो पहाण हो जाय, पहाण हो तो गड्ढा हो जाय । एक का तीन गुना करने वाला फंस जाता है । परंतु भगवान स्वामिनारायण वाला कभी नहीं फसंता है । आज के समय में स्वयं को भगवान मानने वालों की संख्या बढ गयी हैं ।

हमें जो भगवान मिले हैं उनके प्रति श्रद्धा-विश्वास आत्म समर्पण का भाव रखना चाहिये ।

अनंत ऐश्वर्य से युक्त आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज

- प्रो सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में आचार्य महाराजश्री का स्थान अतिशय उच्च सन्माननीय तथा पूजनीय इसतरह है कि, इस अमूल्य पद पर बिराजमान आचार्य महाराजश्री, श्रीहरि के अपर स्वरुप समान है। इस प्रकार श्री स्वामिनारायण महाप्रभु ने स्वयं अर्पित वचनानुसार वे आचार्यों में आज भी निवास किए हुए हैं। धर्मकुल की महत्ता तथा इस महान पद की असाधारण महत्ता से सभी संतगण, सत्संगिगण तथा हरिभक्तगण वाकिफ है। संप्रदाय का सर्व प्रथम आचार्य पद श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को श्रीहरि ने संत १८८२ के कार्तिक शुक्लपक्ष-११ के दिन अर्पण किया था। उनका जन्म सं. १८६५ ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-११ के शुभ दिन पर हुआ था। वे ५८ वर्ष की उम्र में सं. १९२४ के फाल्गुन शुक्लपक्ष-७ को अक्षरवासी हुए थे। वे ४२ वर्ष तक आचार्य पद पर रहे थे। ता. १ से ३ जून २००९ तक उनका द्विशताब्दी महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ था। उन्हें श्रीजी महाराज का सहयोग था।



एक समय श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज कच्छ पधारे थे। वे अहमदाबाद से कच्छ में भूज, मांडवी, कालातालाब, धमकड़का से होकर गुजरात जा रहे थे। उनके साथ चारसो लोग का काफिला था। हाथी, घोड़ा, बैल, आदि भी थे। कुछ लोग बैलगाड़ी में, तो कुछ लोग घोड़े पर तथा महाराजश्री हाथी पर बिराजमान थे। साथ ही तंबू, अनाज, सरकस, पानी आदि की सुविधा भी थी। भक्तों के निमंत्रणो को मान देकर भिन्न भिन्न गाँव में आराम करते थे। कच्छ से लौंटते समय मार्ग में घाटीला गाँव आया था। गाँव में एक किसान हरिभक्त जेठा पटेल तथा अन्य भक्तोंने महाराजश्री का स्वागत किया। गाँव की पश्चिम दिशा में स्थित बड़े तालाब में पानी का अभाव था। दूसरे ही दिन लौटने का निर्णय किया था। तब गाँव के हरिभक्तों ने तथा जेठा पटेलने हाथ जोड़कर आग्रह पूर्वक विन्ती की, हे महाराज, हमने तो ग्यारह दिनों में ग्यारह प्रकार की रसोई बनाई, आप सभी को भोजन करवाने की तैयारी की है। कृपा करके ग्यारह दिन तक रुक कर हमें पावन कर दीजिए अहमदाबाद छोड़े काफी वक्त हो गया था। इस कारण किसी को रुकने का मन नहीं था इसीलिये किसीने कहा, इस गाँव के चारो तरफ इतना पानी भी नहीं है कि सबको पूर्ण हो पाये।

गाँव में एक ही तो कूआँ है । उस में भी खारा पानी आता है । किसीने कहा, महाराज आषाढ महना बैठ गया है तो छोटे और साधारण रास्तो में पानी भर जायेगा । कुछ जगहों पर माटी भी अधिक मात्रा में है पानी की वजह से मिट्टी चीकनी हो जायेगी । तथा लोगों को और प्राणिओं को भी तकलीफ होगी । इस कारण अहमदाबाद पहुँचने में तकलीफ होगी ।

तब श्री अयोध्याप्रसाजी महाराजने एक सत्संगी अग्रगण्य गाँव के आनंदजी पटेल को पूछा, आप क्या कहते हैं ? आनंदजी पटलने कहा, महाराज, पानी की कमी तो है परंतु गाँव के लोग दिन रात मेहनत करके पानी इकट्ठा कर लेंगे । आप को किसी भी प्रकार की तरलीफ नहीं होने देगे । इसलीये कृपा करके आप रात में रुक जाने के लिये दया कीजिए । उसी समय अखाभाई करके एक गरासीयाने कहा, महाराज रास्ते में जाते समय कालावाड़ का पट है वह तो बहुत चिकना है दो बूंद भी वरसात होगी तो चल भी नहीं पायेगें ।

श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने प्रत्युतर में कहा, आप चिंता मत कीजिए । अखाभाई जब तक हम अहमदाबाद नहीं पहुँचेगे तथा नरनारायणदेव के दर्शन नहीं करेंगे तब तक वर्षा नहीं होगी । जिन लोगों को जल्दी हो वे लोग जा शकते है । हम तो यहाँ रुक रहें हैं । ऐसे हरिभक्तों को नाराज नहीं किया जायेगा । तथा हम श्रीहरि से प्रार्थना करेंगे । गाँव में यह एक ही कुँआ है जो खारे पानी का है वह मीठे पानी का कुँआ हो जाये । पानी जरुर मीठा हो जायेगा फिर किसी को कोई तकलीफ नहीं होगी । जितना चाहे उतना पानी जानवरों को पिलाओ तथा स्वयं भी पीओ । दूसरे ही दिन श्रीहरिने आचार्य महाराजश्री की विंन्ती सुन ली इस प्रकार खारा पानी मीठे पानी में परिवर्तित हो गया पानी भी उपर आ गया । सभी लोग इस ऐश्वर्य से आश्चर्य चकित हो गये । श्रीहरि सदैव अयोध्याप्रसादजी महाराज के समीप ही रहते थे । इसका यह भव्य दृष्टांत है । ग्यारह दिन के बाद गाँव वासियोंने भक्तों को प्रसन्न करके सभी को अहमदाबाद की ओर प्रस्थान करवाया । तथा सभीने श्री नरनारायणदेव का भाव से दर्शन किया तुरंत ही मुशलधार वर्षा होने लगी । यह अजोड़ सामर्थ्य तथा वचन सिद्धि श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के पास थी ।

हमारे आगामी उत्सव

आषाढ कृष्ण पक्ष-१० : ता. १७-७-२००९ शुक्रवार प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में धूमधाम से मनाया जायेगा ।

सावन शुक्ल पक्ष-१५ : ता. ५-८-२००९ बुधवार रक्षाबंधन (२ पूनम)

सावन शुक्ल पक्ष-१५ : ता. ६-८-२००९ बृहस्पतिवार मुकुटोत्सव पूनम

सावन कृष्ण पक्ष-४ : ता. ११-८-२००९ मंगलवार जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव

सावन कृष्ण पक्ष-८ : ता. १४-८-२००९ शुक्रवार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में उत्सव मनाया जायेगा ।

सावन कृष्ण पक्ष-३० : ता. २०-८-२००९ बृहस्पतिवार अमावस्या कुशग्रहणी श्री शिवपूजन समाप्त

नित्य दर्शन करे

१. अहमदाबाद : www.swaminarayan.in
२. जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
३. महेसाणा : www.mahesanadarshan.com

धर्मकुल वंदना गागर में सागर

– अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

ता. १ से ३ जून २००९ ज्येष्ठ शुक्ल-९ से ११ तक त्रिदिनात्मक धर्मकुल वंदना महोत्सव श्रीपुर शहर ऐसे अहमदाबाद के प्रांगण में श्री गणेश हाउसिंग कोर्पोरेशन के मेदान में श्री स्वामिनारायण के नगर में खूब धूमधाम के साथ मनाया गया था ।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के प्रागट्योत्सव को २०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में धर्मकुल वंदना महोत्सव ऐसा नामाभिधान किया गया, जो योग्य एवं सार्थक था ।

प्रस्तुत लेख में धर्मकुल वंदना महोत्सव समस्त सत्संग में कैसे फैल गया तथा सहभागी बनने वाले सहृदयी को क्यों अनुकूल बन गया इसकी झलक यहाँ दर्शाया जा रहा है ।



विजया दशमी के दिन पू. आचार्य महाराजश्री के जन्मोत्सव पर प.पू. बड़े महाराजश्री के हृदय में धर्मकुल के वंदनीय दादाजी की जन्म द्विशताब्दी महोत्सव मनाने का संकल्प हुआ ।

प.पू.ध.धु. वर्तमान पीठाधिपति आचार्य महाराजश्रीने धर्मकुल वंदना महोत्सव ऐसा नामाभिधान के साथ इस उत्सव को अहमदाबाद देश के मुख्य स्थान पर अर्थात् अहमदाबाद में ही करने की आज्ञा की ।

पू. महाराजश्री की आज्ञा होते ही शिरोधार्य करके संत-हरिभक्त तन, मन, धन से महोत्सव को सफल बनाने के लिये कटिबद्ध हो गये । देखते - देखते ही महोत्सव का सम्पूर्ण प्रारुप तैयार हो गया ।

श्री स्वामिनारायण नगर आयोजित की विशेषता शेठ श्री गोविन्दभाई पटेल के गणेश हाउसींग कोर्पोरेशन के विशाल मैदान में श्री स्वामिनारायण नगर का आयोजन किया गया ।

कलात्मक विशाल प्रवेश द्वार के पास सुन्दर छत्री बनाई गयी थी । उसके ठीक बीच में श्री नरनारायणदेव का छोटा मंदिर बनाया गया था। मंदिर के दाहिनी तरफ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के जीवन कवन का प्रदर्शन किया गया था ।

प्रदर्शन विभाग के पास विशाल सभा मंडप बनाया गया था । विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के त्रिशिखर मंदिर की कलात्मक प्रतिकृति वाला विशाल स्टेज बनाया गया था। तीन दिन तक सभा मंडप में ऊपर से पानी का फुहारा पड़े इस तरह की व्यवस्था की गयी थी । इसके अलांवा पंखा की सुंदर व्यवस्था की गई थी जिससे शीतल वातावरण हो गया था । किसी को गर्मी का अनुभव ही नहीं हुआ । सभा मंडप का नाम श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज सभा मंडप था । इस सभा मंडप में ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि संपूर्ण दिन शीतल वातावरण

बना रहे ।

प्रदर्शन विभाग के सामने तथा नगर की बायी तरफ श्री धर्म भक्ति यज्ञशाला बनायी गयी थी । जिसमें विष्णुयाग का आयोजन किया गया था। जिसके पवित्र श्लोको से सारावातावरण भक्तिमय बन गया था ।

यज्ञशाला के बगल में श्री स्वामिनारायण महामंत्र के धुन का मंडप था । तीन दिन तक लगातार यह महामंत्र चलता रहा । जिस में संत-हरिभक्तों के हृदय से धारा बहती रही ।

श्री स्वामिनारायण नगर के अंतिम भाग में श्री रामप्रतापजी भोजनालय तथा भक्तिमाता भोजनालय की व्यवस्था की गयी थी । समग्र महोत्सव दरम्यान समग्र नगर में टेन्करों से पानी छिटकने का कार्य चालू रहता था, जिससे गरमी का पता ही नहीं चलता था । सम्पूर्ण नगर में कही धूल दिखाई नहीं देती थी या गर्मी का प्रभाव दिखाई नही देता था ।

नगर के बीच में विशाल सामियाना बांधा गया था । जिसमें भोजन के बाद आराम करने की दृष्टि से सभी नर-नारी उसमें शांति का अनुभव करते थे ।

विशाल मैंदान में निम्ब वृक्षों की खूब संख्या थी, जिसमें चबूतरे भी बने थे, उस पर तोग बैठकर शांति का अनुभव करते थे ।

ऐसे सूक्ष्म विचारो के साथ निर्मित इस श्री स्वमीनारायण नगर में श्री धर्मकुल वंदना महोत्सव का लाभ जिन्दगी के लिये अविस्मरणीय बना रहेगा ।

श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा पारायण

महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम में त्रिदिवसीय तथा पंच सत्रीय श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा का आंशिक आयोजन किया गया था । प्रत्येक सत्र में अलग-अलग विद्वान संत अपनी सुमधुर शैली में श्रोताओं को कथा सुनाकर अमृतरस पान कराया ।

भव्यातिभव्य शोभायात्रा

महोत्सव के दूसरे दिन सायंकाल ५-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. श्री लालजी महारजश्री की भव्याति भव्य शोभायात्रा उन्हीं के निवास स्थान श्री स्वामिनारायण बाग से निकाली गयी थी । शोभायात्रा में सर्वप्रथम गणपतिजी का रथ था । उसके बाद श्रीहरिकृष्ण महाराज की मूर्ति का रथ था । उसके बाद झूले पर झूलते हुये श्री सहजानंद स्वामी का दर्शन हो रहा था । उसके पीछे राष्ट्रभक्ति की यशोगाथा गाने वाला टेब्लो था । इसके बाद आचार्य परंपरा का टेब्लो प्रस्तुत किया गया था । इसके बाद व्यसन निषेध का टेब्लो एवं वृक्ष बचाओ के अभियान वाला रथ था । इसके पीछे श्री नरनारायणदेव का उत्सवीय मंडल द्वारा ऐतिहासिक लाल किले में श्रीजी महाराज को विराजमान करके दिखाया गया था । अंतिम आयोजन में दो हाथी अभिवादन कर रहे हैं । ऐसा सुंदर विशाल रथ बनाया गया था, जिस पर मखमली सिंहासन बिछाया गया था, उस पर पू. महाराजश्री एवं पू. लालजी महाराजश्री विराजमान थे । उनके ऊपर छत्र लगा हुआ था । साथ में महंत स्वामी तथा अन्य संत भी थे ।

इस रथ के पीछे १०८ कलश मस्तक पर रखी हुई पंक्ति बद्ध बहनें शोभायात्रा की शोभा बढा रही थी । आगे के भाग में पंक्तिबद्ध पुरुष वर्ग श्री स्वामिनारायण चिन्हवाली पताका हाथ में लेकर चल रहा था । करीब दो कि.मी. लम्बी शोभायात्रा में बेन्डबाजा तथा कीर्तनो की धुन से युवान सत्संगी आनंदित होकर झूमते हुये चल रहे थे । सम्पूर्ण ड्राइविंग मार्ग पर चल रही इस शोभायात्रा का आनंद लेने के लिये तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का दर्शन करने के लिये विशाल जनमेदिनी एकत्रित होगयी थी । सभी ने अपने हृदय में उस रुप उतरा लिया था ।

५-३० बजे इस शोभायात्रा का आरंभ हुआ और ७-३० बजे महोत्सव नगर के आंगन में पहुँची थी, जहाँ पर फटाका इत्यादि फोड़कर भव्य स्वागत किया गया था । मोटेरा, जनतानगर, नारायणघाट, जुंडाल के युवान

सत्संगी मित्रोने इस उत्सव में (शोभायात्रा में) टेब्लो तथा गृंगार का आयोजन किया था ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव की इस सुहावनी झलक को देखने के बाद समझ सकते हैं कि यह उत्सव क्यों मनाया गया ? इसका हेतु क्या ? अपना यह उत्सव गागर में सागर कैसे बना ?

(१) उत्सव का संकल्प तथा इसके बाद आयोजन के लिये बहुत कम समय था । इतने थोड़े समय में इतना सुंदर उत्सव मनाया गया, यह मात्र भगवान स्वामिनारायण की कृपा के ही संभव है तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से संभव है ।

(२) महोत्सव मात्र त्रिदिवसीय होते हुये भी Short ... Sweet बना रहा ।

(३) आदि आचार्य के पद को लेकर कोई उत्सव हुआ है तो यह धर्मकुल वंदना महोत्सव प्रथम है ।

(४) यह महोत्सव किसी व्यक्ति विशेष का गुणगान करने के लिये नहीं था, परंतु श्रीजी महाराज द्वारा प्रवर्तित प्रणालिका को दृढ करने के लिये तथा धर्मकुल की रक्षा करने के लिये एवं आदि आचार्य द्वारा किये गये संप्रदाय के लिये योग दान का ऋण उतारने के लिये था ।

(५) आचार्य पद में विराजित आचार्य पद की महिमा गाने का यह उत्सव था ।

(६) अहमदाबाद देश पीठ स्थान के आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के जनमोत्सव को वर्तमान संवत् २०६५ ज्येष्ठ शुक्ल निर्जला एकादशी को २०० वर्ष पूर्ण हुआ है । संप्रदाय के उत्थान के लिये अथक परिश्रम किये थे । निरंतर विचरण करके सत्संग के पाया को सुदृ किये थे । इस तरह महान तथा गुणानुरागी आदि आचार्य महाराजश्री से लेकर वर्तमान आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज तक सभी आचार्य अपने-अपने ढंग से श्रीनी महाराज को पहचानने का प्रयत्न किया है । कभी भगवान बनने का प्रयत्न नहीं किया है ।

जगत में पांच लोग या पचास लोग किसी को जानने लगते हैं तो वह फूले नहीं समाता । दूसरों को तुच्छ मानने लगता है । जब कि धर्मवंश के आचार्यश्री को तो असंख्य सत्संगी लोग मानते हैं । पूजाकरते है । दंडत् प्रणाम करते हैं । फिर भी एक आचार्यश्रीने श्रीहरि की मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया है, बल्कि महाराजश्री का सहचर्य करने वाले मुमुक्षुजन हो या सत्संगी हो कोई भी हो । उनके साथ श्रीहरि के सिवाय अपने महिमा की बात कभी नहीं की ।

उन्हीं आचार्यश्री के महिमा गान करने का यह उत्सव था । इस पद की महिमा समझकर आचार्यश्रीके ऋण को याद कर उनके गुण को हृदय में उतारने का यह उत्सव था । इस उत्सव में प.पू. बड़े महाराजश्री, पू. महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री तथा आगंतुक मेहमान एवं वंदनीय संतो के आशीर्वचन का चिन्तन करने से इस उत्सव की महत्ता समझ में आजायेगी ।

महोत्सव से समुद्रमंथन से उत्पन्न मोती

इस उत्सव का प्राण तथा हृदय धुन मंडल था । यहाँ पर श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये धुन चल रही थी । श्रीजी महाराज यहाँ तीन दिन तक अखंड विराजमान थे । दिनांक १-६-०९ की प्रातः वेला में श्री स्वामिनारयण महामंत्र की अखंड धुन का उद्घाटन प.पू. बड़े महाराजश्रीने किया था ।

(२) हमें इस वात का गौरव है कि आप की दृष्टि से पू. आदि आचार्यश्री महाराज है लेकिन हमारे लिये तो दादाजी है । बापूजी जब परिवार के साथ रहते तब पू. दादाजी ऐसा संबोधन करते । इसी परंपरा में हमें रखे हैं । अयोध्याप्रसादजी महाराज सत्संग के लिये खूब परिश्रम किये हैं । बिच्छू का डंक हमें समझाता है कि जगत की विडंबना तो वारंवार डंक मारने वाली है । परंतु भगवान के भक्त उस डंक का परवाह किये विना श्रीहरि के साथ निमग्न होजाते हैं । (दिनांक १-६-०९ प्रात ९- बजे श्री सत्संगिभूषण पारायण के उद्घाटन समय पर प.पू. बड़े महाराजश्री)

(३) हम दादा की चमत्कार सम्बन्धित बहुत सारी वाते सुने । कल कथा में वक्ताश्रीने कहा कि दादा भोजन

परस रहे थे और परसते हुये भक्तों को श्रीहरि का दर्शन हुआ । जितने आचार्य हुये हैं वे अपने ढंग से श्रीजी महाराज की पहचान कराये हैं । कोई भगवान बनने का प्रयत्न नहीं किया है । हमारे पास दादा के पत्र भी हैं उसमें उन्होंने अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महराज इस तरह के हस्ताक्षर हैं ।

इस प्रसंग की सदा स्मृति बनी रहे इसके लिये एक छोटी सूचना है कि आज से आरती के बाद अहमदाबाद देश के सभी संत-भक्त पू. अयोध्याप्रसाजी महाराजकी जय अवश्य बोलेंगे ।

बिच्छू के डंक के समय पू. दादाजी जिस पीढे पर विराजमान थे वह आज भी मेरे पास है । ता. ८-३-२०११ फाल्गुन शुक्ल तृतीया को श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन श्री स्वामिनारायण म्युझियम का उद्घाटन रखे हैं । इसमें छोटे बालकों की सेवा भी चाहिये । जिससे म्युझियम में हमारा भी योगदान है ऐसा उनके मन में रहेगा । जेतलपुर के वचनामृत के अनुसार सभा का इच्छित भी होता है । सर्वोपरि सर्व अवतार के अवतारी का म्युझियम श्री सर्वोपरि होना चाहिये । संप्रदाय में एकता, दृढता, प्रेम की भावना अरस-परस आपस की भावना तथा सर्वोपरि श्रीहरि का आशीर्वाद सभी को मिलता रहे । यह संप्रदाय आदर का संप्रदाय है । (अंतिम दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वचन का एक अंश)

(४) अयोध्याप्रसादजी दादा के २०० वर्ष पूर्ण हुये है इसलिये यह उत्सव मना रहे हैं । उनके गुणगान का कोई पार नहीं है । बिच्छु वाला प्रसंग उन्हें भगवान में कितनी उत्तम भाव थी यह स्पष्ट हो जाता है । लोग नौकरी के लिये निवेदन करते हैं जब दुःख आता है तो भगवान को दोष देते हैं । भगवान जो करते हैं उसका कोई न कोई कारण निश्चित रहता है । (पू. लालजी महाराजश्री के अंतिम दिन के आशीर्वचन में से)

(५) पद में विराजमान होकर पद की महिमा को गाने का यह प्रथम उत्सव है । अहमदाबाद में सातवां आचार्य तथा वडताल में हम नवमें आचार्य हैं नव+सात अर्थात् सोलह में से एक भी आचार्यने अपनी पूजा किसे से कराने की वात नहीं की है । पुत्र अपने पिता को खराब नहीं कहेगा । अयोध्याप्रसादजी महाराज के नाम में अयोध्या का निर्देश है । कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के नाम में भी कोशल देश का अर्थात् अयोध्या का निर्देश है । यह एक सुंदर योग है । वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि अयोध्यावासी बड़े विश्वासी होते हैं । आप सभी अयोध्यावासियों का ख्याल रखना । आज सभी साथ मिलकर महाराज की आज्ञा का पालन करना । (प.पू. आचार्य महाराजश्री राकेशप्रसादजी महाराज के आशीर्वचन में से)

(६) भगावन की कृपा है, प्रेरणा हे जिससे ऐसे उत्सव में भगवान को प्रसन्न करने के लिये एकत्रित हुये हैं । बहुत पहले असारवा के पुराने बंगले में पू. दादाजी का रथ था । जह हम छोटे थे उस समय उस रथ पर चढते थे और विचार करते कि कितनी मजा आ रही है । किस तरह दादा बड़ी संख्या में संत भक्तोंके साथ कही दूर लोगों के घर में पदार्पण करते रहे होंगे । जिनके तप का फल है कि हम सुखी है । संतो का भी पुरुषार्थ है । जगत में जो भी अच्छा है वह भगवान स्वामिनारायण भगवान की कृपा का फल है । जो कूछ कमी है वह अपने कर्म का फल है । सतत वहती दया को मनुष्य अधिकार मान लेता है । भगवान से मांगने की अपेक्षा यह कहना चाहिये कि हे प्रभु ! आपने इतना सब कुछ दिया है । हम छाया खोज रहे थे, आप ३०० रुपये दे दिये ।

स्वामिनारायण भगवान हमारे पिता है । हम सभी एक कुटुम्ब के हैं । महाराज हरदम अयोध्याप्रसादजी महाराज के साथ रहते थे । छपैया का कुटुम्ब सम्भवतः कम हो गया हो परंतु यहाँ पर लाखों हरिभक्तों का संतो का कुटुम्ब मिल गया है । भगवान को प्रसन्न करना है । मुझे कुटुम्ब के लोगं के नाम याद नहीं, लेकिन संत-मंडल कोठारियों के नाम याद है ।

अमेरिका के एक गाँव में एक छोटा बालक ढोल बजाकर ३०० डोलर एकत्रित किया और मेरे पास आकर कहा कि आपके ही केवल वे दादा नहीं है हम सभी के भी दादा है इसलिये यह उत्सव हम सभी के दादा का उत्सव है। संत, कमेटी मेम्बर, सभी हरिभक्त, परदे के पीछे रहकर सेवा करने वाले स्वयं सेवक सभी लोग अपना जानकर इस उत्सव को संपन्न किये हैं। भगवान श्री स्वामिनारायण सभी के मनोरथ को पूर्ण करे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना। (प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन में से)

(७) कलियुग में भगवान को भक्तों के लिये गरज है इसलिये भगवान भक्त के पास सामने से जाते हैं। सुख और दुःख एक्युम क्लीनर जैसा है। झाड़ू लेना पड़ता है लेकिन गन्दगी अपने आप उस में आजाती है। दुःख की दुकान नहीं होती। सुख के साथ दुःख अपने आप आजाता है। पानी में डूबने के बाद नीलकंठवर्णी के पास पूजा तथा पुस्तक दो ही बचा। बाकी सब डूब गया। स्वामिनारायण भगवानने मात्र मंदिर ही नहीं बनाये उसके पहले शास्त्र बनाये। सत् शास्त्र व्यसनायच। शास्त्र प्रत्यक्ष है। सत्संगिभूषण नाम मुक्त है, शिक्षापत्री एक देवी है। सभी शास्त्र मूर्तिमान हैं। जिसके घर में ऐसे शास्त्र हो, उनके घर में कभी जंत्र-मंत्र, भूत, पिशाच का प्रवेश नहीं होता। (सत्संगिभूषण कथा सारमें से)

(८) जीव के कल्याण के लिये श्रीहरिने कितनी सुदंर व्यवस्था की है। परमात्मा की व्यवस्था साक्षात् होती है, अखंड होती है। आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसाजी महाराज बहुत तप किये हैं। गाँव-गाँव विचरण सभा किये हैं। उस रथका दर्शन म्युझियम में होगा। उनके तप का सुख आज हम प्राप्त कर रहे हैं। स्वामिनारायण भगवान प्रत्यक्ष यहाँ विराजमान है। आचार्यश्री की महिमा स्वयं भगवान गाये हैं। उन सिद्धांतो को जाने तभी उत्सव सार्थक कहा जायेगा। सिद्धान्तो का रखरखाव आवश्यक है। (पू. श्री आत्मप्रकादासजी स्वा. मंदिर जेतलपुर)

(९) धर्मकुल को नमस्कार श्रीहरि को ही प्राप्त होता है। अक्षरधाम में वह जमा हो जाता है। जैसे बैंक में पैसा जमा करने से पहले एकता खोलाना जरुरी होता है। आचार्यश्री को मानना यह आधा वंदन कहा जायेगा जब आचार्य महाराजश्री को माने तभी पूरा वंदन कहा जायेगा। उन्हीं की आज्ञा में रहना तन, मन, धन से उनकी सेवा करना पूरा वंदन कहलायेगा। अयोध्याप्रसाजी महाराज आशु कवि थे। भक्त हृदय था, खूब दयालु थे छोटे-बड़े सभी हरिभक्तों के साथ एक कुटुम्ब जैसी आत्मीयता थी। उससे भी अधिक भगवान स्वामिनारायण के साथ तन्मयता थी। (पू. श्रीहरि केशवप्रसाददासजी - गांधीनगर)

(१०) धर्मकुल अर्थात् धर्मदेव का परिवार। कल्याण भी उसी का होगा जो धर्मकुल के आश्रित होगा। जेने जोइये ते आओ मोक्ष मांगवा रे लोल, आज धर्मवंशी ने द्वार नरनारी, आचार्यश्री से जो मंत्र लिया हो वही मोक्ष का अधिकारी होगा।

अयोध्याप्रसादजी महाराज महानप्रतापी, महान परोपकारी, स्वयं वचन सिद्ध, समाधिनिष्ठ थे। मूली मंदिर में पैसे की समस्या के समय अपने तथा गादीवाला के गहने ब्रह्मानंद स्वामी को दे दिये थे। (श्री धर्मप्रियदास स्वामी बापू स्वामी - वडताल)

(११) इस उत्सव में प्रत्येक संत-हरिभक्त भाग लिये हैं। आचार्यश्री की आज्ञा का पालन ही मोक्ष का मार्ग है। यह बात सत्संग समाज समझता है। पू. आचार्य महाराजश्री हमें ऐसे सत्संग कार्य करने की प्रेरणा मिले ऐसा आशीर्वाद दीजिये।

(१२) मेरी सौभाग्य है कि मुझे ऐसा पवित्रवातावरण में थोड़ा समय विताने के लिये मिला है। अयोध्याप्रसादजी का २०० वाँ जन्मोत्सव तथा धर्मकुल वंदना के निमित्त जिन्होंने योगदान दिया है उनका संमान होना चाहिये। जो अपने पूर्वजों को भूल जाता है वह इतिहास से उखड़ जाता है। पूर्वजों के द्वारा किये गये कार्यो का पुरश्चरण ही यह उत्सव है। भगवान कृष्ण जन्म स्थान छोड़कर

गुजरात को कर्म स्थान बनाये । कुछ गुजरात में होगा तो ? सहजानंद स्वामीने भी गुजरात को पसंद किया है। सद्विचार, सद्प्रवृत्ति तथा सद् संस्कृति ही जुजरात की धरती है। इसका गौरव होना हमें स्वाभाविक है। गुजरात आध्यात्मिक वारिस की रक्षा करता है तपरंपरा की रक्षा करता है। सेवा को पहचानता है। संत विचरण करते रहे और लोगों की आदत सुधारे । २०० वर्ष का इतिहास देखें तो मात्र सेवा का भाव ही दिखाई देगा । सेवा भावरुप यज्ञ धर्म का रुप धारण करके परंपरा का विकास किया जिससे सेवा की परंपरा ने समाज में नया प्राण भरा । आज हम स्वतंत्र भारत में श्वांस ले रहे हैं। इन सभी के मूल में संतो ने एक मजबूत पीठिका तैयार की है। यहाँ की सांस्कृतिक ऊर्जा को प्रज्जवलित करने के लिये स्वामिनारायण के संत अहर्निश सेवा परायण रहे है। (माननीय मुख्य मंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदी:

(१३) छोटी आदत को दूर करने के लिये पूरा जीवन बीत जाता है। परंतु यहाँ श्री स्वामिनारायण भगवान के आशीर्वाद से गाँवो में सुख शांति हैं, व्यसन कम है, ऐश्वर्य दिखाई देता है। गुजरात भरत का सर्वश्रेष्ठ राज्य है । स्वामिनारायण संप्रदाय समाज लक्षी संप्रदाय है । समाज के दु:ख के साथ संप्रदाय दु:खी रहा है। (श्री एस.एस. साहेब पोलीस महानिर्देशक गुजरात राज्य)

(१४) मैं तो श्री नरनारायणदेव का प्रसाद खाकर मोटा हुआ हूँ । आज धर्मकुल वंदना महोत्सव प्रत्येक सत्संगी के लिये अवसर बना है । आज भी श्री नरनारायणदेव के मंदिर में जाते हैं तब चेतना का अनुभव होता है। संस्कार तथा संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिये बड़ा कठिन हो गया है ठीक इसी स्थिति में उत्सव द्वारा आचार्य कुल को वंदन करें और मांगे कि हे महाराज ! हमारे बीच में आप रहे और हमारा रक्षण करें ।

(श्री अशोक भट्ट, अध्यक्षश्री गुजरात राज्य विधान सभा) ऐसे भव्याति भव्य धर्मकुल वंदना महोत्सव को सफल बनाने के लिये संत-हरिभक्त, समाज के अग्रगण्य महानुभाव तथा परदे के पीछे रहकर अथक सेवा करकने वाले स्वयं सेवकों सबका बड़ा योगदान रहा है । अपने मूल संप्रदाय के प्रत्येक उत्सव की, प्रत्येक महोत्सव की एकविशेषता रही है । इन उत्सवों में मानव मेदिनी अपने आप भर जाती है। समुद्र कभी अपनी मर्यादा का लोभ नहीं करता, उसी तरह यहाँ के प्रत्येक महोत्सवों में सत्संगी सागर भले छलकता हो परंतु यह सत्संग सागर धर्मकुलकी मर्यादा का लोप नहीं करता है ।

अयोध्याप्रसादजी महाराज को श्रीजी महाराज गले लगाकर वचन दिये हैं कि पुत्र ! चिंता मत करना, मैं तुम्हारे साथ ही हूँ। इस धर्मकुल वंदना महोत्सव में स्वयं श्रीहरि एवं उन्ही के पुत्र आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी दादा दोनो प्रत्यक्ष हाजिर थे। धर्मकुल आश्रित तथा वफादार ऐसे प्रत्येक सत्संगी मात्र को महोत्सव दरम्यान प्रभु की उपस्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है। धर्मकुल वंदना महोत्सव एक स्वयंभू महोत्सव हो गया । गाँव-गाँव से, देश-विदेश से - सुरेन्द्रनगर, मूली, हालार, कच्छ राजस्थान, मध्यप्रदेश, विदेश में यु.के., अमेरिका, ओस्ट्रेलिया तथा अन्य स्थानों से सत्संगी स्ववं भाग लेने पधारे थे। नजर जहाँ करे वहाँ सत्संगी ही दिखाई देते थे। सभी सत्संगी में एक ही भाव था कि धर्मकुल वंदना महोत्सव में भाग लेकर धर्मकुल के ऋण से मुक्त होना है ।

स्वयं से सवाया ऐसे अयोध्याप्रसादजी महाराज का यह उत्सव था इसलिये सर्वोपरि श्रीहरि पिता इस उत्सव में हाजिर थे। जहाँ श्रीहरि हों वहाँ सदा आनंद ही आनंद रहता है । धर्मकुल वंदना महोत्सव में यथायोग्य सेवा करके तथा उत्सव का यथोचित लाभ लेकर आनंदित हों यह स्वाभाविक है ।

आइये हम सभी वंदन करें अपने श्रीगुरु ऐसे धर्मवंश के आचार्यश्री को धर्मकुल परिवार को कि हे महाराज ! हम सभी की धर्मकुल के प्रतिनिष्ठा ऐसी कि ऐसी बने रहे ।

सत्संग बालवाटिका

सपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

आओ प्रगट प्रभुने पगे लागवा रे लोल

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

भूख लगी हो तो भोजनालय में अकेले जाना पड़ता है । प्यास लगी हो तो पानी पीने के लिये प्याऊ पर अकेले जाना पड़ता है । धूप लगती हो तो शीतल छाया में जाना पड़ता है, ठीक इसी तरह मोक्ष की चाहना हो तो परमात्मा की शरण में जाना पड़ता है । यदि जीव भगवान की शरण में जाय तो भगवान की कृपा दृष्टि होते ही भवसिंधु से तर जायेगा । संसार सागर पार करने के लिये नाव की जरुरत नहीं पड़ती, नहीं कोई साधन की जरुरत पड़ती । प्रभु के पास जाने के लिये प्रेम से वंदन करने की जरुरत पड़ती है ।

आओ प्रगट प्रभु के पगे लागवा रे लोल,
व्हालो तरत उतारे भवपार नरनारी
जेने जोइये ते आओ मोक्ष मांगवा रे लोल,
आज धर्मवंशी ने द्वार नरनारी जेने जोइये ते.....

भगवान के आगे एकवार नमस्कार किये, एकवार चरण में मस्तक झुकाये फिर तो काल, माया, कर्म- कुछ बिगड़ नहीं सकता । जन्म-मरण का भय तुरंत मिट जाता है । लेकिन एकवार श्रीहरि के चरण में आकर बैठने की जरुरत है । जो प्रभु की शरणागति लिया । वह जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है । मनुष्य को वरसात से बचने के लिये छाता की जरुरत होती है । कुत्ते से बचने के लिये लकड़ी की जरुरत होती है । भूख से बचने के लिये भोजन की जरुरत होती है । लेकिन जन्म-मरण से बचने के लिये किसकी जरुरत होती है ?

जन्म-मरण ना भय थकी छूटवा रे लोल,
यदि जन्म मरण के भय से छूटना हो तो
आओ मुमुक्षुजन नर नारी.....

आइये आप सभी, चाहे स्त्री हो, पुरुष हो, पढा हो, अनपढ हो, बड़ा हो, छोटा हो, शरण में आने के बाद भय रहता ही नहीं है ।

कोई प्रधानजी का संबन्धी था । एकबार याद आयी कि वह भाई मेरे संबन्धी है । तो जरा मिलते चलें । वह तो ऐसा मान रहा था कि वह मेरा सगा है । लेकिन उसे यह पता नहीं था कि प्रधानजी से मिलना सात कोठे के युद्ध के बराबर है । वह भाई गया, वहाँ के रक्षकों ने पूछा आप कौन हैं ? अरे भाई ! मैं इस साहब का संबन्धी हूँ सगा हूँ । आप लोग क्यो रोकते हैं । यह ठीक नहीं है । आप की पूरी तलाशी ली जायेगी । कोई उनकी थैली में नजर किया, कोई शरीर के ऊपर हाथ घुमाया कोई शरीर पर मशीन घुमाया । इतना ही नहीं सुरक्षादल ने साहब से मिलने के लिए परिचय पत्र मांगा उसने कहा कि मैं तो कुछ भी नहीं लाया हूँ । लेकिन आप लोग भीतर जाकर बताओ तो सही । भीतर गया नहीं निरीक्षण ने आधा घंटा बिगाड़ दिया । प्यास के मारे परेशान लेकिन प्रधानजी के पास पहुंचना दूर तो पानी कहाँ मिले । जिस किसी तरह अंदरवात पहुंच गयी । किसी तरह वह भीतर तो पहुंच गया । प्रधान देखते ही खड़ा हो गया और आइये - आइये कहकर हाथ मिलाया । इतना ही नहीं घास में कुरसी डलवाकर दोनो बैठकर अमरुद खाने लगे । यह दृश्य देखकर सुरक्षा कर्मी कहने लगे कि हमलोगों से भूल होगयी । निश्चित ही ये साहब के संबन्धी है । एक सप्ताह के बाद पुनः वह भाई मिलने गया, इसबार उसे देख कर सभी सुरक्षाकर्मी सलामी मारे और भीतर जाने दिये ।

एकबार भगवान की शरण में जो आता है उसे काल माया सलाम करती हैं । आइये साहब आपके लिये कोई बंधन नहीं है । इसी तरह जो एकबार भगवान

की शरण में आजाता है, उसे कोई परेशान नहीं करता है। काल-माया, जन्म मरण सभी अनुकूल हो जायेंगे। फिर भगवान के भक्त की क्या वात है। काल माया से छूट जायेंगे लेकिन मोक्ष के लिये क्या ? मोक्ष की चिंता ही नहीं करना। संसार के चक्र से छूटे की कल्याण अपने आप होना ही है। संसार में केवल कटु अनुभव ही होता है। जैसे कोई विशेष समाचार प्रसिद्ध करता है लेकिन उसमें कभी-कभी अयथार्थ रहता है। अपने यहाँ जो भी है वह यथार्थ है।

व्हालो तरत दोडावे कालपास थी रे लोल,
प्रेमानंद कहे आपे हरि कोल.....

आपको पहले से ही सूचना मिल जाती है कि आप आजाइये, यहाँ आये कि आप का कल्याण हमारे हाथ में है। भगवान तुरंत उन्हें वचन दे देते हैं। जो शर!! में आया उसका कल्याण निश्चित उस जीवको अभय वरदान मिल जाता है। भगवान की शरणागति का यही परिचय है। इसलिये ऐसे भगवान के शरण में जाकर कोटि बार चरण में वंदन करना चाहिये। आज भी धर्मवंशी का द्वार खुला हुआ है। सभी के लिये खुला आमंत्रण है।

जेने जोइये ए आओ मोक्ष मांगवा रे लोल,
आज धर्मवंशीने द्वार नरनारी जेने जोइये तो....

●

संतुष्ट को सोना मिले

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

दुष्काल की परिस्थिति का ख्याल आज के युग में महगाई के रुप में दिखाई देता है। परंतु भयंकर परिस्थिति का वर्णन तो इतिहास में देखने से ख्याल आयेगा। मनुष्य-मनुष्य को खाजाय ऐसा दुष्काल आ गया है। वह कौन सा संयोग होगा जिसमें मनुष्य अन्न-जल के अभाव में मौंत को लेकर चलता रहेगा।

ऐसे समय में कौन धैर्य रखता है। लेकिन मनुष्य-मनुष्य में फर्क होता है। सभी के विचारो में अतंर होता है।

एक गाँव में दुष्काल पड़ गया। दुष्काल से पीड़ित लोगों को देखकर एक शेठ के मन में दया आयी। यह शेठ दूर का रहने वाला था। उसके उदारता की, दानवीरता की, दयालुता की चारो तरफ यशोगाथा फैली हुई थी। वह इस गाँव में आकर पड़ाव डाला। अपने पैसे से अनाज खरीदा। एक बड़ा अन्नक्षेत्र चालू किया। पुराने जमाने में दुष्काल के समय इस शेठ की तरह कोई दाता गाँव में हो तो उस गाँव की भाग्य कही जायेगी। अन्यथा भूखे मरने की ही बारी। वह शेठ प्रतिदिन रोटी बनवाता, सदा व्रत में भिक्षुकों को (प्रत्येक को) एक रोटी देता। शाग तो होता ही नहीं था। प्रतिदिन भिक्षुक आकर रोटी लेजाते।

एक दिन उस शेठ के मन में विचार आया कि ऐसे दुष्काल के समय कोई संतोषी मिलेगा क्या ? यदि संतोषी मिले तो उसे इनाम देंगे। चारो तरफ यह बात फैल गयी। आधीरात को शेठ भोजनालय में गया, वहाँ बाटी बनाया, सुबह में भिक्षुक दरवाजे पर आकर खड़े हो गये। अब शेठ सभी को रोटी की जगह एक-एक बाटी देने लगा। सभी भिक्षुक मुह बिगाड़ने लगे। अरे बाटी नहीं चाहिये रोटी चाहिये। शेठ ने पूछा क्यों ? बाटी छोटी है। रोटी बड़ी। बाटी कोई नहीं लिया।

यह दृश्य एक बालक खड़े-खड़े देख रहा था। शेठ की नजर बार-बार उसी पर जा रही थी। सभी भिक्षुक चले गये। बाद में वह बालक शेठ के पास जाकर कहा शेठ मै छोटा बालक हूं। मुझे रोटी न देकर बाटी दे दीजिये। शेठ एक क्षण उस बालक की तरफ देखता रहा। बालक में चंचल वृत्ति होती है। अधिक लेने की वृत्ति होती है। यह बालक अलग विचार का लगा। शेठ ने कहा इस बाटी से तुम्हारा पेट तो नहीं भरेगा। बालक ने कहा मेरे पेट के हिसाब से यह बाटी ठीक है। शेठने बाटी दे दी। वह बालक बाटी का टुकड़ा करता है तो उसमें से सोना का टुकड़ा निकलता है।

वह बालक बाटी तो खाजाता है । लेकिन सोने के टुकड़े को लेकर शेठ के घर जाता है, और कहता है शेठ यह बाटी में से सोना निकला है और यह आपका है । शेठ ने कहा नहीं बेटा यह तुम्हारे संतोष का फल है । यह सोना का टुकड़ा तुम्हारा है । इसे तुम अपने पास रखना । जब सदा व्रत चलाते सयम मेरे पास कुछ नहीं रहेगा तब यह काम आयेगा ।

स्वामिनारायण भगवान के आश्रित होकर हम भी इस बालक की तरह शांत तथा संतोषी बनेंगे तो निश्चित ही जिस तरह बालक को सोने का टुकड़ा मिला उसी तरह हमें भी इष्टदेव की कृपा से अपने पुरुषार्थ का फल अनेक गुना होकर मिलेगा । केवल मन में शांति एवं संतोष रखने की जरुरत है ।

शिकागो में धर्मकुल वंदना महोत्सव के प्रसंग पर पारायण

– वसंत त्रिवेदी (शिकागो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, ईटास्का, शिकागो में धर्मकुल वंदना महोत्सव के हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के प.पू. शास्त्री स्वामी हरिप्रसाददासजी तथा पू. जे.पी. स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के जीवन-कवन तथा श्रीहरि के लीलाचरित्रों की त्रिदिनात्मक पारायण पू. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर मार्च १२ से १९ मार्च तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में संपन्न हुई ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया तथा हरिभक्तों ने सेवा का योगदान प्रदान करके धर्मकुल ऋण तथा गुरुऋण उतार सके ऐसे शुभ उद्देश्य से भारत से प.पू. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर स्वा. मंदिर के महंत), प.पू. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी, प.पू. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी, प.पू. देव स्वामी, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महराजश्री के साथ पधारे थे ।

ब्रह्मनिष्ठ संतो की प्रेरक वाणी से सभा में दर्शन देते हुए मंदहास्य के साथ समस्त सत्संग के शिरोमणि ऐसे हमारे प्यारे प.पू. श्री आचार्य महाराजश्री के प्रत्येक वचनों को मानने वाले शिकागो के सत्संगियोंने इस अवसर को हर्ष पूर्वक मनाया । तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के हृदय की प्रसन्नता का लाभ लिया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के एक-एक सभ्यसे लेकर छोटे-बड़े बच्चोंने भी सेवा प्रदान की थी ।

पैसा तो मिल सकता है पर समय न मिल पाये तो ? इस प्रसंग पर ऋण अदा करने का यह सुंदर अवसर संतोने हरिभक्तों को प्रदान किया था । भक्तवत्सल भगवान श्री स्वामिनारायण सहर्ष स्वीकार करे ऐसी सभी को प्रार्थना की ।

इस महोत्सव के अनुसंधान में मंदिर में ३० मार्च के दिन भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के अथक परिश्रम से निर्माण किये गए इस मंदिर के सभी सत्संगी उनके ऋणी है । तथा उनके शुभ आशीर्वाद से सत्संग दिन प्रतिदिन प्रबल बनता जा रहा है । धर्मकुल का नित्य सत्संगियों पर आशीर्वाद बना रहे ऐसी प्रार्थना के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित

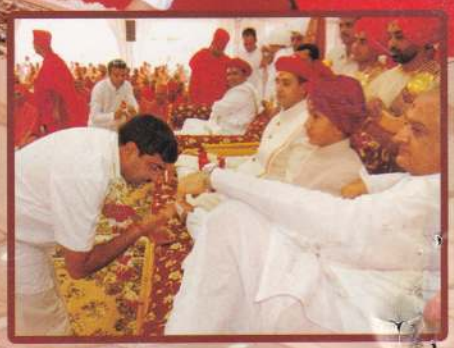

छप्पनभोग

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011











Kharsani